शुक्ल पक्ष, 23 वर्ष, अंक 43 पृष्ठ 08 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शनिवार 10 मार्च 2024 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

कांग्रेस-टीएमसी भ्रष्टाचार में डूबी: पीएम मोदी

प्रधानमंत्री ने भ्रष्टाचार को लेकर टीएमसी-कांग्रेस-लेफ्ट पर साधा निशाना कहा- इन्हें केवल अपने परिवार की चिंता

सिलीगुड़ी/नई दिल्ली

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भ्रष्टाचार को लेकर टीएमसी-कांग्रेस-लेफ्ट गठबंधन पर निशाना साधा और कहा कि इन्हें केवल अपने परिवार की चिंता है। उन्होंने पश्चिम बंगाल से तृणमूल कांग्रेस को उखाड़ फेंकने और उत्तर बंगाल की सभी लोकसभा सीटों पर भाजपा को जिताने का आह्वान किया। प्रधानमंत्री ने शनिवार को सिलीगुड़ी में भाजपा की रैली में जुटी भीड़ की ओर संकेत करते हुए कहा कि टीएमसी, कांग्रेस और लेफ्ट से नाराजगी साफ नजर आ रही है। उन्होंने कहा कि जनता भाजपा का पुरजोर समर्थन कर रही है। मोदी ने इंडी गठबंधन पर हमला बोलते हुए कहा कि इन लोगों को आपके बच्चों के भविष्य की कोई चिंता नहीं है। उन्होंने कहा, ह्लटीएमसी वालों को भतीजे की चिंता है, कांग्रेस वालों को अपने शाही परिवार के बेटे-बेटी को आगे बढ़ाना है, लेफ्ट वालों को इन दोनों के साथ तालमेल बनाए रखना है, ताकि उनकी भी गाड़ी चलती रहे। इन लोगों को आपके बच्चों की परवाह नहीं है, आपके बच्चों के भविष्य की चिंता करने वाला अगर कोई है तो वो मोदी, भाजपा और एनडीए का गठबंधन है। इसलिए आज देश का जन-जन कह रहा है- मैं हूं मोदी का परिवार। मोदी ने आगामी लोकसभा चुनाव के लिए हुंकार भरते हुए कहा कि इंडी गठबंधन 'गोरखा भाइयों' के प्रति असंवेदनशील है। उन्होंने कहा, ह्लभाजपा हमेशा गोरखा भाइयों और बहनों के सामने आने वाली चुनौतियों और कठिनाइयों के प्रति सहानुभूति रखती है।ह्व उन्होंने कहा कि भाजपा ने आपकी चिंताओं को दूर करने के लिए लगातार प्रयास किए हैं।

'परियोजनाएं विकसित पूर्वोत्तर की गारंटी लेकर आई'

पीएम कहा कि ये शिक्षा, सड़क, रेलवे, बुनियादी ढांचा, अस्पताल और पर्यटन परियोजनाएं विकसित पूर्वोत्तर की गारंटी लेकर आई हैं। उन्होंने आगे कहा कि पिछले 5 वर्षों में धन का आवंटन पहले की तुलना में चार गुना अधिक है। उन्होंने यह भी कहा कि पहले के दृष्टिकोण के विपरीत उन्होंने हमेशा सीमावर्ती गांवों को 'प्रथम गांव' माना है और वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम इस सोच की स्वीकृति है। आज करीब 125 गांवों के लिए सड़क परियोजनाओं की शुरूआत हुई और 150 गांवों में पर्यटन से जुड़ी परियोजनाओं का शिलान्यास किया गया। उन्होंने कहा कि पीएम-जनमन योजना के तहत सबसे कमजोर और सबसे पिछड़ी जनजातियों की समस्याओं का समाधान किया जा रहा है।

आज मणिपुर में ऐसी जनजातियों के लिए आंगनवाड़ी केंद्रों का शिलान्यास किया गया। आजादी के बाद से लेकर 2014 तक कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने के लिए किए गए कार्यों की तुलना 2014 के बाद से करते हुए प्रधानमंत्री ने सात दशकों में 10 हजार किलोमीटर की तुलना में पिछले 10 वर्षों में 6 हजार किलोमीटर राजमार्ग बनाने और 2 हजार किलोमीटर रेल लाइनें बिछाने की जानकारी दी। बिजली क्षेत्र में प्रधानमंत्री ने आज अरुणाचल प्रदेश में दिबांग बहुउद्देशीय जलविद्युत परियोजना और त्रिपुरा में सौर ऊर्जा परियोजना पर शुरू हो रहे काम का उल्लेख किया।

'भाजपा आपकी अपेक्षाओं को पूरा करने के प्रयास जारी रखेगी'

पीएम ने कहा कि हम अभी भी समाधान ढूंढने के करीब हैं। भाजपा आपकी अपेक्षाओं को पूरा करने के अपने प्रयास जारी रखेगी। प्रधानमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने पश्चिम बंगाल के गरीब परिवार को न सिर्फ मुफ्त राशन बल्कि मुफ्त स्वास्थ्य सेवा का भी आश्वासन दिया है। हालांकि, यहां की भ्रष्ट और गरीब विरोधी टीएमसी सरकार आयुष्मान योजना को बिल्कुल भी लागू नहीं कर रही है। मोदी ने जोर देकर कहा कि टीएमसी सरकार हर मोड़ पर आपका शोषण कर रही है। हम दिल्ली से मनरेगा मजदूरों के लिए धनराशि भेजते हैं। हालांकि, यहां की टीएमसी सरकार ने अपने करीबियों को फायदा पहुंचाने के लिए 25 लाख फर्जी जॉब कार्ड बांटे हैं। जबकि हम गरीबों के घरों में पैसा भेजते हैं, टीएमसी सरकार आपके धन को अपने पसंदीदा व्यक्तियों तक पहुंचाती है। महिलाओं के प्रति असंवेदनशील होने के लिए सत्तारूढ़ दल की निंदा करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि टीएमसी को आपकी परेशानियों, आपकी कठिनाइयों से कोई परेशानी नहीं है। संदेशखाली में गरीबों, दलितों, आदिवासियों और बहनों के प्रति टीएमसी नेताओं के कृत्य की देशभर में चर्चा हो रही है। महिलाओं का शोषण करना और गरीबों की कमाई लूटना टीएमसी के साथियों का काम है। किसानों की भलाई के बारे में बात करते हुए, मोदी ने कहा कि अभी दो दिन पहले, भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने जूट किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया। जूट का समर्थन मूल्य बढ़ाकर 285 रुपये प्रति क्विंटल कर दिया गया है। इससे पश्चिम बंगाल और पूर्वोत्तर के लाखों जूट किसानों को फायदा होगा।

मैं आज जिस लायक हूं, उसके पीछे मातृभाषा में मिली शिक्षा-धर्मेंद्र प्रधान

नई दिल्ली

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि जिस समाज में गहराई होती है जो जड़ से जुड़ा हुआ होता है, वह ऐसे नहीं मिटता है। मातृभाषा में स्कूलों में शुरूआती शिक्षा देना इसी पहल की हिस्सा है। मैं खुद आज जिस लायक हूं, उसके पीछे मातृभाषा में मिली मेरी शुरूआती शिक्षा रही है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में आठवीं तक सभी को मातृभाषा में शिक्षा देने की सिफारिश की गई है। जिस पर काम शुरू हो गया है। प्रधान ने शनिवार को एनईपी से जुड़ी कई नई पहल लॉन्च की। इनमें 52 मातृभाषा में स्कूली शिक्षा देने की भी एक पहल है, जो नीति की सबसे अहम पहल है। इनमें करीब 17 ऐसी भाषाएं है जो आदिवासी क्षेत्रों से जुड़ी हुई है।

एनसीईआरटी की स्कूली स्तर पर शिक्षा देने की तैयारी

यह सभी भाषाएं वैसे तो बहुत सीमित क्षेत्रों में बोली जाती हैं, बावजूद इसके एनसीईआरटी ने इन भाषाओं में भी स्कूली स्तर पर शिक्षा देने की तैयारी की है। इसे लेकर 52 मातृभाषाओं में तैयार की गई शुरूआती पुस्तकों को लॉन्च किया गया है। जो जल्द ही इन क्षेत्रों में पढ़ने के लिए दी जाएगी।

'बीजेपी को चुनौती देने वाली सीट से चुनाव लड़ें राहुल गांधी'

नई दिल्ली

भाकपा महासचिव डी. राजा ने कहा कि राहुल गांधी के कद के नेता को लोकसभा चुनाव में ऐसी सीट से चुनाव लड़ना चाहिए, जहां वह सीधे सत्तारूढ़ भाजपा को चुनौती दे सकें। लेकिन, यह तय करना कांग्रेस का विशेषाधिकार है कि वह किस सीट से किसे खड़ा करेगी। कांग्रेस ने शुक्रवार को यह घोषणा की कि राहुल गांधी लोकासभा का चुनाव केरल के वायनाड से लड़ेंगे।इसके बाद डी. राजा का बयान सामने आया है। राहुल गांधी अभी लोकसभा में वायनाड सीट का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। डी राजा की पत्नी और भाकपा नेता एनी राजा को वायनाड से वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (एलडीएफ) की तरफ से उम्मीदवार बनाया गया है। राहुल को वायनाड से उम्मीदवार बनाने के कांग्रेस के निर्णय के बारे में पूछे जाने पर राजा ने कहा कि एलडीएफ के तहत भाकपा को चुनाव में चार सीटें मिली हैं। वायनाड उनमें से एक है। इसलिए, हमने अपना उम्मीदवार घोषित कर दिया है।

आंध्र प्रदेश में भाजपा का टीडीपी और जेएसपी के साथ गठबंधन

नई दिल्ली

भारतीय जनता पार्टी, तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) और जन सेना पार्टी (जेएसपी) लोकसभा का आगामी चुनाव मिलकर लड़ेंगी। आंध्र प्रदेश में आगामी चुनाव के लिए तीनों दलों के बीच सीट-बंटवारे पर समझौता अंतिम दौर में है। शुक्रवार देर रात टीडीपी अध्यक्ष एन चंद्रबाबू नायडू और जेएसपी प्रमुख पवन कल्याण ने केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा से मुलाकात की और भाजपा के साथ गठबंधन पर निर्णायक बातचीत की। भाजपा की ओर से शनिवार को जारी बयान में

कहा गया है कि जेपी नड्डा, चंद्रबाबू नायडू और पवन कल्याण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एकसाथ लोकसभा और विधानसभा चुनाव लड़ेंगे। प्रधानमंत्री मोदी पिछले 10 सालों से देश के विकास और प्रगति के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं। भाजपा और टीडीपी का रिश्ता बहुत पुराना है। 1996 में टीडीपी एनडीए में शामिल हो गई और अटल जी की सरकार के साथ सफलतापूर्वक काम किया। साल 2014 में टीडीपी और भाजपा ने एक साथ विधानसभा और लोकसभा चुनाव लड़ा था।

आईपीआर कानून से अनुसंधान और विकास को मिला बढ़ावा: सीतारमण

नई दिल्ली

केंद्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को कहा कि बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) कानून से देश में अनुसंधान और विकास को तेजी से बढ़ावा मिला है। वित्त मंत्री ने कहा कि नवाचार करने वाले लोगों को यह कानून सुरक्षा देता है। निर्मला सीतारमण ने नई दिल्ली में न्यायमूर्ति प्रतिभा एम सिंह की पेटेंट कानून पर लिखी पुस्तक का विमोचन के बाद अपने संबोधन में यह बात कही। सीतारमण ने कहा कि हम आईपीआर कानूनों को सुविधा

तथा प्रोत्साहन देने वाला बनाने की कोशिश कर रहे हैं। वित्त मंत्री ने कहा कि निश्चित रूप से यह कानून अनुसंधान एवं विकास की प्रक्रिया में बाधा नहीं है।

उन्होंने कहा कि हमने कई कदम उठाए हैं।इससे पहले सीतारमण ने जस्टिस प्रतिभा एम. सिंह की पेटेंट कानून पर लिखी पुस्तक का विमोचन किया। वित्त मंत्री ने इस अवसर पर कहा कि 2015 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मादी के नेतृत्व वाली सरकार ने भारत में बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) को देखने के लिए एक थिंक टैंक की स्थापना की। सीतारमण ने कहा कि न्यायमूर्ति प्रतिभा एम. सिंह, जो उस समय न्यायाधीश नहीं थीं, एक सक्रिय सदस्य थीं। उन्होंने इसमें बहुत योगदान दिया और 2016 में राष्ट्रीय आईपीआर नीति तैयार की गई। न्यायमूर्ति प्रतिभा एम. सिंह की पेटेंट कानून के विमोचन कार्यक्रम में ऑस्ट्रेलिया के संघीय न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश डॉ. एनाबेले बेनेट, इंग्लैंड और वेल्स के अपील न्यायालय के लॉर्ड जस्टिस सर कॉलिन बिर्स और एकीकृत पेटेंट न्यायालय (ईयू) के अध्यक्ष क्लॉस ग्रेबिंस्की भी उपस्थित रहे।

जेटली राजनेता के बजाय एक लोक सेवक थे : उपराष्ट्रपति

नई दिल्ली

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने शनिवार को पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण जेटली के विभिन्न क्षेत्रों के योगदानों की सराहना की और उन्हें एक राजनेता के बजाय एक लोक सेवक बताया। पार्टी लाइनों से परे जेटली की अद्वितीय स्वीकार्यता पर प्रकाश डालते हुए धनखड़ ने कहा कि उनकी पार्टी के साथ-साथ विपक्ष के लोग भी उनकी प्रशंसा करते थे। दिल्ली विश्वविद्यालय के श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स के बहुउद्देशीय स्टेडियम का नाम अरुण जेटली के नाम पर रखने के कार्यक्रम को संबोधित करते हुए धनखड़ ने कहा, ह्लमैं अरुण जेटली को बहुत अलग तरीके से परिभाषित करता हूं। वह राजनीति में नहीं थे; वह सार्वजनिक जीवन में थे। जेटली के योगदानों को याद करते हुए उपराष्ट्रपति ने राजनीति को खेल से दूर रखने की उनकी क्षमता की प्रशंसा की। खेल में उनके गहन योगदान पर प्रकाश डालते हुए धनखड़ ने कहा कि लंबे समय तक क्रिकेट से जुड़े रहने के बाद भी, जेटली ने राजनीति को इससे दूर रखा।धनखड़ ने एक वकील और सांसद के रूप में जेटली के साथ अपने लंबे जुड़ाव को मार्मिक ढंग से याद किया और कहा कि हम उन्हें हर दिन याद करते हैं। जेटली को एसआरसीसी के सबसे प्रतिष्ठित पूर्व छात्रों के रूप में संदर्भित करते हुए उपराष्ट्रपति ने सभी पूर्व छात्रों से एक साथ आने और अपने अल्मा मेटर के लिए समय और संसाधनों का योगदान करने का आग्रह किया।

हिमपात-हिमस्खलन के बाद अब बढ़ी बीआरओ की मुश्किलें, मार्ग बहाली के लिए बहाना पड़ रहा पसीना

मनाली

सीमा सड़क संगठन इन दिनों हिमपात व हिमस्खलन से कड़ी परीक्षा से गुजर रहा है। भारी हिमपात के बावजूद बीआरओ ने फरवरी के अंतिम सप्ताह तक मनाली को केलंग से जोड़े रखा। 29 फरवरी से तीन मार्च तक हुए भारी हिमपात के बाद हिमस्खलन ने बीआरओ की दिक्कत को

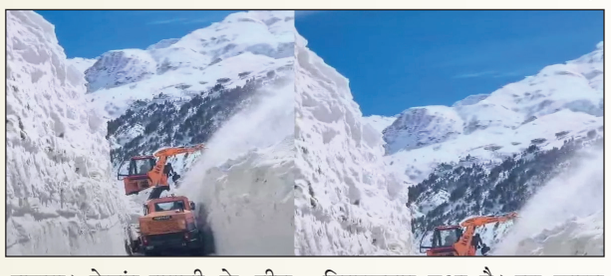

बढ़ाया। केलंग-मनाली के बीच लगभग छह जगह भारी हिमस्खलन हुआ है। इस कारण सड़क में चार फीट से 20 तक ऊंची बर्फ की दीवार खड़ी हो गई।

सड़क बहाली में जुटा बीआरओ

बीआरओ युद्धस्तर पर सड़क बहाली में जुटा है। बीआरओ की मानें तो रविवार शाम तक लाहौल घाटी मनाली से जुड़ जाएगी। केलंग उदयपुर व किलाड़ मार्ग की बहाली के लिए भी बीआरओ को पसीना बहाना पड़ रहा है।

भारत का दूसरा प्राइवेट रॉकेट इसी महीने हो सकता है लॉन्च

नई दिल्ली

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी स्टार्टअप अग्निकुल कॉसमास इस महीने के अंत में श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र में प्राइवेट लॉन्चपैड से अपना 3डी प्रिंटेड रॉकेट अग्निबाण एसओआरटीईडी लॉन्च करने के लिए पूरी तरह तैयार है। अंतरिक्ष स्टार्टअप ने एक्स पर पोस्ट कर भारत के दूसरे प्राइवेट रॉकेट की लॉचिंग की घोषणा की। पिछले साल अगस्त में अग्निकुल ने श्रीहरिकोटा में अपने प्राइवेट लॉन्चपैड पर अग्निबाण सबऑर्बिटल टेक्नोलॉजिकल डिमॉन्स्ट्रेटर (एसओआरटीईडी) को एकीकृत करने की प्रक्रिया शुरू की थी।

अग्निबाण एसओआरटीईडी एकल चरण रॉकेट है जो अग्निकुल के 3डी-प्रिंटेड पेटेंटेड अग्निलेट इंजन, छह किलोन्यूटन सेमी-क्रायोजेनिक इंजन द्वारा संचालित है।

18 की उम्र तक मुफ्त शिक्षा से 2030 तक खत्म हो सकता है बाल विवाह

नई दिल्ली

अठारह वर्ष की उम्र तक सभी बच्चों को अनिवार्य और मुफ्त शिक्षा 2030 तक देश से बाल विवाह के खात्मे में निर्णायक भूमिका निभा सकती है। 18 वर्ष से पहले पढ़ाई छोड़ने और बाल विवाह में एक सीधा और स्पष्ट अंतरसंबंध है। शुक्रवार को यह अहम निष्कर्ष देश में 2030 तक बाल विवाह के खात्मे के लिए अभियान चला रहे 160 गैरसरकारी संगठनों के गठबंधन बाल विवाह मुक्त भारत अभियान (सीएमएफआई) द्वारा जारी एक शोधपत्र "एजुकेट टू इंड चाइल्ड मैरिज : एक्सप्लोरिंग लिंकेजेज एंड रोल ऑफ एजुकेशन इन एलिवेटिंग चाइल्ड मैरिजेज" में उजागर हुआ है। शोधपत्र के अनुसार भारत बाल विवाह की बुराई के 2030 तक खात्मे की राह में टिपिंग प्वाइंट की तरफ बढ़ रहा है। टिपिंग प्वाइंट वह बिंदु

है, जहां से बाल विवाह अपने आप खत्म हो जाएगा। ऐसे में यदि 18 वर्ष की उम्र तक मुफ्त व अनिवार्य शिक्षा एक वास्तविकता बन जाए तो बाल विवाह के अपराध को जड़मूल से समाप्त करने की इस लड़ाई को एक नई धार और दिशा मिल जाएगी। मसलन 96 प्रतिशत महिला साक्षरता वाले केरल में बाल विवाह की दर सिर्फ छह प्रतिशत है जबकि राष्ट्रीय औसत 23.3 प्रतिशत है। इसके उलट बिहार में जहां महिला साक्षरता की दर सिर्फ 61 प्रतिशत है, बाल विवाह की दर 41 प्रतिशत है।

बाल विवाह मुक्त भारत अभियान की नीति एवं शोध निदेशक ज्योति माथुर ने कहा, "यद्यपि केंद्र व राज्य सरकारें, दोनों ही बाल विवाह के खात्मे के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति और गंभीरता से काम कर रही हैं, फिर भी यदि मौजूदा शिक्षा का अधिकार कानून में बदलाव कर 18 वर्ष तक शिक्षा अनिवार्य और निशुल्क कर दी जाए तो यह बाल विवाह के खिलाफ लड़ाई में प्रयासों को नई गति दे सकता है। इसलिए सभी राजनीतिक दलों से अपील है कि वे हमारी इस मांग को आगामी लोकसभा के अपने चुनावी घोषणापत्र में शामिल करें।" 160 गैरसरकारी संगठनों ने पिछले छह महीनों के दौरान ही देश में 50,000 से ज्यादा बाल विवाह रोके हैं जबकि 10,000 से ज्यादा मामलों में कानूनी कार्रवाई शुरू की गई है। अपने विशाल नेटवर्क और जमीनी स्तर पर सूचना तंत्र के माध्यम से इसने पूरे देश में कुल बाल विवाहों के पांच प्रतिशत बाल विवाह रुकवाने में कामयाबी हासिल की है। शोधपत्र में भारत के विभिन्न हिस्सों से लिये गए आंकड़ों और तथ्यों के आधार पर महिला साक्षरता दर और बाल विवाह की दर के अंतरसंबंधों को रेखांकित किया गया है। उदाहरण के तौर पर 93 प्रतिशत महिला साक्षरता वाले राज्य मिजोरम में बाल विवाह की दर सिर्फ आठ प्रतिशत है। मध्य प्रदेश जहां कि महिला साक्षरता दर 67.5 प्रतिशत है, वहां बाल विवाह की दर 23.1 प्रतिशत है जबकि 73.8 प्रतिशत महिला साक्षरता वाले हरियाणा में बाल विवाह की दर काफी कम 12.5 प्रतिशत है। यद्यपि, शोधपत्र में एकाध ऐसे दृष्टांतों का भी जिक्र है, जहां महिला साक्षरता और बाल विवाह की दर के बीच जो अंतरसंबंध पूरे देश में दिखाई देते हैं, उससे उलट स्थिति है। मसलन पश्चिम बंगाल में महिला साक्षरता की दर 77 प्रतिशत है लेकिन इसके बावजूद वहां बाल विवाह की दर अत्यधिक रूप से ऊंची 42 प्रतिशत है।

सोरों कटरा बाजार में फार्म ऑनलाइन कराने गई युवती का थरवई में मिला शव

अखंड भारत संदेश

जंघई। सरायममरेज थानांतर्गत सिंधौरा, सोरों गांव निवासी भानु प्रताप सिंह की बेटी रीतू सिंह उम्र 21 वर्ष शुक्रवार को सुबह 11 बजे के करीब गांव के पास साइबर कैफे में फार्म ऑनलाइन करवाने गई थी, लेकिन वापस घर नहीं लौटी जिससे परिजन हैरान परेशान हो गए, खोजबीन करने पर भी जानकारी नहीं हुई। रात में जीआरपी पुलिस थरवई ने भानु प्रताप सिंह को सूचना दिया कि थरवई थाना क्षेत्र के कनेहटी रेलवे क्रॉसिंग के बगल मृत युवती का पैर कटा शव मिला है, जिस पर भानू प्रताप सिंह मौके पर पहुंचे तो उनकी बेटी रीतू सिंह ही थी। भानू सिंह ने बताया कि बेटी घर से विश्वकर्मा योजना का ऑनलाइन फार्म भरने कटरा सोरों गई थी लेकिन उसका अपहरण करके उसके साथ गैंगरेप के बाद निर्मम हत्या कर दी गई। भानु प्रताप सिंह की तहरीर के आधार पर उनके गांव के ही 4 लोगों के खिलाफ आईपीसी की धारा 302, 376 डी 364 में थरवई थाने में मुकदमा पंजीकृत कर लिया गया है। रीतू की मौत से परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है, पुलिस द्वारा मुकदमा पंजीकृत करके शव पोस्टमार्टम हेतु प्रयागराज भेज दिया गया एवं नामजद दोषियों की तलाश जारी है।

डेढ माह बाद लिखा गयामोबाइल चोरी का मुकदमा

मऊआइमा। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम अलावलपुर निवासी सुशील कुमार पुत्र छेदीलाल 24 जनवरी बुधवार को सब्जी खरीदने ब्लाक बाजार आया था। आरोप है कि उसके जेब में रखा कीमती मोबाइल चोर चोरी कर ले गए। ऑनलाइन मुकदमा दर्ज कराने के बाद दोबारा फिर ऑनलाइन मुकदमा के लिए कहा गया बताया गया है कि चोरी हुए मोबाईल को आस पास कोई चोरी किया है। मऊआइमा पुलिस ने शुक्रवार को अज्ञात चोरों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

खेत से घर तक कटे हुए तार ले जाने की चपेट में आने से राजकुमारी की मौत हुई

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। सात मार्च को मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम जाम्हा खास में राजकुमारी 45 वर्ष का सडा हुआ लाश मिला। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में करंट से मौत आने पर मृतका के पति जयप्रकाश पटेल ने शनिवार को मऊआइमा थाने में यह मुकदमा दर्ज कराई है किन्तु उसकी पत्नी 3 मार्च को गांव के लालजी पुत्र रामसजीवन के यहां चाय पी कर निकली थी। जयप्रकाश का आरोप है कि पड़ोसी अपने ट्यूबवेल से कटा हुआ पतला तार बांस गाड कर अपने खेत में लगभग पांच सौ मीटर दूरी तक ले गया।जिसकी चपेट में उसकी पत्नी राजकुमारी आ गयी और उसकी मौत हो गई। जयप्रकाश का आरोप है कि साक्ष्य मिटाने के लिए रातों रात तार,बांस हटा दिया गया। तथा गायब उसकी पत्नी राजकुमारी का शव खेत के पडोसी शिवपूजन पुत्र स्वर्गीय शंकर लाल के खेत में 7 मार्च को सुबह बरामद हुआ। मृतका राजकुमारी के पति जयप्रकाश पटेल ने मऊआइमा थाने में शनिवार को गांव के त्रिलोकीनाथ यादव, पुन्नी लाल यादव पुत्रगण स्वर्गीय सिकंदर और अविनाश यादव पुत्र उर्फ चुन्नू पुत्र मोहनलाल के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

साक्ष्य मिटाने के लिए रातों रात तार बांस हटा दिया तीन के विरुद्ध मुकदमा दर्ज

न्यूज झरोखा

भगवत भजन से ही होता है सारे दुःखों का नाश

सहसों। क्षेत्र के चनई का पूरा सिंगरामऊ गांव में सप्त दिवसीय संगीतमय चल रही श्रीमद्भागवत महापुराण कथा ज्ञान यज्ञ के समापन दिवस पर कथा व्यास आचार्य स्वामी श्री शशि भूषण दास जी महाराज भागवत मर्मज्ञ श्री कामदगिरि पीठ श्री चित्रकूट धाम द्वारा सुदामा चरित्र का सजीव वर्णन श्रवण कर उपस्थित श्रोता नर नारी भाव-विभोर हो उठे। कथा व्यास ने कहा कि मित्रता करो तो भगवान श्रीकृष्ण और सुदामा जैसी। जो अपने मित्र की परेशानी को समझे और बिना बताए ही मदद कर दे वही सच्चा मित्र है। भक्त सुदामा अपनी पत्नी के कहने पर मित्र कृष्ण से मिलने द्वारकापुरी जाते हैं। द्वारपाल द्वारा सुचित होने पर भगवान कृष्ण नंगे पांव ही दौड़ते हुए अपने मित्र सुदामा को गले लगाकर दोनों मित्र भाऊक होकर रोने लगे। भगवान अपने मित्र को महल में ले जाकर सिंहासन पर बैठाया और मित्र सुदामा के पैरों को अपनी आंसुओं से धो डाला। भगवान अपने मित्र की प्रसन्नता में उनके सर्व दुःखों को दूर करते हुए तीन मुट्ठी चावल के बदले भोग विलास हेतु सुंदर सा राजमहल सुख समृद्धि शारीरिक सुंदरता तथा देवी रूकमणि ने धन संपदा से उनको परिपूर्ण कर दिया। प्रभु के प्रति भक्ति भी हो तो सुदामा जैसी सारे दुःख को झेलते हुए सुदामा भगवान की भक्ति में सदा ही तल्लीन रहते थे। कथा विश्राम पर मुख्य यजमान इं. विक्रमादित्य द्विवेदी एवं श्रीमती किरण द्विवेदी सहित आदि भक्त श्रोताओं ने व्यास पीठ, भागवत भगवान एवं आवाहित देवी देवताओं की आरती उतारी तत्पश्चात भक्तों में प्रसाद का वितरण कराया गया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से लाल जी द्विवेदी, घनश्याम मिश्रा, शिक्षक राजेश कुमार द्विवेदी, जालपा प्रसाद द्विवेदी, जगदंबा प्रसाद द्विवेदी, चिंतामणि शुक्ला, राजकुमार सिंह परिहार, शिक्षक प्रभाकर पांडे सहित भारी संख्या में भक्त रसिक श्रोता नर नारी कथा का रसपान करते उपस्थित रहे।

जिलाध्यक्ष नीतेश तिवारी ने संगठन का किया विस्तार

मेजा। समाजवादी युवजन सभा यमुनापार के नवनियुक्त जिला अध्यक्ष नितेश तिवारी के नेतृत्व में शनिवार को जिला कमेटी के साथ विधानसभा अध्यक्षों को मनोनित किया गया है। यह मनोनयन युवजन सभा के प्रदेश अध्यक्ष अरविंद गिरी के अनुमोदन पर हुआ है। उल्लेखनीय है कि यमुनापार क्षेत्र के मेजा में संगठन का विस्तार कार्यक्रम आयोजित कर महासचिव रत्नेश यादव सहित उपाध्यक्षों, जिला सचिव एवं कार्यकारिणी सदस्यों का मनोनयन हुआ है। संगठन विस्तार में मुख्य अथिति के रूप में सपा जिलाअध्यक्ष पप्पू लाल निषाद एवम विशिष्ठ अथिति के रूप में सयुस प्रदेश उपाध्यक्ष संदीप यादव एवं मुख्य वक्ता के रूप में विधायक मेजा संदीप पटेल उपस्थित रहे। इस मौके पर ओम नारायण विश्वकर्मा,आकाश मिश्रा,शिवा यादव,अमन कुमार,शनि केशरी ,सत्यप्रकाश सोनकर,उमेश कनौजिया मो.मुस्ताक,शुभम पाल,लाल साहब यादव,राहुल पटेल पप्पू पासी आदि मौजूद रहे।

हनुमान मंदिर बघेड़ी में वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया

जंघई। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी राचनपुर बघेड़ी गाँव में हनुमान मंदिर पर आठवें प्राण प्रतिष्ठा का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर अखण्ड रामायण पाठ आरती, महाप्रसाद का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बृजेश भुवाल? पांडेय अध्यक्ष, हरिओम पांडेय महंत, हृदयनाथ मिश्रा अशोक दुबे, गंगा तिवारी, कुंज बिहारी पांडेय, सरोज दुबे, राधेश्याम पांडेय, सज्जन शुक्ल, जितेंद्र दुबे, गोपाल पांडेय, शरद पांडेय, मुन्ना पांडेय, नन्हे पांडेय, बंशराज पांडेय, लालजी मिश्रा, शेषधर मिश्रा, अशोक मिश्रा, जटाशंकर दुबे, सुरेश मिश्रा, राम कैलाश शुक्ला, उधम यादव, अनिल पांडेय, परमेन्द्र दुबे, बबलू मिश्रा, कसान मिश्रा, सज्जन शुक्ला, पवन पांडेय नीरज शुक्ला, राहुल पांडेय, शुभम पांडेय, अंकित पांडेय, कुशल पांडेय, श्रद्धा, पीहू, सत्या, आयुष, आदर्श सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

बैंक कर्मियों की विभिन्न यूनियनों और भारतीय बैंक संघ के मध्य समझौता

कोरांव। बैंक कर्मियों के विभिन्न यूनियनों और भारतीय बैंक के मध्य द्विपक्षीय समझौते के तहत बनी सहमति के आधार पर हस्ताक्षर किया गया। बैंक कर्मियों की तरफ से इंडियन बैंक आफिसर्स आई एन बी ओ सी उत्तर प्रदेश के महा सचिव संदीप सिंह ने बताया कि यह समझौता कई मामलों में ऐतिहासिक है। उन्होंने बताया कि समझौते के अनुसार वेतन में 17 प्रतिशन वृद्धि के साथ साथ न सिर्फ बैंक कर्मियों की पुरानी मांग पांच दिवसीय सप्ताह को शामिल किया गया है।श्री सिंह ने बताया कि बैंक कर्मियों ने अपनी मांगों को मूर्ति तू देने के लिए काफी संघर्ष किया है।उन्होंने बताया कि बैंक कर्मियों के नए वेतन मान वर्ष 2022 से लागू होंगे। समझौते में में महिला कर्मियों के लिए विशेष सहूलियतों का प्रावधान किया गया है। महिलाओं के विदेश अवकाश से ले कर मैश में एक दिन का अवकाश और 255 दिन के अवकाश में नगदी करण भुगतान का प्राविधान है। बैंक कर्मियों के कई हितों का ध्यान रखा गया।

सपा की पीडीए जन पंचायत दाँदूपुर एवं पालपुर में आज

करछना। विधानसभा करछना के विकासखंड चाका में ग्राम पंचायत दाँदूपुर में 10 मार्च को समय 12:00 बजे दिन में जन पंचायत का आयोजन किया गया है। विधानसभा अध्यक्ष करछना ननकेश बाबू के अध्यक्ष से प्राप्त सूचना के अनुसार कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समाजवादी पार्टी यमुनापार के जिलाध्यक्ष पप्पू लाल निषाद तथा जिले के सम्मानित पदाधिकारी गण के साथ विधानसभा, विकासखंड के पदाधिकारी एवं जोन, सेक्टर तथा बूथ प्रभारीगण उपस्थित रहेंगे। जन पंचायत में पूर्ववर्ती समाजवादी सरकार की रीतियों व नीतियों पर चर्चा होगी तथा वर्तमान सरकार द्वारा दलित, पिछड़े एवं अल्पसंख्यक आदिवासी पर हो रहे अत्याचार के साथ आगामी 2024 लोकसभा चुनाव पर चर्चा होगी। कार्यक्रम के संयोजक डॉ उमेश यादव तथा सहसंयोजक पूर्व प्रधान गुलशन खातून होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता मोहम्मद अतहर अली जाफरी करेंगे। इसके साथ ही ग्राम पालपुर में समय अपराहन 3:00 बजे जन पंचायत का आयोजन किया गया है ।जिसके मुख्य अतिथि जिलाध्यक्ष जमुनापार एवं अध्यक्षता अनंतराम रत्नाकर करेंगे। कार्यक्रम के संयोजक डॉ उमेश यादव के साथ गुड्डू निषाद सोनू एवं रामखेलावन गौतम होंगे।

क्षेत्र की सड़कें गड्ढों में तब्दील, आधा -अधूरा कार्य छोड़ गायब हुए अधिकारी व ठेकेदार

अखंड भारत संदेश

मेजा। प्रदेश सरकार के गड्ढा मुक्त सड़क की मंशा पर लोक निर्माण विभाग खरा नहीं उतर पा रहा है। यही कारण है कि मरम्मतीकरण के अभाव में सड़कें गड्ढों में तब्दील हो गई हैं। एक ओर जहां लोगों को आवागमन में भारी परेशानियों का सामान करना पड़ता है। वहीं दूसरी ओर वाहन हिचकोले खाकर निकलते नजर आते हैं। क्षेत्र के जमुआ -ऊंचडीह मार्ग की मरम्मत का कार्य तीन माह पूर्व शुरू हुआ था लेकिन ठेकेदार द्वारा ऊंचडीह से कूंची तक मरम्मत कराया गया। कूंची से जमुआ तक करीब 2 किमी बिना मरम्मत के छोड़ दिया गया है। इतना ही नहीं मेजा नहर की पुलिया से बोलन -उरुवा मार्ग तक मरम्मत का कार्य किया गया। यहां भी आधी -अधूरी मरम्मत कराकर छोड़ दिया गया। तीन माह बाद भी उक्त मार्ग का मरम्मत कार्य शुरू नहीं किया जा सका। ग्रामीणों ने उच्चाधिकारियों से उक्त दोनों सड़कों को शीघ्र मरम्मत कराए जाने की मांग की है।

क्या कहते संबंधित अधिकारी -
दोनों सड़कों के बारे में जानकारी है। सड़क जितना बनी है उतना ही प्रस्तावित था। बाकी के लिए प्रस्ताव भेजा गया है। शीघ्र मरम्मतीकरण का काम पूरा हो जाएगा।

अमरेश चंद्र
अवर अभियंता लोक निर्माण विभाग

ताला तोड़कर चोरों ने की बिल्डिंग मटेरियल स्टोर में चोरी

सहसों। बीती रात घरहरा चकिया गांव स्थित मिश्रा बिल्डिंग मैटेरियल स्टोर में चोरों ने दरवाजे का ताला तोड़कर कीमती सामान उठा ले गए। दुकानदार द्वारा पुलिस को सूचना देकर कार्यवाही की मांग की गई है। थाना सराय इनायत के पुलिस चौकी सहसों अंतर्गत घरहरा चकिया गांव निवासी राकेश कुमार मिश्रा पुत्र स्व. चिंतामणि मिश्रा ने सहसों मोलनापुर संपर्क मार्ग पर गांव के ही सामने मिश्रा बिल्डिंग मैटेरियल स्टोर की दुकान खोल रखी है। वह रोज की तरह दुकान बंद कर अपने घर चले गए। चोरों ने मौका देखकर दुकान के पीछे लगे लोहे के दरवाजा का ताला तोड़कर दुकान के अंदर घुस गए। जिसमें रखा ट्रैक्टर की बैटरी, ऑटो की बैटरी, 15 लोहे का फरमा, दो लोहे का दरवाजा तैयार, 20 बोरी सीमेंट, एक बड़ी टंकी तथा प्लास्टिक पाइप एसेसरीज आदि उठा ले गए। शनिवार की सुबह दुकानदार राकेश कुमार मिश्रा दुकान खोलकर जैसे ही अंदर घुसे देखा कि सारा सामान चोरी हो गया है। यह देख उनका माथा ठनक गया और वह जोर-जोर चिल्लाने लगे। आवाज सुनकर आसपास के लोग भी इकट्ठा हो गए। सूचना मिलने पर सहसों पुलिस मौके पर पहुंचकर जांच पड़ताल किया। दुकान मालिक राकेश कुमार मिश्रा ने पुलिस को लिखित तहरीर देकर जल्द से जल्द उचित कार्यवाही की मांग की है।

श्री माता दान सिंह इण्टर कालेज में दौड़ प्रतियोगिता हुई संपन्न

सिरसा। मेजा क्षेत्र के अंतर्गत ब्लाक उरुवा में श्री मातादान सिंह इण्टर कालेज तरवाई बिगहना रामनगर में दौड़ की प्रतियोगिता किया गया। माँ सरस्वती के चित्र के समक्ष पुष्प अर्पित कर खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया। प्रधानाचार्य इंद्रभान सिंह ने कहा कि खेल जीवन का एक अंग हैं। खेल से हम सबकुछ प्राप्त कर सकते है। जो शिक्षा के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं उसी प्रकार हम खेल के माध्यम से बहुत कुछ प्राप्त कर सकते है। इस लिए हम सभी को विद्यालय में खेल के लिए उचित माहौल तैयार करना चाहिए। प्रतियोगिता दौड़ में 123 प्रीति भारतीया द्वितीय स्थान प्रियंका जैसल तथा तृतीय स्थान श्रेया पांडे प्राप्त किया। कार्यक्रम का आयोजक सौरभ मिश्रा नेहरू युवा केन्द्र संगठन युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार के द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से कालेज के अध्यापक इंद्रजीत कुमार, मिथलेश कुमार, रिया तिवारी, संदीप कुमार, आराधना कुमारी, ज्योति दुबे, नाजरीन बानो, संजय सोनकर और कालेज के डारेक्टर आशीष सिंह ने बच्चों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना किये है।

यूपी बोर्ड की परीक्षा समाप्त, अब परिणाम का इंतजार

करछना उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद की ओर से संचालित बोर्ड परीक्षा शनिवार को समाप्त हो गई।परीक्षा समाप्त होने के बाद परीक्षार्थियों के चेहरे का तनाव समाप्त हुआ तो अब परिणाम का इंतजार करने में जुट गए हैं। करछना एवं कौंधियारा क्षेत्र में बने आठ केंद्रों पर 22 फरवरी से परीक्षाएं शुरू हुई थी।शनिवार की प्रथम पाली में हाईस्कूल की उर्दू,पंजाबी,बंग्ला वही दूसरी पाली में इंटरमीडिएट की संस्कृत,आपदा प्रबंधन,सोलर सिस्टम रिपेयर आदि परीक्षाएं आयोजित हुई।परीक्षा केंद्र से निकलने के बाद परीक्षार्थियों के चेहरे से परीक्षा का तनाव समाप्त हुआ।परीक्षा के दौरान परीक्षा की शुचिता प्रभावित होने का कौंधियारा क्षेत्र में बने केंद्रों पर एक भी नकल का मामला सामने नहीं आया।जबकि बोर्ड द्वारा बनाए गए कमांड कंट्रोल रूम में कई तरह की शिकायते फर्जी नंबरों से दर्ज कराई गई,लेकिन केंद्रों पर औचक निरीक्षण के दौरान सभी शिकायतें फर्जी पाई गई।परीक्षा समाप्त होने के बाद माध्यमिक शिक्षा विभाग ने शनिवार को राहत की सांस ली।

बच्चों को स्कूल लेकर जा रही बोलेरो को रोडवेज बस ने मारी जोरदार टक्कर, कई घायल

अखंड भारत संदेश

करछना प्रयागराज शनिवार की सुबह आठ बजे स्कूली बच्चों को बैठाकर पीबीआर एकेडमी भरहा स्कूल छोड़ने जा रही बोलेरो। भीरपुर पुलिस चौकी के पास प्रयागराज से आ रही सरकारी रोडवेज बस भीरपुर पुलिस चौकी के द्वारा लगाए गए ब्रेकर के कारण अनियंत्रित होकर बोलेरो को भीषण टक्कर मार दी। बोलेरो में बैठे-बच्चे व स्कूल की अध्यापिका ड्राइवर घायल हो गए। घटना में स्कूल की अध्यापिका सविता व ड्राइवर अनिल कुमार गंभीर रूप से घायल हो गए जहां उन्हें शहर की अस्पताल में इलाज के लिए भेजा गया है। वहीं दो स्कूली बच्चे भी घायल हैं जिन्हें शहर के अस्पताल में इलाज के लिए भेजा गया है। दुर्घटना में सात बच्चे घायल हो गए। मधु पुत्री महेंद्र पटेल निवासी बस्तर कक्षा 7, समर सिंह पुत्र रमेश पटेल बसडिला कक्षा यूकेजी, सोनू पटेल पुत्र दिनेश सिंह भटौली कक्षा एक, अंशिका पुत्री सतीश कुमार एलकेजी, अनन्या पुत्री सतीश कुमार कक्षा 5 निवासी भटौली व दो बच्चों को शहर के अस्पताल में रेफर किया गया है। स्कूल की अध्यापिका सविता हौज कटोरवा व ड्राइवर अनिल कुमार मझुआ गंभीर रूप से घायल है उन्हें शहर के अस्पताल में भेजा गया है। बाइक सवार कमलेश कुमार निवासी मिजार्पुर प्रयागराज जा रहा था। जहां वह भी बस और बोलेरो की टक्कर में गंभीर रूप से घायल हो गया है।

ग्रामीण फाउंडेशन ऑफ इंडिया द्वारा महिला दिवस पर की गई बैठक

मऊआइमा महिला दिवस पर ग्रामीण फाउंडेशन ऑफ इंडिया के तत्वाधान में ब्लॉक मऊआइमा के पिलखुआ ग्राम में जिला पर्यवेक्षक संदीप सिंह स्वराज ने बैठक कर महिला के स्वास्थ्य एवं पोषण पर चर्चा की और खान-पान का विशेष ध्यान देने की बात कही इसी के साथ गर्भवती महिला व शिशु के टीकाकरण पर चर्चा की गई।

अनिल यादव निर्विरोध पुस्तकालय अध्यक्ष चुने गए

मऊआइमा। सोरांव के अधिवक्ता संघ चुनाव 2024 -25 के चुनाव में मऊआइमा क्षेत्र के अनिल यादव निर्विरोध पुस्तकालय अध्यक्ष घोषित किए गए जिसपर गामा लाल यादव(पूर्व अध्यक्ष) विनय कुमार सिंह (पूर्व महामंत्री)जितेंद्र यादव बाल गोविंद यादव ओम प्रकाश यादव, रवि मिश्रा पंकज कुमार सिंह आदि अधिवक्ताओं ने बधाई दी गई है।

विधायक ने किया मार्ग का लोकार्पण

कोरांव। नगर पंचायत कोरांव के चमनगंज मोहल्ला तुलसीदास राना

नई शिक्षा नीति के तहत बच्चों को भाषा विषय एवं गणित में बनाएं दक्ष : प्रवीण कुमार

अखंड भारत संदेश

पौसिया के विष्णु वाटिका गेस्ट हाउस में मेजा एवं उरुवा ब्लाक के आंगनवाड़ी कार्यकत्री नोडल शिक्षक एवं निपुण छात्र छात्राओं का आयोजित हुआ हमारा आंगन हमारे बच्चे उत्सव कार्यक्रम

मेजा। विकास खंड मेजा एवं उरुवा के आंगनवाड़ी कार्यकत्री नोडल शिक्षक व निपुण छात्र छात्राओं का हमारा आंगन-हमारे बच्चे उत्सव' कार्यक्रम का आयोजन विष्णु वाटिका गेस्ट हाउस में किया गया जिसके मुख्य अतिथि बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रवीण कुमार रहे। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी ने सरस्वती प्रतिमा का अनावरण व दीप प्रज्ज्वलित कर किया। बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रवीण कुमार तिवारी ने निपुण बच्चों को प्रशस्ति पत्र पुरस्कार तथा माला पहनाकर उत्साहवर्धन किया. साथ ही, आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों नोडल शिक्षको को भी सम्मानित किया गया।जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी ने उपस्थित नोडल शिक्षक आंगनबाड़ी कार्यकत्री अभिभावकों को संबोधित करते हुए कहा कि बच्चों के नामांकन और नियमित उपस्थिति का ध्यान रखने की ज़िम्मेदारी शिक्षकों के साथ साथ अभिभावकों की भी है उन्होंने कहा कि. नई शिक्षा नीति 2020 के आधार पर बाल विकास व पुष्टाहार विभाग व बेसिक शिक्षा के मध्य संबंध स्थापित करते हुए 3 से 6 वर्ष के बच्चों को आगामी सत्र में कक्षा 1 में प्रवेश के लिए तैयार करना है तथा गणित और भाषा विषय में दक्ष बनाना है। उन्होंने कहा कि आज वही बच्चे सम्मानित हो रहे है जो अपनी निर्धारित दक्षता को प्राप्त कर निपुण हो गए हैं। विद्यालयों में सभी आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराएं जिससे बच्चे बड़ी सहजता से सीख सके स्कूलों में कायाकल्प के कार्य भी कराए जा रहे हैं हम सभी का उद्देश्य है बच्चों को अच्छी शिक्षा प्राप्त हो। कार्यक्रम में एसडीएम मेजा ने बच्चों द्वारा लघु नाटक के प्रस्तुति की सराहना की तथा बेसिक शिक्षा विभाग में वर्तमान गतिविधियों से सुधार की तारीफ किया। उन्होंने इस मौके पर सभी शिक्षकों अभिभावकों आंगनबाड़ी से आगामी लोकसभा चुनाव में मतदान में भाग लेने का शपथ भी कराया। खंड शिक्षा अधिकारी मेजा व उरुवा कैलाश सिंह ने सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया। इस आयोजन में सभी न्याय पंचायतों से पांच पांच बच्चों व एक एक नोडल शिक्षक आंगनबाड़ी को भी सम्मानित किया गया। उत्सव कार्यक्रम को तहसीलदार व नायब तहसीलदार मेजा बाल विकास परियोजना मेजा व उरुवा क्रमशः अर्चना सिंह रागिनी कौशिक सहित जिला पंचायत सदस्य देशराज सिंह, ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि मेजा गंगा प्रसाद मिश्र ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक संघ के अध्यक्ष मनीष तिवारी ने किया। इस मौके पर बी के मिश्र, ए आर पी डा गोपाल कृष्ण यादव गिरीश तिवारी कमला कांत पांडेय राम निरंजन उरुवा के सुनील शुक्ल राजेश मिश्र प्रीतम दास विमलेश यादव सहित अनामिका पांडेय सौम्या सिंह प्रवीण दुबे, रेनू लता जैतवार शैलजा सिंह,मांडवी दुबे,सीरत नसीम वस्ती मिलिंद दुबे बैकुंठ गिरी अमित शुक्ल, हसन अब्बासअखिलेश मिश्र तथा हंसराज पाल सहित सैकड़ों लोग प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

सोमेश्वर महादेव मंदिर एवं शिव बारात में तैनात रही एसपीओ टीम

नैनी। नैनी अरैल स्तिथ सोमेश्वर महादेव मंदिर में पुजा अर्चना करने पहुंचे। भारी भीड़ को नियंत्रित करने के लिए व शांति सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने में प्रशासन के साथ आम जनमानस के सहयोग के लिए पुलिस उपायुक्त यमुनानगर उपजिलाधिकारी करछना एसीपी करछना एवं नैनी कोतवाली इंचार्ज के निदेशानुसार विशेष पुलिस अधिकारी एसपीओ पुलिस मित्र टीम के प्रभारी अभय राज सिंह उप प्रभारी परवेज अहमद जनसंपर्क अधिकारी शेख लियाकत अली के आदेशानुसार सभी एसपीओ टीम के सदस्यों को महाशिवरात्रि के दिन क्षेत्र के विभिन्न मंदिरों में प्रशासन के साथ तैनात किया गया। एसपीओ टीम अपनी विशेष जिम्मेदारी निभाते हुए स्थानीय पुलिस प्रशासन का सहयोग किया एवं नैनी में भव्य शिव बारात जुलूस निकाली गई जिसमें प्रशाशन के सहयोग में एसपीओ टीम मुख्य भूमिका निभाई। एसपीओ प्रभारी अभय राज सिंह ने बताया कि विशेष पुलिस अधिकारी एसपीओ टीम पिछले कई वर्षों से पुलिस मित्र के रूप में प्रशाशन व आम जनमानस की सेवा निस्वार्थ भाव से करती चली आ रही है उसी क्रम में इस वर्ष माघ मेला 2024 के सभी महास्नान पर प्रशाशन के आदेशानुसार अपनी कर्तव्य व ड्युटी निभाई। मकरसंक्रांति से लेकर महाशिवरात्रि तक शांति सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने में एसपीओ टीम तैनात रही। इस सेवा कार्य में प्रशासन का बहुत बड़ा सहयोग मिला आप सभी वरिष्ठ अधिकारीगण को बहुत बहुत धन्यवाद। इस दौरान एसपीओ प्रभारी अभयराज सिंह उप प्रभारी परवेज अहमद जनसंपर्क अधिकारी शेख लियाकत अली संगठन सचिव रविन्द्र सिंह थाना कमेटी प्रभारी रवि मिश्रा इकरामुल्लाह एलआउंसर मीडिया प्रभारी वीरेंद्र पटेल मेला प्रभारी रामजी जायसवाल समीर खान पंकज मलिक संजीव वर्मा सुशील शर्मा दीपक प्रदीप कुमार जायसवाल संदीप विश्वकर्मा रामजी गौड़ नौसाद अहमद राजू साहनी फिरोज आदि सदस्यगण मौजूद रहे।

अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद पार्क में मण्डलीय फल, शाकभाजी एवं पुष्प प्रदर्शनी का हुआ उद्घाटन

मुख्य अतिथि रवीन्द्र गोयल महाप्रबन्धक उ.म. रेलवे द्वारा फीता काटकर किया गया

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद पार्क, राजकीय उद्यान, प्रयागराज में दिनांक 09, 10 व 11 मार्च 2024 को आयोजित मण्डलीय फल, शाकभाजी एवं पुष्प प्रदर्शनी का उद्घाटन मुख्य अतिथि रवीन्द्र गोयल, महाप्रबन्धक उत्तर मध्य रेलवे द्वारा फीता काटकर किया गया। मुख्य अतिथि द्वारा अवगत कराया गया कि फल, शाकभाजी एवं पुष्प मानव जीवन का आधार है। पुष्पों के बिना मानव जीवन नीरस रहता है। पुष्प प्रेम के प्रतीक के साथ-साथ भाषा एवं मन की भावनाओं का भी द्योतक है। मण्डलायुक्त विजय विश्वास पंत ने अपने उद्बोधन में कहा कि बसन्त के मौसम में आयोजित होने वाली मण्डलीय पुष्प प्रदर्शनी का शहर के लोग बेसब्री से इंतजार करते हैं। इस समय फूलों की ब्लूमिंग चरम पर होती है और लोग विभिन्न प्रकार के फूलों एवं उनसे निर्मित कलाकृतियों को देखने के लिए हजारों की संख्या में एकत्र होते है। जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल ने भव्य पुष्प प्रदर्शनी के आयोजन के लिए आयोजकों को धन्यवाद दिया। उप निदेशक उद्यान द्वारा अवगत कराया गया कि इस प्रदर्शनी में मण्डल के सभी जनपदों से प्रगतिशील किसान, उद्यान प्रेमी बड़ी उत्साह से अपने प्रदर्शों को प्रदर्शित किये हैं। उन्होंने प्रदर्शनी में प्रतिभाग करने वाले सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद देते हुए अगली बार और उत्साह से प्रदर्शनी में भाग लेने हेतु उनका आहवान किया। उद्घाटन सत्र में मुख्य विकास अधिकारी गौरव कुमार, मुख्य कार्यकारी अधिकारी मेजा एवं नगर मजिस्ट्रेट विनोद कुमार सिंह उपस्थित थे। उद्घाटन सत्र का संचालन विजय किशोर सिंह द्वारा किया गया। अधीक्षक, राजकीय उद्यान, चन्द्रशेखर आजाद पार्क, प्रयागराज उमेश चन्द्र उत्तम द्वारा बताया गया कि इस प्रदर्शनी को कुल-26 भागों में विभक्त किया गया था। जिसमें कुल-370 प्रतियोगियों ने 1622 प्रविष्टियाँ प्रदर्शनी में लगायी। इसमें गमलों में मौसमी फूल, जैसे, जेरेनियम, फ्लाक्स, बरवीना, डहेलिया, कलेडुला, आदि शोभाकार एवं हरे-भरे पौध,कैक्ट्स एवं सकुलेन्ट पौधे, गमलों में सब्जियों के पौध गुलाब व अन्य पुष्पों के कट फ्लावर, महिलाओं व बच्चों द्वारा निर्मित पुष्प विन्यास/आकृतियाँ फलों के बने पदार्थ, बोनसाई, शहद, फोटोग्राफी व पेन्टिंग आदि की प्रतियोगितायें की गयी। इसके पूर्व में बंगलों के जजिंग का कार्य भी उद्यान विशेषज्ञों द्वारा किया गया। प्रदर्शनी का मुख्य आकर्षण पुष्पों द्वारा निर्मित विभिन्न आकृतियाँ थी। उत्तम द्वारा बताया गया कि यह पुष्प प्रदर्शनी प्रातः 08:00 बजे से रात्रि 09:00 बजे तक प्रतिदिन आम जनमानस के लिए खुले रहेगी। प्रदर्शनी के विजेताओं को दिनांक 11.03.2024 सोमवार को सायं 05:00 बजे पुरस्कार वितरण किया जायेगा।

भाप इंजन को मिली संजीवनी, अंधेरा होते ही आती है छुक-छुक की आवाज

प्रयागराज। प्रयागराज जंक्शन के सिटी साइड स्थित रिजर्वेशन काउंटर के बाहर लगे इंजन से एक बार फिर छुक-छुक की आवाज आनी शुरू हो गई है। रात होते ही जहां इंजन की सीटी बजने लगती है, वहीं उसके ऊपर से निकलता धुआं लोगों को पुराने दिनों की याद कराने लगा है। खास बात यह है कि इंजन की छुक-छुक आवाज के साथ ही उसके पहिये भी एक ही स्थान पर लगातार घूमते दिखाई देते हैं। तकरीबन सत्तर वर्ष से ज्यादा पुराने इस इंजन से आने वाली छुक-छुक की आवाज जहां यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित कर रही है, वहीं लोग इतिहास के पन्नों में दर्ज हो चुके इस इंजन के साथ खूब सेल्फी भी ले रहे हैं।वर्ष 2019 में कुंभ मेले के पूर्व ही तत्कालीन डीआरएम अमिताभ ने जंक्शन के प्रवेश द्वार पर खड़े इंजन को स्टार्ट करवाने की योजना बनाई थी। तब मंडल के इंजीनियरों की निगरानी में इसकी मरम्मत का कार्य किया गया। इसे स्टार्ट करने के लिए इसमें एक खास मोटर लगाई गई।तब तय हुआ था कि हर रोज शाम को इंजन को स्टार्ट किया जाएगा, ताकि लोग रेलवे के इतिहास से परिचित हो सकें। कुंभ के बाद इंजन कुछ दिन स्टार्ट भी किया गया। इसके बाद उसमें लगी मोटर में तकनीकी खामी आ गई। इसे देखते हुए डीआरएम हिमांशु बडौनी ने एक बार फिर से उक्त इंजन को स्टार्ट करवाया। यहां इंजन के आगे एक सिगनल भी लगाया गया है।

रेलसेवा से 25 फरवरी 1993 में बाहर किया गया था इंजन : जंक्शन के सिटी साइड में लगा भाप इंजन 1953 में डब्ल्यू बी वैगनाल लिमिटेड ने बनाया था। इसका मूल शेड गुजरात का गोधरा था। बताया जाता है कि 25 फरवरी 1993 में यह इंजन रेल सेवा से बाहर किया गया। इसके बाद यह इंजन प्रयागराज लाया गया। यहां पहले इसे एक अप्रैल 2003 को जंक्शन के सिटी साइड में लाकर खड़ा किया गया। फिर वर्ष 2018 में इसे भीतर लाकर रिजर्वेशन काउंटर के बाहर लगाया गया। यह इंजन नैरोगेज में चलता था। तब रेलवे ने इसे 1.61 लाख में खरीदा था। इसमें कुल 16 पहिये हैं। इसकी कुल लंबाई 42 फीट है।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर शहीदों को किया याद

अखंड भारत संदेश

फाफामऊ। 101 आर.ए.एफ. के तत्वावधान में वाहिनी के प्रांगण में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर शहीद जवानों के परिवारजनों का स्वागत एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। उक्त समारोह का संचालन श्रीमती अल्पना तिवारी क्षेत्रीय कावा उपाध्यक्षा-101 के दिशा-निर्देशन में किया गया। इस अवसर पर कमाण्डेंट महोदय ने शहीद सिपाही वरूण तिवारी के पिता सुरेश कुमार तिवारी व माता मिथलेश कुमारी एवं शहीद सिपाही राजेश कुमार की पत्नी विभावती एवं बेटे अभिषेक कुमार को पुष्पगुच्छ, उपहार एवं अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया। उक्त अवसर पर ही महिला दिवस के तहत समाज में महिलाओं कि स्थिति को मजबूत बनाने हेतु डॉ. हरवंश कौर खैरी, प्रो० इलाहाबाद विश्वविद्यालय एवं सुश्री कृतिका शंकरन, निर्देशक एवं विचारक ब्रह्मवेली ग्रुप, द्वारा नारी सशक्तिकरण एवं समाज में महिलाओं के योगदान के विषय पर महत्वपूर्ण उद्बोधन किया गया। साथ ही रामनिहोरा इन्सटीट्यूट ऑफ नर्सिंग एन्ड पेरामेडिकल बिनीता अस्पताल की प्रिंसपल सुश्री दीपशिखा द्वारा भी अपने विचार व्यक्त किए गए। कार्यकम के अन्त में मनोज कुमार गौतम, कमाण्डेंट-101 ने अपने सम्बोधन में कहा कि आज समाज को बेहतर बनाने में जितना योगदान पुरुषों का है उतना ही योगदान महिलाओं का भी है। आज महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है और अपने सपनों को साकार कर रही है। यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता ₹ अर्थात जहां नारी की पूजा की जाती है वहां देवताओं का वास होता है. इसी के साथ कमाण्डेंट महोदय ने सभी विशिष्ठ अतिथिगणों को पुष्पगुच्छ, उपहार एवं अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया। साथ ही उपस्थित जन समूह को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की शुभकामनाएं दी। उक्त अवसर पर सभी क्षेत्रीय कावा सदस्य श्रीमती प्रियंका विद्यार्थी, श्रीमती प्रियंका, पुर्नवसु तिवारी, द्वि०कमा०अधि०, विनोद कुमार, उप०कमा० बृजेश कुमार दुबे, उप०कमा०, नीरज कुमार, उप०कमा०, महिमा, नर्सिंग ट्यूटर, बिनीता अस्पताल, अन्य अधिकारीगण, अधीनस्थ अधिकारी गण, महिला कार्मिक, जवान एवं उनके परिवारजन उपस्थित रहे।

भगवान परशुराम की मूर्ति लगाने का संकल्प हुआ पूरा : सांसद विनोद सोनकर

कौशाम्बी के सुरसेनी में हुआ भगवान परशुराम की मूर्ति का प्राण प्रतिष्ठा, कार्यक्रम में शामिल हुए धमार्चार्य एवं साधु संत

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। भगवान परशुराम जी की मूर्ति का प्राण प्रतिष्ठा के बाद शनिवार को संत समागम,रुद्राभिषेक एवं विशाल भंडारे का आयोजन नेवादा ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि संदीप मिश्र द्वारा किया गया। शिवरात्रि के दिन भगवान परशुराम जी की मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा की गई। कौशाम्बी के लोकप्रिय सांसद विनोद सोनकर ने कार्यक्रम स्थल पहुंच कर भगवान परशुराम का दर्शन पूजन करने के बाद सिद्ध बाबा का आशीर्वाद लेकर मंच पर पहुंच कर आये हुए संतो जयराम दास महराज,अखिलेश्वरा नंद ब्रम्हचारी, ब्रम्हदेव महराज,आचार्य राम चन्द्र शुक्ल,मेवा ब्रम्हा देव बरुआ, का माला पहनाकर स्वागत किया। अंग वस्त्रम देकर सम्मानित किया। इसके बाद सांसद ने आये हुए लोगों का स्वागत करते हुए कहा कि आज के एक वर्ष पूर्व मेरे मन मे ऐसा विचार आया कि भगवान परशुराम का मन्दिर कौशाम्बी में भी बनना चाहिए। उस समय हमने ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि संदीप मिश्र से कहा कि आप जगह तय करें। मैं भगवान परशुराम जी का मंदिर सबके सहयोग से बनाने का संकल्प लेता हूँ। आज वह शुभ घड़ी आ गई। मेरा मन प्रफुल्लित है। आज भगवान परशुराम जी की मूर्ति का प्राण प्रतिष्ठा के बाद दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैने दस साल के राजनीतिक जीवन मे हर वर्ग के उत्थान के लिए प्रयास रत रहा। आज कौशाम्बी लोकसभा में विकास दिखाई दे रहा है। मैं पिछले दस साल में किसी का दरवारी नही बना। मेरे लिये कौशाम्बी लोकसभा की जनता ही मेरा परिवार है। आपके ही आशीर्वाद एवं स्नेह से मेरा हौसला बढ़ता है। अभी कुछ दिन पूर्व कौशाम्बी के प्रथम सांसद, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, सविधान सभा के सदस्य मशुरिया दीन पासी की प्रतिमा का अनावरण किया गया। अभी भगवान श्री राम के मित्र निषादराज की प्रतिमा महेवा में स्थापित की जायेगी। राजनीति जीवन में लोगों को ऐसे सामाजिक कार्य भी करने चाहिये। जिससे लोग उनके कार्यों को याद करें। कार्यक्रम का संचालन संत अमोघ अम्बुजानन्द ने किया। राजेन्द्र नाथ तिवारी ने कहा कि यहां के सांसद को मैं धन्यवाद देता हूँ। जिन्होंने ऐसा पुनीत कार्य किया। भगवान परशुराम सबके भगवान है। उन्होंने दुष्ट लोगों का संहार किया। कार्यक्रम में भाजपा नेता शिव प्रकाश मिश्र सेनानी, ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि संदीप मिश्र, सांसद मीडिया प्रभारी भूपेन्द्र पाण्डेय, प्रतापगढ़ के जिला उपाध्यक्ष राजन मिश्र, कमलेश सोनकर, चेयरमैन प्रतिनिधि उदय शंकर पाण्डेय, जितेन्द्र तिवारी, प्रधान सूरज शुक्ल,सन्तोष तिवारी,सरोज तिवारी, फौजी यादव, सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

प्रयागराज प्रधान डाकघर में लिफ्ट का पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव ने किया लोकार्पण

अखंड भारत संदेश

डाक सेवाओं के क्षेत्र में प्रयागराज का अहम स्थान ,प्रतिदिन एक हजार से ज्यादा लोग आते हैं प्रधान डाकघर, लिफ्ट से होगी सहूलियत

प्रयागराज। डाक विभाग अपनी सेवाओं और परिवेश को दिनों-ब-दिन हाई टेक और कस्टमर फ्रेंडली बना रहा है। इसी क्रम में सिविल लाइंस स्थित प्रयागराज प्रधान डाकघर में लिफ्ट का लोकार्पण प्रयागराज परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने 9 मार्च को किया। इस अवसर पर निदेशक डाक सेवाएं श्री गौरव श्रीवास्तव, प्रवर डाक अधीक्षक अभिषेक श्रीवास्तव, सीनियर पोस्टमास्टर राजेश श्रीवास्तव भी मौजूद रहे। पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि डाक सेवाओं के क्षेत्र में प्रयागराज का महत्वपूर्ण स्थान है। यहीं से तमाम डाक सेवाओं की शुरूआत हुयी और आज भी धरोहर के रूप में तमाम बातों को यह सहेजे हुये है। प्रधान डाकघर की अवस्थिति इसे और भी महत्वपूर्ण बनाती है। इसके आगोश में इतिहास के तमाम पहलू छुपे हुये हैं। अंग्रेजों के जमाने में वर्ष 1834 में निर्मित प्रधान डाकघर की पुरानी बिल्डिंग का स्थापत्य, कमरों की डिजायन और बड़े-बड़े हॉल वाकई मनमोहक हैं। पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि प्रधान डाकघर में एक ही छत के नीचे तमाम सेवाएं उपलब्ध हैं, ऐसे में यहाँ लिफ्ट लगने से ग्राहकों और कर्मियों सभी को सुविधा होगी। विशेषकर दिव्यांगों, वरिष्ठ नागरिकों, महिलाओं के लिए इस लिफ्ट से काफी सहूलियत होगी। प्रतिदिन प्रधान डाकघर में एक हजार से ज्यादा लोग सामान्य डाक सेवाओं, स्पीड पोस्ट, रजिस्ट्री व पार्सल बुकिंग, बचत बैंक, आधार, पासपोर्ट, इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक, फि लेटली इत्यादि के लिए आते हैं।गौरतलब है कि प्रधान डाकघर भवन के भू तल एवं प्रथम तल पर डाक सेवाओं के विभिन्न काउंटर्स हैं, वहीं द्वितीय व तृतीय तल पर क्रमशः प्रवर डाकघर अधीक्षक और पोस्टमास्टर जनरल कार्यालय अवस्थित है।

क्रेडिट कार्ड की लिमिट बढ़वाने के नाम पर धोखाधड़ी करने वाले अंतर्राज्यीय गैंग के 02 वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

प्रयागराज। साइबर अपराध थाना कमिश्नरेट प्रयागराज की पुलिस टीम द्वारा थाना स्थानीय के पंजीकृत मु0अ0सं0-09/2023 धारा 419/420/34 भा0द0वि0 व 66सी/66डी आईटी एक्ट के वांछित 02 अभियुक्तों 1. जियाउल अंसारी पुत्र मुकसेद मियां नि0 ग्राम कुरुवा थाना कमार्टौड जिला जामताड़ा, झारखण्ड व 2. शोएब अंसारी पुत्र इमरान अंसारी नि0 ग्राम कुरुवा थाना कमार्टौड जिला जामताड़ा, झारखण्ड को दिनांक 08.03.2024 को साइबर अपराध के गढ़ कहे जाने वाले जामताड़ा, झारखण्ड से गिरफ्तार किया गया तथा उनके कब्जे से 04 मोबाइल फोन व 03 सिम कार्ड बरामद किये गये व नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की गयी । बताते चले की अभियुक्तों द्वारा वादी मुकदमा से साइबर ठगी करते हुये फर्जी एसबीआई कस्टमर केयर अधिकारी बनकर एसबीआई क्रेडिट कार्ड की लिमिट बढ़वाने के नाम पर वादी के साथ लगभग 65,00,000/- रू0 (पैंसठ लाख रुपये) की साइबर ठगी की गई थी। जिसके सम्बन्ध में वादी मुकदमा द्वारा थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0- 09/2023 धारा 419/420/34 भा0द0वि0 व 66सी/66डी आईटी एक्ट पंजीकृत करवाया गया । साइबर अपराध थाना पुलिस टीम द्वारा तकनीकी माध्यमों व सीसीटीवी कैमरों आदि की सहायता से घटना का सफल अनावरण किया गया । गिरफ्तार अभियुक्तों से पूछताछ करने पर बताया कि हम लोग चार से पाँच समूहों में बंटकर काम करते हैं जिसमें से एक समूह फर्जी सिमकार्ड को पश्चिम बंगाल, उडीसा, असम, कर्नाटक, तमिलनाडु आदि राज्यों से खरीद कर उपलब्ध कराता है। दूसरा समूह उन सिम से लोगों को कॉल करके क्रेडिट कार्ड लिमिट बढ़वाने की स्कीम बता कर उन्हें अपने जाल में फंसा कर उनसे रिमोट एक्सेसिंग एप्प डाउनलोड कराकर उनके मोबाइल का एक्सेस प्राप्त कर लेते हैं। उसके बाद तीसरा समूह अलग-अलग बैंक खातों में पैसा ट्रांसफर कर लेता है तथा पुलिस जल्दी पकड़ न पाये इसलिए कई खातो में उस पैसे को घुमाते हैं। उसके बाद चौथा समूह पश्चिम बंगाल, झारखण्ड व आसपास के अन्य राज्यों में जाकर एटीएम के माध्यम से उस पैसे को निकाल कर अपने बॉस को व्हाट्सअप से कन्फर्मेशन भेजते हैं ।

गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम : प्र0नि0 राजीव कुमार तिवारी, थाना साइबर अपराध कमिश्नरेट प्रयागराज । निरीक्षक मो0 आलमगीर, थाना साइबर अपराध कमिश्नरेट प्रयागराज । मुख्य आरक्षी महेन्द्र प्रताप पाठक, थाना साइबर अपराध कमिश्नरेट प्रयागराज ।आरक्षी प्रदीप कुमार यादव, आरक्षी अनुराग यादव, थाना साइबर अपराध कमिश्नरेट प्रयागराज।

न्यूज झरोखा

रूद्र प्रयाग स्कूल में पुरस्कार पाकर खिले बच्चों के चेहरे

फाफामऊ। शांतिपुरम स्थित रूद्र प्रयाग विद्या मंदिर स्कूल में शनिवार को 18 वा वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में पुरस्कार पाकर बच्चों के चेहरे खिल उठे। पुरस्कार वितरण समारोह के मुख्य अतिथि आरएएफ के कमांडेंट मनोज कुमार गौतम ने बच्चों को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित्य किया। समारोह में स्कूल के नर्सरी से लेकर इंटर मीडिएट तक के एकेडमिक और स्पोर्ट्स क्षेत्र में पूरे वर्ष भर में अव्वल स्थान लाने वाले करीब चार सौ से अधिक छात्रों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। पुरस्कार पाकर नन्हें मुन्ने बच्चों के चेहरे खुशी से झूम उठे। पुरस्कार वितरण समारोह में विशिष्ट अतिथि रहे बायोवेद के डायरेक्टर डॉ. बीके दिवेदी ने बच्चों द्वारा किए गए अच्छे कार्यों की प्रशंसा करते हुए उनका उत्साहवर्धन किया। समारोह में स्कूल के बच्चों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। स्कूल के डायरेक्टर सत्येंद्र द्विवेदी ने उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम में आरएएफ के उप कमांडेंट बृजेश कुमार दूबे, प्रधानाचार्या गौरी द्विवेदी सहित भारी संख्या में छात्र - छात्राएं और अभिभावक मौजूद रहें।

महिला चपरासी से 45 साल तक 15 रुपये वेतन पर लिया काम, हाईकोर्ट ने लगाया एक लाख हर्जाना

अखंड भारत संदेश

कोर्ट ने कहा...प्रजा के सुख में ही राजा का सुख निहित

हाईकोर्ट ने कहा, विपक्षियों ने अत्यधिक तकनीकी दृष्टिकोण अपनाया है, जो एक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा के खिलाफ है। कोर्ट ने कौटिल्य के अर्थशास्त्र के राजधर्म के नीति वचन संबंधी श्लोक प्रजा सुखे सुखं राज्ञः प्रजानां तु हिते हितम्, नात्मप्रियं हितं राज्ञः प्रजानां तु प्रियं हितम्... का भी उल्लेख किया। अर्थात, प्रजा के सुख में राजा का सुख निहित है। जो स्वयं को प्रिय लगे उसमें राजा का हित नहीं है। उसका हित तो प्रजा को जो प्रिय लगे, उसमें है।

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने बेसिक शिक्षा विभाग बांदा पर महिला चपरासी से पूर्णकालिक कर्मचारी के बतौर काम लेने के बावजूद निर्धारित वेतन नहीं देने पर एक लाख रुपये का हजार्ना लगाया है। महिला 45 साल तक 15 रुपये वेतन पर काम करते हुए 2016 में सेवानिवृत्त भी हो गईं। उन्होंने दो बार हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया, लेकिन हक हासिल नहीं हो सका। खफा कोर्ट ने हजार्ने सहित बकाया वेतन देने का आदेश दिया है। यह फैसला न्यायमूर्ति सौरभ श्याम शमशेरी की अदालत ने बांदा जिले की भगोनिया देवी की 14 साल से लंबित याचिका को निस्तारित करते हुए दिया है। वह 1971 में बेसिक शिक्षा विभाग के अधीन संचालित कन्या जूनियर हाईस्कूल में 15 रुपये वेतन पर सेविका के रूप में नियुक्त की गईं थीं। 1981 में उन्हें पूर्णकालिक चपरासी के रूप में प्रोन्नति देते हुए वेतन 165 रुपये निर्धारित हुआ। लेकिन, यह उन्हें दिया नहीं गया।इसके खिलाफ उन्होंने 1985 में हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया। कोर्ट ने बेसिक शिक्षा अधिकारी बांदा को वेतन संबंधी मांग निस्तारित करने का निर्देश दिया। बीएसए ने 165 रुपये वेतन देने से यह कहते हुए इन्कार कर दिया कि उनकी सेवाओं और वेतन का अनुमोदन नहीं हुआ है। यह नियुक्ति अनियमित है। फिर, 1996 में उनकी पूर्णकालिक सेवा समाप्त कर दी गई। हालांकि, वह 2016 तक काम करतीं रहीं।2010 में वह निर्धारित वेतन की मांग को लेकर फिर हाईकोर्ट आईं। वर्ष 2016 में वह सेवानिवृत हो गईं, लेकिन बेसिक शिक्षा विभाग ने बढ़े वेतन का भुगतान नहीं किया। 35 साल की पूर्णकालिक सेवा के बावजूद मात्र 15 रुपये प्रतिमाह वेतन ही मिलता रहा। कोर्ट ने कहा कि पूर्णकालिक नियुक्ति रद्द करने के आदेश को याची ने चुनौती नहीं दी, लेकिन इसमें कोई विवाद नहीं है कि वह लंबे समय तक पूर्णकालिक चपरासी के रूप में काम करती रही हैं। लिहाजा, याची को पूर्णकालिक चपरासी के रूप में नियुक्त करने का आदेश लागू मानने योग्य है।कोर्ट ने याची की पूर्णकालिक नियुक्ति की तारीख से 165 रुपये की दर से 35 साल की सेवा के लिए 69,300 रुपये अदा करने का आदेश दिया। साथ ही, दो बार कोर्ट आने के लिए विवश करने के लिए बेसिक शिक्षा विभाग पर एक लाख रुपये का हजार्ना लगाते हुए याची को भुगतान करने का आदेश दिया है।

तीन मासूम समेत पत्नी को आत्मदाह के लिए उकसाने में पति को नौ वर्ष का कारावास

प्रयागराज। इलाहाबाद जिला अदालत ने तीन मासूम समेत पत्नी को आत्मदाह के लिए मजबूर करने वाले दोषी पति को नौ वर्ष के कठोर कारावास और पांच हजार रुपये के अर्थदंड की सजा सुनाई है। अर्थदंड की 90 प्रतिशत धनराशि बतौर मुआवजा मृतका के भाई को अदा किया जाएगा। यह फैसला जिला जज संतोष राय की अदालत ने दस वर्ष पहले कोरांव थाना क्षेत्र के वैदवार गांव में हुई निर्मम घटना के विचारण के बाद सुनाया। यह घटना वर्ष 2014 के जून की है। मृतका शीला देवी का पति विजय कुमार बिंद से उसके अवैध संबंधों को लेकर 19 तारीख की रात विवाद हुआ था। पति की रोज-रोज की प्रताड़ना से तंग शीला देवी ने अपने मासूम तीन बच्चों पांच वर्षीय दीपा, 10 वर्ष की रूपा और दुधमुंहे डेढ़ वर्ष के बेटे प्रदीप के साथ घर में ही आत्मदाह कर लिया था। मामले की सूचना पाकर शीला के घर पहुंचे भाई संतोष कुमार ने विजय के खिलाफ आत्महत्या के लिए उकसाने का मुकदमा दर्ज करवाया था। घटना में शीला और दीपा की मौके पर ही मौत हो गई थी, जबकि रूपा और प्रदीप ने इलाज के दौरान दम तोड़ा था। पुलिस में विवेचना के बाद आरोप पत्र दाखिल किया था। विचारण के दौरान अभियोजन की ओर से जिला शासकीय अधिवक्ता फौजदारी गुलाब चंद्र अग्रहरि ने चार गवाह पेश किया। कोर्ट ने दोषी पति को नौ वर्ष के कठोर कारावास और पांच हजार रुपये अर्थदंड की सजा सुना दी।

वर्चस्व कायम रखने के लिए की बमबाजी, मचा हड़कंप

फाफामऊ। शांतिपुरम लेबर चौराहे के पास शनिवार को दोपहर में कोचिंग और लाइब्रेरी में पढ़ने वाले छात्रों का एक ग्रुप क्षेत्र में अपना वर्चस्व कायम रखने के लिए दिन दहाड़े सड़क पर बमबाजी कर फरार हो गए। अचानक बम चलने से लेबर चौराहे पर भगदड़ मच गई। भगदड़ में कई लाइब्रेरी और कैफे के बच्चें गिरकर घायल हो गए। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने घटना स्थल से दो जिंदा बम बरामद कर आसपास के दुकानों में लगे सीसीटीवी कैमरे के माध्यम से बमबाजी करने वाले छात्रों की तलाश में जुट गई है। जानकारी के मुताबिक शनिवार को दोपहर में शांतिपुरम लेबर चौराहे के पास स्थित एक कैफे में गए एक छात्र से कुछ अन्य छात्रों से मामूली बात को लेकर कहासुनी को लेकर एक दूसरे ग्रुप के छात्रों ने क्षेत्र में अपना वर्चस्व कायम रखने के लिए फोन करके बाहर से कुछ बच्चों और छात्रों की बुला लिया। कई बाइक से पहुंचे करीब एक दर्जन बच्चों ने दहशत फैलाने के लिए लेबर चौराहे के पास लाइब्रेरी और कैफे के पास कई बम फोड़ हड़कंप मचा दिया। बम की आवाज सुनकर कैफे और लाइब्रेरी में बैठे बच्चें बाहर सड़क पर भागने लगे इसी बीच अफरातफरी में कई बच्चे गिरकर घायल भी हो गए। पुलिस ने बताया घटना को लेकर किसी ने तहरीर नहीं दी। सीसीटीवी कैमरे की मदद से बमबाजी करने वाले छात्रों को पहचान कर कार्रवाई की जायेगी।

कॉलेज में शोहदे ने छात्रा का छीन लिया मोबाइल

प्रयागराज। सीएमपी डिग्री कॉलेज में पढ़ने वाली एक छात्रा ने अपने साथी का फोन नहीं उठाया तो वह कॉलेज में आ धमका और उसका मोबाइल छीन ले गया। उसे जान से मारने की धमकी दी। छात्रा ने शिवम यादव के खिलाफ लूट और धमकी समेत अन्य धाराओं में जार्जटाउन थाने में मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस को बताया कि शिवम उसका पुराना साथी है। इंटरमीडिएट से दोस्ती थी। उसकी हरकतों से परेशान होकर छात्रा ने दूरी बनाने की कोशिश की तो वह ब्लैकमेल करने लगा। उसकी बहन और दोस्तों को मैसेज करने धमकाने लगा। गाली देने लगा। इसी क्रम में वह सीएमपी कॉलेज पहुंच गया और छात्रा को धमकाकर मोबाइल छीन ले गया। जार्जटाउन पुलिस ने बताया कि आरोपी प्रेमी की तलाश की जा रही है। वह घर छोड़कर भागा हुआ है।

स्वयंसेवकों ने सात दिवसीय विशेष शिविर में योग के महत्व पर दिया बल

फाफामऊ। इलाहाबाद डिग्री कॉलेज, प्रयागराज राष्ट्रीय सेवा विशेष शिविरयोजना छात्र स्वयंसेवकों की इकाई संख्या 17 के छात्र स्वयंसेवकों के सात दिवसीय विशेष शिविर के पांचवें दिन शिविर की शुरूआत साफ सफाई एवं योग से हुई, तत्पश्चात कार्यक्रम अधिकारी डॉ मालती द्वारा स्वयंसेवकों का देश हित में योगदान और व्यक्तित्व विकास से संबंधित विषयों पर परिचर्चा आयोजित की गई। बौद्धिक सत्र में सर्वप्रथम डॉ दिनेश कुमार, वाणिज्य विभाग, इलाहाबाद डिग्री कॉलेज, द्वारा विकसित भारत एवं वित्तीय साक्षरता विषय पर व्याख्यान दिया । उन्होंने बहुत ही सारगर्भित तरीके से भारत की आर्थिक व्यवस्था, कार्यात्मक साक्षरता, कौशल मैपिंग, ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था, फिट इंडिया, वित्तीय समावेशिता के साथ-साथ पर्यावरण संबंधित समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की। इसके पश्चात डॉ सोनिया स्थापक, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज ने डिजिटल इंडिया और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में चर्चा करते हुए स्मार्टफोन की उपयोगिता, एकेडमिक बैंक क्रेडिट, पाठ्यक्रम विकास, मैसेज ओपन ऑनलाइन कोर्स की महत्ता के साथ शैक्षिक उपयोग में आने वाले विभिन्न डिजिटल प्लेटफार्मों जैसे स्वयंम आदि पर विस्तार से बताया। जिसमें स्वयंसेवकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया इसके पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत स्वयंसेवकों ने लोकगीत एवं राष्ट्रीय गीत प्रस्तुत कीये। ग्रुप डी के लीडर हर्ष शुक्ला ने प्रतियोगिता में भागीदारी लेकर पहला स्थान ग्रहण किया।

सीबीएसई की इंटर गणित की परीक्षा में 2500 परीक्षार्थी हुए शामिल

जिले के सात केन्द्रों पर सम्पन्न हुई परीक्षा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सीबीएसई बोर्ड की 12वीं की गणित विषय की परीक्षा शनिवार को जिले के सात परीक्षा केंद्रों क्रमश न्यू एंजिल्स सी से स्कूल, संगम इंटरनेशनल स्कूल, संस्कार ग्लोबल स्कूल, जवाहर नवोदय विद्यालय, आइंस्टीन पब्लिक स्कूल लालगंज और पंडित नागेश दत्त पब्लिक स्कूल में हुई। इस परीक्षा में प्रतापगढ़ के 37 सीबीएसई मान्यता प्राप्त विद्यालयों के लगभग 2500 परिक्षार्थी शामिल हुए।

न्यू एंजिल्स सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल की चेयरपर्सन डा0 शाहिदा व सीबीएसई के सिटी कोऑर्डिनेटर तथा न्यू एंजिल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल के प्रिंसिपल बिपिन कुमार सोनी ने बताया कि सभी परीक्षा केंद्रों पर परीक्षा सकुशल संपन्न हुई। सीबीएसई बोर्ड की तरफ से ऑफिशियल वेबसाइट पर सभी छात्रों की मदद के लिए गणित का सैंपल पेपर बहुत पहले हीं जारी कर दिया गया था। परीक्षा देकर बाहर निकले परीक्षार्थियों में से कुछ ने आज के पेपर को मॉडरेट तथा कुछ ने लंबा बताया। परीक्षार्थियों के अनुसार, कुल 38 सवाल थे। बहुविकल्पीय सवालों का था।

इसमें कुल 18 सवाल तथा 2 सवाल अभिकथन तर्क से पूछे गए थे और हर एक सवाल के लिए 1 अंक निर्धारित था। ऐसे में यह सेक्शन कुल 20 अंकों का था। अति लघु उत्तरीय के 5 सवाल प्रत्येक के लिए 2 अंक के लिए पूछे गए थे। यह सेक्शन कुल 10 अंकों के लिए था। न्यू एंजिल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल की चेयर पर्सन डॉक्टर शाहिदा ने बताया कि सीबीएसई बोर्ड की कक्षा 12वीं की परीक्षा 2 अप्रैल को समाप्त होगी। सीबीएसई कक्षा 12वीं की अगली परीक्षा फिजिकल एजुकेशन की 12 मार्च को होगी।

न्यू एंजिल्स स्कूल से परीक्षा देकर बाहर निकलते परीक्षार्थी।

हाईस्कूल उर्दू में 961 छात्रों ने दी परीक्षा

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद की हाईस्कूल व इंटर की परीक्षा में आज प्रथम पाली में हाईस्कूल उर्दू, गुजराती, मराठी, काश्मीरी की परीक्षा में 961 छात्रों ने परीक्षा दी जबकि 101 छात्र अनुपस्थित हो गये। इसी प्रकार इंटर मीडिएट व्यवसायिक में 560 बच्चों ने परीक्षा दी। जबकि 18 अनुपस्थित हो गये। शांतिपूर्ण ढंग से परीक्षा सम्पन्न हुई। कहीं किसी भी परीक्षा में कोई अप्रिय घटना नहीं सामने आई।

पुलिस व वन विभाग की मिलीभगत से हरे पेड़ों की हो रही कटाई

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। कोतवाली क्षेत्र के नेवादा गांव में पुलिस व वन विभाग की मिलीभगत से हरे नीम के पेड़ों की धड़ल्ले से कटाई की जा रही है। बता दें कि वन माफिया आए दिन क्षेत्र में दिनदहाड़े हरे एवं प्रतिबंधित पेड़ काट रहे हैं। यह सब गोलमाल पुलिस हुआ वन विभाग की मिली भगत से क्षेत्र में संचालित हो रहा है। पट्टी तहसील क्षेत्र के करैला, इटहरा मुजाही, भदवना, हरदोई, पृथ्वी गंज, दीवानगंज, उडैंयाडीह, सोनही सहित आदि जगहों पर वन विभाग व पुलिस की मिली भगत से अवैध धारा मशीन का संचालन हो रहा है। इन आरा मशीन संचालक द्वारा हरे भरे पेड़ों को काटा जा रहा है। इस पर ना तो वन विभाग कर्मी ध्यान दे रहे हैं। ना ही पुलिस अगर ऐसा ही चलता रहेगा तो आने वाले समय में पर्यावरण के लिए घातक साबित हो सकता है। वहीं क्षेत्र में जितने भी आरा मशीन चल रहे हैं पूर्ण रूप से अवैध है। लोगों ने जिले के उच्च अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराते हुए ऐसे अवैध आरा मशीन संचालक के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है। वन विभाग के रेंजर पट्टी से संपर्क करने की कोशिश की गई तो उनका मोबाइल नाट रीचेबल बता रहा था।

हरे पेड़ों की कटाई करते लोग।

शिवाला महोत्सव में आकर्षक प्रस्तुतियों पर मंत्रमुग्ध हुए लोग

पूर्व विधायक ने की शिरकत, बच्चों ने प्रस्तुत किये सांस्कृतिक कार्यक्रम

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर क्षेत्र के पूरे ईश्वरनाथ स्थित पौराणिक शिव मंदिर पर आयोजित दो दिवसीय छठवें शिवाला महोत्सव के शुभारंभ के दूसरे सत्र सांयकाल नेहरू युवा केन्द्र के कलाकारों व आनन्द इण्टर कालेज के बच्चों द्वारा विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई। वहीं झांकी का कार्यक्रम देख पूरा माहौल भक्ति मय से सराबोर हो गया।

इस दौरान आनन्द वन इण्टर कालेज के बच्चों ने जो केशरी के लाल मेरा छोटा सा काम, मेरी राम जी से कह देना जय श्रीराम...की प्रस्तुति दी तो उपास्थित जनसमूह झूम उठा और जय श्रीराम के उद्घोष से समूचा शिव परिसर गुंजायमान हो उठा। इसी के साथ भगवान शिव एवं भस्मा सुर को दिये गये वरदान पर बच्चों ने नाटक का मंचन कर लोगों भाव विभोर कर दिया। इसके उपरांत आरडीएन द्वारा शिव तांडव, राधा-कृष्ण व कृष्ण-सुदामा की झांकी प्रस्तुति की गई। इस मौके पर राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के राजेश मिश्र व शिक्षिका रीना शुक्ला एवं प्रदीप शुक्ल, महोत्सव के संयोजक शिवेश शुक्ल द्वारा बच्चों के उत्कृष्ट प्रस्तुति के लिए सम्मान पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

इस मौके पर राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के राजेश मिश्र ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन से समाज के साथ ही देश को विकास की गति मिलती है। ऐसे कार्यक्रम में प्रत्येक लोगों को बढ़-चढ़कर सहभागिता निभाना चाहिए। इस अवसर पर पूर्व विधायक राजकुमार पाल ने कहा कि शिवाला महोत्सव में सभी के सहयोग से आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया है। इस मौके पर समाजसेवी रोशनलाल, महिला मोर्चा की प्रवक्ता सारिका श्रीवास्तव मौजूद रहीं। अंत में परमानंद मिश्र ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस प्रशासन का भरपूर सहयोग रहा। इस मौके पर आशीष शर्मा, अजय कुमार शर्मा, हरि मंगल पाल, जितेंद्र वर्मा, धीरेन्द्र शुक्ल सहित आदि मौजूद रहे।

शिवाला महोत्सव में मौजूद पूर्व विधायक राजकुमार पाल व अन्य।

साहित्य भूषण हरीलाल को सम्मानित करते साहित्यकारगण।

साहित्य भूषण हरीलाल के सम्मान में काव्य गोष्ठी एवं सम्मान समारोह आयोजित

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सृजना साहित्यिक संस्था उत्तर प्रदेश द्वारा साहित्य भूषण सम्मान से अलंकृत साहित्यकार हरीलाल मिलन के आगमन पर सृजनाकुटीर अजीतनगर में काव्यगोष्ठी एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया। श्री मिलन को हाल ही में राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान लखनऊ से सुब्रह्मण्यम भारती पुरस्कार से नवाजा गया। इन तमाम उपलब्धियों को पाकर बेल्हा का गौरव बढ़ाने के लिए श्री मिलन को सृजना साहित्यिक संस्था द्वारा शब्द साधक सम्मान से अलंकृत किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में सम्मान पाकर हरीलाल मिलन ने कहा कि प्रतापगढ़ मेरी जन्मभूमि है। यहां की माटी साहित्यिक दृष्टि से उर्वर है। यहां जन्म लिया, यह मेरे लिए गौरव की बात है। उन्होंने रचनाएं भी सुनाई। अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. दयाराम मौर्य रत्न ने श्री मिलन को बधाई देते हुए कहा कि साहित्य सृजन एक महान कार्य है। बेल्हा के सृजेताओं ने साहित्य जगत को अप्रतिम योगदान दिया है। साहित्य यश प्राप्त करने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है। डॉ. रत्न ने रचना भी सुनाई। संचालन युवा कवि-शिक्षक अनिल कुमार निलय ने किया। काव्यपाठ करने वालों में श्रीनाथ मौर्य सरस, राधेश्याम दीवाना, दृगपाल शर्मा, रामचन्द्र शर्मा इत्यादि प्रमुख रहे।

रक्तदान कर राष्ट्र सेवा का ले संकल्पः डा0 धर्मेंद्र

अभविप ने आयोजित किया रक्तदान शिविर

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के गतिविधि सेवार्थ विद्यार्थी एसएफएस प्रतापगढ़ के रानीगंज नगर ईकाई द्वारा कुंती देवी शिक्षण प्रशिक्षण स्नातकोत्तर महाविद्यालय सराय सुल्तानी में रक्तदान के प्रति विद्यार्थियों को जागरूक कर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए स्टूडेंट फॉर सेवा काशी प्रांत के प्रांत प्रमुख डा धर्मेंद्र प्रताप सिंह ने कहा की सभी युवाओं को रक्तदान के प्रति स्वयं जागरूक होकर दूसरों को भी जागरूक करना चाहिए। रक्तदान करते हुए हम सभी को राष्ट्र सेवा का संकल्प लेना चाहिए। देश भर में एसएफएस के माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न सेवा कार्यों का संचालन कर रहे है। परिषद की पाठशाला,स्वास्थ्य शिविर एवं विभिन्न प्रकार के सेवा कार्य के माध्यम से विद्यार्थियों में समाज एवं राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव जागृत कर रहे है। प्रांत सहमंत्री सुधांशु रंजन मिश्रा ने कहा विद्यार्थी परिषद अपने स्थापना काल से ही शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु कार्य कर रही है। परिषद ने समय समय पर विद्यार्थियों के मध्य विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से कार्य विस्तार को गति प्रदान कर रही है। राजा प्रताप बहादुर चिकित्सालय प्रतापगढ़ की ब्लड बैंक इंचार्ज डा कुसुम लता ने छात्राओं को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करते हुए रक्तदान से होने वाले लाभ के विषय में विस्तृत जानकारी प्रदान की। प्रथम बार रक्तदान करने वाली छात्रा प्रियंका पांडेय, नेत्रम पांडेय, पूजा शर्मा,स्वाति,शालिनी श्रीवास्तव ने कहा की आज पहली बार रक्तदान कर बहुत ही गर्व की अनुभूति हो रही है। भविष्य में जब भी इस प्रकार के सेवा की आवश्यकता समाज को होगी हम सभी तत्पर रहेंगे। इस दौरान विभाग संगठन मंत्री अमित देव,महाविद्यालय की प्राचार्या डा हाजरा बेगम, डा सौरभ पाण्डेय, शुभम मिश्रा, डा धर्मेंद्र मिश्रा, सौरभ रावत, आकाश, वैभव, धर्मेंद्र प्रजापति, सुमित गुप्ता, अनुज पाल आदि लोग उपस्थित रहे।

रक्तदान शिविर में रक्तदान करते अभविप कार्यकर्ता।

मिलजुलकर विकास तथा सौहार्द की मजबूती का संदेश है एकता महोत्सवः डीएम

पुलिस अधीक्षक ने अमन व शांति को बताया समय की सबसे बड़ी आवश्यकता

अखंड भारत संदेश

लालगंज प्रतापगढ़। बाबा घुइसरनाथ धाम मे उन्तीसवें राष्ट्रीय एकता महोत्सव में शुक्रवार की देर शाम जिलाधिकारी संजीव रंजन तथा एसपी सतपाल अंतिल ने राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी एवं क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना के साथ दीप प्रज्ज्वलन कर भव्य शुभारंभ किया। इस दौरान बाबा धाम में आयोजन समिति द्वारा लोक प्रशासन के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ योगदान के लिए जिलाधिकारी संजीव रंजन व एसपी सतपाल अंतिल को महोत्सव आयोजन समिति की ओर से संयोजिका एवं क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना द्वारा मोमेण्टो तथा शॉल व बुकें प्रदान कर सम्मानित किया गया।

वरिष्ठ साहित्यकार विशालमूर्ति मिश्र एवं भागवत भूषण पं. विनय शुक्ल के संयोजन मे श्रीकान्त वर्मा ने सुमधुर आवाज मे स्वागत गान की अनुपम प्रस्तुति दी। समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित करते डीएम संजीव रंजन ने कहा कि एकता महोत्सव मिलजुलकर विकास तथा सौहार्द की मजबूती का संदेश है। विशिष्ट अतिथि पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल ने कहा कि समाज और देश की खूबसूरत संरचना बनाए रखने के लिए इस समय सबसे बडी आवश्यकता सौहार्द और एकता है। उन्होने महोत्सव में शांतिपूर्ण मनोरंजन की व्यवस्था को बड़े आयोजनों के लिए घुइसरनाथ धाम का अद्वितीय उदाहरण ठहराया। राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने कहा कि हमारा देश लोकतांत्रिक परिवेश में शांति और सौहार्द तथा विविधता में एकता के लिए दुनिया के लिए प्रेरणा की शक्ति प्रदान करने वाला देश है। अध्यक्षता करते हुए कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता क्षेत्रीय विधायक एवं आयोजन समिति की संयोजिका आराधना मिश्रा मोना ने कहा कि बाबा धाम मे एकता महोत्सव का भव्य आयोजन हमारे विकास पथ का मार्गदर्शन किया करता है। सांस्कृतिक संध्या के उदघाटन सत्र का संचालन ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने किया। विधायक आराधना मिश्रा मोना के पुत्र राघव मिश्र ने अतिथियों का स्वागत किया। विशिष्ट अतिथि प्रो. डा. विजयश्री सोना व पार्श्वगायक रवि त्रिपाठी रहे। आभार प्रदर्शन प्रतिनिधि भगवती प्रसाद तिवारी ने किया।

महोत्सव में डीएम व एसपी को सम्मानित करतीं विधायक आराधना मिश्र मोना

सुपरस्टार अक्षरा सिंह के लटके झटके ने बांधी खूबसूरत समां

अखंड भारत संदेश

लालगंज प्रतापगढ़। भोजपुरी की जानी मानी सुपरस्टार अक्षरा सिंह ने उन्तीसवें महोत्सव में भक्ति तथा मनोरंजन से जुड़े भोजपुरिया सुरों को खूबसूरती के साथ आगाज दिया तो पूरा का पूरा महोत्सव लोगों के दिलों में उतरता गया। वहीं मशहूर पार्श्वगायक रवि त्रिपाठी की भजन श्रृंखला व वालीबुड से जुडे गीतों की बौछार से भी हर तरफ से उमड़े श्रोताओं को दिल थामकर महोत्सव का रात भर आनन्द उठाते देखा गया। अक्षरा और रवि की जोड़ी ने भी जब सुरों का संगम प्रवहमान बनाया तो पास में बह रही। सई की तरंगे भी मानो झूम उठी हो। अक्षरा का जादू महिला एवं पुरूष आडीटोरियम से लेकर अति विशिष्ट दीर्घा तक इस तरह कयामत मे दिखा कि तिल रखने की जगह न होने के हालात मे दर्शको को एक पल के लिए तो संभालना मुश्किल हो गया। वहीं सांस्कृतिक रंगमंच पर गणेश वंदना, मयूर नृत्य, गुजरात के गरबा डांडिया, शिव-पार्वती नृत्य, राजस्थान का घूमर नृत्य और महाराष्ट्र का लोक नाट्य संगीत भी दर्शकों मे अमिट छाप छोड गया दिखा।

मुख्य अतिथि को सम्मानित करतीं प्राचार्या डा0 नीलिमा श्रीवास्तव

बच्चों को नकारात्मक रुप से रोकथाम करने के लिये बचना चाहियेः मृदुला जैन

साकेत गर्ल्स पीजी कालेज में आयोजित हुई कार्यशाला

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। वर्ल्ड ऑफ वुमेन एजुकेशन द्वारा साकेत गर्ल्स पी0जी0 कॉलेज के सभागार में उद्देश्य परक पालन-पोषण और बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला को शुरू करते हुए सुश्री ज्योतिमा चैहान समाज सेविका ने मजबूत आधार पर निर्मित दृढ़निश्चय के व्यक्तित्व निर्माण में अभिभावकों की भूमिका विषय पर परिचर्चा शुरू की। उन्होने कहा कि अभिभावकों को ऋणात्मक सोच से बचना होगा और आधुनिक तकनीक के साथ सन्तुलन बनाये रखते हुए भारतीय संस्कृति के अनुरूप बच्चों का व्यक्तित्व निर्मित करना होगा।

मुख्य वक्ता के रूप में नई दिल्ली से आई मनोवैज्ञानिक और जीवन शैली प्रशिक्षिका मृदुला जैन ने बहुत सामान्य-सामान्य सी घटनाओं को बच्चों एवं उनके अभिभवकों से जोड़कर उनके द्वारा बताये गये अनुभवों के आधार पर निष्कर्ष रूप में बताया कि हमारे पालन-पोषण में क्या कुछ होना चाहिए जिससे कि हम एक सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र के लिए, सर्वश्रेष्ठ नागरिक तैयार कर सके। उन्होंने बताया कि हमें बच्चों को नकारात्मक रूप से रोकथाम करने से बचना चाहिए बल्कि उन्हे अपने अनुभवों को बच्चों के साथ शेयर करना चाहिए जिससे बच्चा स्वयं गलत और सही का विश्लेषण और निर्णय कर सके। जब हम किसी चीज को सीधे मना करते है तो बच्चे का कोमल हृदय या तो अन्तर्मुखी या विद्रोही हो जाता है दोनो ही स्थितयों भयावह और व्यक्तित्व विकास में बाधक है। कार्यशाला का शुभारम्भ द्वीप प्रज्वलित कर के किया गया। कार्यशाला में आये हुए आगन्तुकों के प्रति आभार महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ0 नीलिमा श्रीवास्तव ने व्यक्त किया। कार्यशाला में डॉ0 विनय श्रीवास्तव, पूनम श्रीवास्तव, प्राचार्या, राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, मीना श्रीवास्तव, अध्यक्ष संवेदना संस्था, हर्षित श्रीवास्तव, एडवोकेट, हाईकोर्ट एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

राजा भैया की होर्डिंग फाड़े जाने की घटना से तनाव, आक्रोश

कुण्डा, प्रतापगढ़। बाघराय थाना क्षेत्र के सकरदहा मे राजा भैया की होर्डिंग फाड़े जाने की घटना से बाजार मे तनाव फैल गया। राजा भैया के प्रबल समर्थक और पूर्व प्रधान संजय सिंह ने बाघराय थाने मे अराजक तत्वों के खिलाफ तहरीर देकर कार्यवाई किए जाने की मांग की है। बता दें की सकरदहा बाजार के पास स्थित लक्ष्मनेश्वर नाथ धाम पर संजय सिंह ने आगंतुको के स्वागत की एक होर्डिंग लगवाई थी, जिसे शुक्रवार की रात अजराजक तत्वों ने फाड़ दिया। इस बात की मिलने जब सुबह मिली तो जनसत्ता दल के समर्थको मे आक्रोश फैल गया और समर्थकों का जमावड़ा मंदिर के पास होने लगा। दर्जनों समर्थको के साथ वो बाघराय थाने जाकर अज्ञात अराजकतत्वों के खिलाफ तहरीर दिया है।

महिला एवं शिशु स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। विकास क्षेत्र कालाकांकर के अंतर्गत कन्दई गॉव में महिला एवं शिशु स्वास्थ्य पर एक जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान डॉ रणजीत सिंह ने कहा कि मानव जीवन में स्वास्थ्य को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि यदि किसी व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा नहीं है तो उसका सम्पूर्ण जीवन एक प्रकार से निरर्थक और दुखदायी हो जाता हैं इस अवसर पर विषेश रूप से आमंत्रित वरिष्ठ चिकित्सक डॉ किरन सिंह ने कहा कि किसी भी महिला को अपने दैनिक कार्य करने, बीमारियों की रोकथाम तथा सुरक्षित व स्वस्थ प्रसव के लिए अच्छे भोजन की आवश्यकता होती है। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ भास्कर शुक्ला ने कहा कि नारी स्वस्थ होगी तभी स्वस्थ समाज का निर्माण किया जा सकता है। डॉ नवीन सिंह, डॉ अवधेष सिंह, डॉ प्रदीप सिंह, डॉ यतेन्द्र कुमार आदि लोगों ने अपने-अपने विचार रखे। इस अवसर पर महेन्द्र प्रताप, लोकनाथ मिश्रा, प्रभावती देवी, कंचन, नीलू विश्वकर्मा, स्वीटी यादव, पूनम, संजना, क्रान्ति देवी, हेमा, रूपम आदि लोग उपस्थित रहे।

मतदाताओं को किया गया जागरूक, प्राथमिक विद्यालय सरखेलपुर में हुई बैठक

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। लोकसभा चुनाव में मतदान ज्यादा से ज्यादा हो इसके लिए अधिकारियों ने बैठक आयोजित कर जागरूक किया गया। शुक्रवार को प्राथमिक विद्यालय सरखेलपुर में एडीएम त्रिभुवन विश्वकर्मा व एसडीएम पट्टी देश दीपक सिंह ने मतदाताओं को जागरूक करते हैं कहा कि वोट प्रतिशत को बढ़ाने के लिए हर प्रयास किया जाएं। एक एक मत महत्वपूर्ण है। और मतदाताओं से अपील की ज्यादा से ज्यादा मतदाता इस चुनाव में करें। अधिक मतदान कर अपनी पंचायत का नाम रोशन करें। इस दौरान एसडीएम पट्टी देश दीपक सिंह,नायब तहसीलदार पट्टी बीडीओ राजीव पांडे, एडीओ पंचायत राजू भारतीय, ग्राम प्रधान अशफ़ाक अहमद, सेक्रेटरी राजेश कुमार, लेखपाल विनोद तिवारी बीएलओ नईमुद्दीन, राम प्रताप, संभू गौतम, प्रमोद, सादिक अली, तहम्मुल हुसैन, लल्लन सिंह सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

स्थानीय निकाय की उन्मुखीकरण कार्यशाला का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। ब्लॉक परिसर में ब्लॉक स्तरीय नोडल अध्यापक प्रधानाध्यापक एस. एम. सी. अध्यक्ष तथा ग्राम प्रधान स्थानीय निकाय के सदस्यों की उन्मुखीकरण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला के मुख्य अतिथि व्लाक प्रमुख राकेश कुमार सिंह पप्पू सिंह रहे। उन्होंने उन्मुखीकरण कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए कहा कि शिक्षक समाज की रीढ़ होता है जो समाज का सजग प्रहरी माना जाता है। उन्होंने कहा कि शासन द्वारा जो व्यवस्था प्रदान किया है उसे प्रधान एस. एम. सी.अध्यक्ष के सहयोग से विद्यालय को जो निपुण बनाने का लक्ष्य है उसे पूरा करें इसी क्रम में हमारा आंगन हमारे बच्चे कार्यशाला का भी आयोजन किया गया इस आयोजन में निपुण हुए विद्यालय के बच्चो को प्रशस्ति प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया साथ ही साथ विद्यालय के अध्यापक को प्रमुख द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर खण्ड शिक्षा अधिकारी गुलाब चन्द ए आरपी शिक्षक संकुल मौजूद रहे। मेहदिया की छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

राष्ट्रीय लोक अदालत में 34287 मुकदमों का निस्तारण कर 2,71,22,993 वसूला गया

अखंड भारत संदेश

जनपद न्यायाधीश अनुपम कुमार की अध्यक्षता में राष्ट्रीय लोक अदालत का शुभारम्भ दीप प्रज्जवलित कर किया गया

कौशाम्बी। उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ के निर्देश तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कौशाम्बी के तत्वाधान में जनपद न्यायाधीश अनुपम कुमार की अध्यक्षता में राष्ट्रीय लोक अदालत का शुभारम्भ दीप प्रज्जवलित कर किया गया। न्यायिक अधिष्ठान के सभी सम्मानित न्यायिक अधिकरी एवं बैंक अधिकारी व कर्मचारी तथा जनमानस उपस्थित रहे।इस राष्ट्रीय लोक अदालत में वादों के निस्तारण के क्रम में जनपद न्यायाधीश द्वारा कुल 01 याद का निस्तारण किया गया। मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण न्यायालय द्वारा 35 वादों का निस्तारण कर प्रतिकर के रूप में 1,48,29,000/- रू० दिलाया गया। प्रधान न्यायाधीश परिवार न्यायालय द्वारा कुल 18 परिवारिक वादों का निस्तारण किये गये तथा इसी कम में अपर जनपद न्यायाधीश प्रथम द्वारा कुल 04 वाद का निस्तारण किया गया। अपर जनपद न्यायाधीश / विशेष न्यायाधीश एससी/एसटी द्वारा 08 याद का निस्तारण कर 8,000/- रू० का अर्थदण्ड वसूला गया। अपर जनपद न्यायाधीश सप्तम द्वारा कुल 04 वाद का निस्तारण कर 2,000 /- रू० का अर्थदण्ड वसूला गया। अपर जनपद न्यायाधीश अष्टम द्वारा विद्युत अधिनियम के 112 वाद तथा सिविल आरबिट्रेशन का 01 वाद का निस्तारण किया गया। अपर जनपद न्यायाधीश/त्वरित न्यायालय प्रथम द्वारा कुल 01 वाद का निस्तारण किया गया। अपर जनपद न्यायाधीश/त्वरित न्यायालय द्वितीय द्वारा कुल 01 वाद का निस्तारण किया गया। मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट द्वारा कुल 5945 फौजदारी वादों का निस्तारण कर 7,09,890/- रु० अर्थदण्ड वसूला गया। अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट / सिविल जज सी०डि० द्वारा कुल 761 वादों का निस्तारण कर 790/- रू० का अर्थदण्ड अधिरोपित करने के अतिरिक्त 2596192/- रू0 का उत्तराधिकार प्रमाण पत्र जारी किया गया।

सिविल जज सी०डि०/ त्वरित न्यायालय द्वारा कुल 2032 वादों का निस्तारण कर 6,300/- रू० अर्थदण्ड वसूला गया। न्यायिक मजिस्ट्रेट द्वारा 899 वादों का निस्तारण कर 17,150/- रू० का अर्थदण्ड वसूला गया। इसी प्रकार सिविल जज जू०डि० / त्वरित न्यायालय प्रथम द्वारा कुल 1827 वाद निस्तारित कर 180/- रु० अर्थदण्ड वसूला गया। ग्राम न्यायालय, चायल द्वारा कुल 155 वाद निस्तारित कर 3,260/- रू० का अर्थदण्ड वसूला गया। जिले के समस्त राजस्व न्यायालयों द्वारा 21795 वादों व पूर्वांचल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड द्वारा 212 वादों का निस्तारण कर 6,55,022 रु0 जमा कराया गया। जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग, कौशाम्बी द्वारा 04 वाद निस्तारित कर 4,67,445 रू० जमा कराया गया। न्यायालय, स्थायी लोक अदालत (जनोपयोगी सेवायें), कौशाम्बी द्वारा सुलह समझौते के आधार कुल 01 मामले का निस्तारण किया गया तथा बैंक के ऋण वसूली वादों से सम्बन्धित जनपद के सभी बैंको के द्वारा 471 वादों का निस्तारण कर 78,27,764 रू० जमा कराया गया।इस प्रकार आज के राष्ट्रीय लोक अदालत में कुल वाद 34287 का निस्तारण कर 2,71,22,993 रू0 वसूला गया।

न्यूज झरोखा

एएसपी एसडीएम ने समाधान दिवस में फरियादियों की समस्याओं को सुना

कोखराज कौशाम्बी मुख्यमंत्री की अति महत्वपूर्ण योजना थाना समाधान दिवस के अवसर पर अपर पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार शर्मा, एसडीएम महेंद्र श्रीवास्तव व सीओ सिराथू अवधेश विश्वकर्मा ,ने समाधान दिवस में पहुंचे फरियादियों की समस्याओं को सुना और उसे गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करने का निर्देश दिया सभी कर्मचारियों को राजस्व में लापरवाही न बरतने के लिए निर्देशित किया समाधान दिवस के अवसर पर अधिकारियों ने कहा कि न्याय के लिए यदि फरियादियों को भटकना पड़ेगा तो सम्बंधित पर कार्यवाही होगी थाना समाधान दिवस में राजस्व से सम्बंधित 10 मामलें पहुँचे जिनमे चार का निस्तारण किया गया थाना समाधान दिवस में लेखपाल देवेंद्र सिंह,सुमित कुमार, नित्या पाल, सुनील द्विवेदी,अनिल कुमार, व पुलिस एसओ कोखराज इन्द्र देव,कृष्ण कुमार यादव,कमलेश कुमार साहित उप निरीक्षक चौकी इंचार्ज और गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही।

पिपरी थाने में नायब तहसीलदार ने सुनी जन शिकायतें

चायल कौशाम्बी थाना समाधान दिवस के आयोजन पर पिपरी थाना में आयोजित थाना समाधान दिवस में नायब तहसीलदार अंकिता पाठक ने लोगों की जनसमस्याएं सुनी इस मौके पर कुल 5 शिकायती पत्र मिले जिनमे 3 राजस्व सम्बंधित रहे और 2 पुलिस विभाग से संबंधित शिकायती पत्र फरियादियों ने अधिकारियों के सामने रख कर समस्याओ के समाधान की मांग की जिस पर एक शिकायती पत्र का मौके पर निस्तारण कर दिया गया शेष शिलायती पत्रों को निस्तारण के लिए राजस्व वा पुलिस टीम को गुणवत्तापूर्ण समय सीमा के अंदर निस्तारित करने का निर्देश दिया गया नायब तहसीलदार ने कहा कि शिकायती पत्रों के निस्तारण में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी इस मौके पर थानेदार उप निरीक्षक चौकी इंचार्ज राजस्व निरीक्षक सहित तमाम लोग मौजूद रहे

बेशकीमती कब्जा भूमि पर चला नगर पंचायत का बुल्डोजर

पूर्व चेयरमैन ने अपने कार्यकाल के दौरान टीन डालकर किए थे कब्जा

अझुवा कौशांबी आदर्श नगर पंचायत अझुवा वार्ड नं 2अंबेडकर नगर दलित बस्ती के पास निमार्णाधीन धोबीघाट तालाब के पास गाटा संख्या 157 तलाबी नंबर पर कई वर्ष पूर्व नगर पंचायत अझुवा के पूर्व चेयरमैन ने टीन डालकर अवैध कब्जा कर लिया था जिसे नगर पंचायत अध्यक्ष शांती कुशवाहा ने आज शनिवार को अपने कर्मचारियों व जेसीबी भेजकर अवैध कब्जा मुक्त करा दिया वहीं नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि ओमप्रकाश कुशवाहा ने बताया कि उक्त भूमि पर कुछ लोग अवैध कब्जा के फिराक में थे ।पूर्व चेयरमैन और दूसरे व्यक्ति जो कब्जा के फिराक में थे दोनो की आपसी सहमति से मामले का निस्तारण किया गया है अवैध कब्जे से खाली हुई भूमि के सामने बाउंड्री बनवाकर शीघ्र ही ओपन जिम का निर्माण कराया जाएगा।

भाजपा नेताओं ने मिलन के खोज निकाले हैं नए-नए तरीके

कौशाम्बी लोकसभा चुनाव नजदीक आते ही भाजपा के नेता अब नए तरीके से मिलन करने लगे हैं अब भाजपा नेता ने की होर्ट मिलन करने का नया तरीका खोज निकाला है कीहोर्ट मिलन में भाजपा नेता कैसे मिलेंगे इसका तरीका क्या होगा इसको लेकर के लोगों के बीच असमंजस की स्थिति बनी हुई है कि आखिर मिलन के समय उनको किस तैयारी से जाना होगा दिनेश शर्मा राज्यसभा सांसद का पोस्टर वायरल कर भाजपा के मीडिया प्रभारी गोलू सिंह ने कीहोर्ट मिलन की जानकारी पत्रकारों को दी है भाजपा के मीडिया प्रभारी द्वारा जारी किया गया यह पोस्टर सोशल मीडिया में वायरल हो रहा है और चर्चा का विषय बना हुआ है

अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष की पत्नी का निधन

भरवारी कौशाम्बी नगर पालिका परिषद भरवारी के नया बाजार निवासी अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष एडवोकेट राम प्रकाश मिश्रा की धर्म पत्नी की मृत्यु का समाचार जैसे ही नगर के लोगों को मिला दुख व्यक्त करने वालों का उनके आवास पर ताता लग गया नगर के सैकड़ो लोगों ने उनके आवास पर पहुंचकर दुख व्यक्त किया उसके उपरांत उनके आवास में श्रद्धा सुमन अर्पित करने एवम परिवार के सदस्यों को इस दुःख की घड़ी में सहनशक्ति देने की कामना ईश्वर से कामना की उनके आवास पर पहुंचे लोगों ने कहा कि हृदय विदारक घटना घटित हो जाने पर भगवान परिजनों को दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करे इस अवसर पर पूर्व सांसद शैलेंद्र कुमार मोइन उद्दीन अनीश चच्चा राजू सक्सेना मुन्ना लाल के एस झा लल्लू पाल सक्षम सक्सेना विष्णू प्रकाश मिश्रा सत्यम मिश्रा सुभम मिश्रा बहादुर सरोज विकाश अस्पताल के मालिक शुक्ला जी आदि लोग दुःख की घड़ी में मौजूद रहे

झाड़ियां में मिला नवजात शिशु

कौशाम्बी। प्रयागराज जनपद के एयरपोर्ट थाना क्षेत्र के जलालपुर भर्ती गांव के यमुना नदी के किनारे झाड़ियां में सुबह नवजात शिशु जीवित मिला है जिसको पूर्व प्रधान उठा ले गए अपने घर; लोगों की देखने और लेने की लगी होड़।

बुजुर्ग महिला के साथ बाइक सवार बदमाशो ने की लूट

पीड़िता को ही परेशान कर रही थाना चौकी पुलिस

कौशाम्बी। संदीपनघाट थाना क्षेत्र में बकरी चरा रही बुजुर्ग महिला के साथ बाइक सवार बदमाशो ने दिन दहाड़े लूट की घटना को अंजाम दिया है,बुजुर्ग महिला की नाक की कील लूट कर भाग रहे बदमाशो को ग्रामीणों ने पकड़ लिया और पिटाई कर दी,घटना की सूचना पुलिस चौकी पर देने गयी पीड़िता और उसके बेटे को ही पुलिस चौकी का सिपाही ऋषि जबरन जेल भेजने की धमकी दे रहा है।सूचना पर पहुंची संदीपन घाट थाना पुलिस भी पीड़िता और उसके बेटे के साथ ही अभद्रता करना शुरू कर दिया और पीड़िता के बेटे को जबरन जीप में बैठाने पर जमकर हंगामा हुआ है।पीड़िता का आरोप है कि पुलिस जबरन उनको परेशान कर रही है। थाना और चौकी पुलिस की गतिविधियों से लगता है कि लुटेरे से उसके गहरे संबंध है संदीपन घाट थाना क्षेत्र के मूरतगंज के पास बकरी चरा रही बुजुर्ग महिला मेघनी देवी पत्नी मसूरियादीन के पास रुककर बाइक सवार दो लोग मूरतगंज का रस्ता पूछे और उसके नाक की कील छीनकर भागने लगे,थोड़ी दूर जाने पर ही उनकी बाइक बंद हो गई और ग्रामीणों ने पकड़ लिया और पिटाई कर दी।बदमाशो के पकड़े जाने की सूचना पीड़िता के बेटे अशोक ने मूरतगंज पुलिस को दी,घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने बदमाशो का पीएचसी मूरतगंज में इलाज कराया,वही पीड़िता का आरोप है कि पुलिस उसे और उसके बेटे को ही जेल भेजने की धमकी दे रही है आखिर लुटेरों को पकड़ कर उनको पीटना और पुलिस को सौपना आईपीसी की किस धारा में गुनाह है लेकिन थाना चौकी पुलिस लुटेरों से इस तरह रिश्ता बना कर रख रही है की पूरी पुलिस वर्दी कलंकित हो रही है।

खेत से लेकर घर तक मां बेटियों को दबंगों ने बेरहमी से पीटा

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के पिपरी गांव की आशा देवी पत्नी धुनमन सिंह पटेल ने दिए गए शिकायती प्रार्थना पत्र में बताया कि मेरी तीन बेटियां है। पति बीमारी के चलते काफी दिनों से अस्वस्थ रहता है। पीड़िता मेहनत मजदूरी कर के अपने परिवार का भरण पोषण करती है। शनिवार की सुबह करीब 10 बजे अपनी दो बेटियों के साथ अपने ही खेत में बोई हुई भिंडी की गुड़ाई करने गयी थी। उसी समय पडोस के ही पुष्पराज सिंह, युवराज सिंह व बिरेन्द्र सिंह पुत्रगण स्व जनक सिंह पटेल मौके पर पहुंच कर पीड़िता पर मेढ़ काटने का झूठा आरोप लगा कर भद्दी - भद्दी गाली-गलौज करने लगे। पीड़िता ने गाली-गलौज का विरोध किया तो विपक्षी लोगों ने एक जुट होकर लात घूसों से मारा पीटा। पीड़िता की बेटियों ने बीच-बचाव किया तो उन्हें भी मारा पीटा दबंगो के चंगुल से छूटकर पीड़िता अपनी बेटियों संग घर पहुंची तो दबंगो ने पीड़िता सहित बेटियों को पुनः मार पीट कर जान से मार डालने की धमकी देते हुए चले गए। पीड़िता अपनी बेटियों संग चरवा थाना पहुंच कर नाम जद्द लिखित शिकायती प्रार्थना पत्र देकर कार्यवाही करने कि मांग किया है। शिकायती प्रार्थना पत्र पाकर चरवा पुलिस जांच पड़ताल में जुट गई है।

धूमधाम से भरवारी में निकली खाटू श्याम की रथ यात्रा

शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम और भंडारा का आयोजन

भरवारी कौशाम्बी। नगर पालिका परिषद भरवारी कस्बे में शनिवार को खाटू श्याम की निशान यात्रा धूमधाम से निकाली गई,यह निशान यात्रा हनुमत निकेतन पुरानी बाजार से उठकर पूरे भरवारी नगर में भ्रमण करते हुए नगर पालिका स्टेडियम मंडी समिति पर जाकर समाप्त हुई बाबा खाटू श्याम की शोभा यात्रा में हजारों पुरुष और महिला भक्त डीजे की धुन पर खूब झूमे।नगर पालिका स्टेडियम मैदान में बाबा खाटू श्याम की शोभा यात्रा की समाप्ति के बाद शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम और भंडारा का भी आयोजन किया गया है। खाटू श्याम के कार्यक्रम में अपनी सांस्कृतिक प्रस्तुति देने के लिए दिल्ली से साक्षी चोपड़ा,प्रयागराज से रोमा निषाद और कानपुर से अभिषेक शुक्ला आए हुए है। श्याम मित्र मंडल भरवारी के आयोजक मंडल के पदाधिकारी गौरव केसरवानी ने बताया कि भरवारी में बाबा श्याम की भव्य शोभा यात्रा और निशान यात्रा निकाली गई है।शाम को भजन संध्या का कार्यक्रम और फिर भंडारा प्रसाद का वितरण का आयोजन है।इस साल लगभग 35 हजार श्रद्धालुओं के प्रसाद ग्रहण कराने की व्यवस्था की गई है।

बालिका से छेड़खानी के बाद पुलिस ने कराया समझौता बालिका हुई गायब

अखंड भारत संदेश

पुलिस ने पूर्व की भांति इस बार भी आरोपी युवक के विरुद्ध नहीं दर्ज किया है मुकदमा

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि नाबालिग बच्चियों के साथ किसी प्रकार की छेड़खानी गंभीर अपराध है

कौशांबी। पिपरी थाना क्षेत्र के निजामपुर पुरैनी गांव की एक नाबालिग बालिका स्कूटी से प्रतिदिन स्कूल पढ़ने जाया करती थी रास्ते में उसके साथ एक युवक आए दिन छेड़खानी करता था जिससे बालिका पीड़ित थी युवक की हरकत को बालिका ने अपने परिजनों से बताया जिस पर परिजनों ने मामले की सूचना 19 नवम्बर 2023 को स्थानीय थाना और पुलिस चौकी को दिया पुलिस ने दोनों पक्षों को बुलाया दोनों पक्षों की बात सुनने के बाद चौकी पुलिस ने युवक पर मुकदमा दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर जेल भेजने के बजाय बालिका से तहरीर वापस लेने का दबाव बनाया और मामले में सुलह समझौता करा दिया नाबालिग बालिका से छेड़खानी में भी थाना पुलिस समझौता कराने लगी है जबकि सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट तौर पर कहा है कि नाबालिग बच्चियों के साथ किसी प्रकार की छेड़खानी गंभीर अपराध है लेकिन थाना पुलिस को सुप्रीम कोर्ट के निर्देश की जानकारी होने के बाद वह कानून का पालन करने को तैयार नहीं है बालिका से छेड़खानी के इस मामले में पुलिस द्वारा कराए गए सुलह समझौता के बाद आरोपी युवक की हरकत बढ़ गई और वह बालिका से लगातार छेड़खानी करने लगा बताया जाता है कि 09 मार्च को सुबह बालिका घर से स्कूल जाने के लिए स्कूटी लेकर निकाली थी लेकिन बालिका स्कूल नहीं पहुंची स्कूल की छुट्टी होने के बाद जब बालिका वापस घर नहीं लौटी तो परिजन परेशान हो गए संभावित स्थान पर बालिका की खोज भी किया लेकिन बालिका का कहीं सुराग नहीं लगा है बालिका जिस स्कूटी को लेकर स्कूल जाती थी उस स्कूटी का भी कहीं सुराग नहीं लगा है मोबाइल फोन पर भी बालिका से परिवार के लोगों की बात नहीं हो रही है जिससे परिजनों की चिंता बढ़ गई और परिजनों ने आशंका जाहिर की है कि बालिका का अपहरण कर लिया गया है मामले की शिकायत बालिका के पिता ने थाना पुलिस से की है खबर लिखे जाने तक पुलिस ने पूर्व की भांति इस बार भी आरोपी युवक के विरुद्ध मुकदमा नहीं दर्ज किया है।

थाना पश्चिम शरीरा तथा कौशांबी में डीएम एसपी ने सुनी जनशिकायतें

राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम को मौके पर जाकर निस्तारित करने के दिये निर्देश

कौशाम्बी जिलाधिकारी राजेश कुमार राय एवं पुलिस अधीक्षक बृजेश कुमार श्रीवास्तव ने थाना समाधान दिवस के अवसर पर थाना पश्चिम शरीरा तथा कौशांबी में जनशिकायतों को सुनकर सम्बन्धित अधिकारियों को तत्काल मौके पर जाकर निस्तारित करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने थाना पश्चिम शरीरा में समाधान दिवस रजिस्टर की जॉच करते हुए सम्बन्धित अधिकारियों को प्रतिदिन जनसुनवाई में प्राप्त प्रार्थना-पत्रों को रजिस्टर में अंकित कर गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करने के निर्देश दिए। थाना पश्चिम शरीरा में कुल 05 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 02 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया, शेष शिकायतों के निस्तारण के लिए जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने राजस्व व पुलिस की संयुक्त टीम को मौके पर जाकर निस्तारित करने के निर्देश दिए। इसी प्रकार थाना कौशांबी में कुल 01 शिकायत प्राप्त हुई,जिसका निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया।

भाजपा नेताओं ने अयोध्या धाम की यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं को फंसे छोड़ दिया

श्रद्धालुओं को काफी असुविधा और कठिनाइयों का सामना करते हुए दूसरे साधन से अयोध्या धाम जाना पड़ा

कौशांबी। भगवान श्री राम की पूजा के लिए भारतीय जनता पार्टी की तरफ से हर गांव और कस्बे से दो बस से श्रद्धालुओं को श्री राम लला के दर्शन करवाने का आयोजन किया गया। अयोध्या धाम की यात्रा भक्तों के एक समूह के लिए तब एक कष्टदायक परीक्षा बन गई जब स्थानीय भारतीय जनता पार्टी के नेता बीजेपी के मंडल अध्यक्ष भी थे। कथित तौर पर 7-8 श्रद्धालुओं को पीछे छोड़ दिया जिसके परिणामस्वरूप उन श्रद्धालुओं को काफी असुविधा और कठिनाइयों का सामना करते हुए दूसरे साधन से अयोध्या धाम जाना पड़ा। श्रद्धालुओं के अनुसार यह घटना 26 फरवरी 2024 के दिन भगवान श्री राम लला के दर्शन के लिए अयोध्या धाम में शीर्ष भाजपा नेताओं द्वारा आयोजित एक निर्धारित यात्रा के दौरान हुई। यह आध्यात्मिक यात्रा करारी से अयोध्या धाम के लिए दो बसों में लगभग 100 श्रद्धालुओं को साथ लेकर हुई थी। शुरूवात में यह कहा जा रहा था कि ये यात्रा निःशुल्क होगी परन्तु बाद में हर यात्री से 250/- रुपए और आधार कार्ड की फोटोकॉपी लिया गया था। यह यात्रा सुबह 7 बजे करारी से शुरू हुई और सकुशल अयोध्या धाम तक पहुंच गयी। सभी श्रद्धालुओं ने श्री राम लला के भव्य और दिव्य दर्शन करने के पश्चात खाना पीना किया। खाना पीना करने के बाद कुछ श्रद्धालु आस - पास की मंदिर में भ्रमण करने जाना चाहते थे। श्रद्धालुओ ने अपने - अपने बस के लीडर को सूचित करके भ्रमण करने निकल गए परन्तु जल्द ही यह कार्य कई श्रद्धालुओं के लिए एक दुःस्वप्न में बदल गया क्योंकि बिना इन लोगो को बुलाये अयोध्या से करारी के लिए बस निकल चुकी थी जिस बात से ये लोग बिलकुल अनजान थे। लगभग एक घंटे के बाद इन लोगो ने जब मंडल अध्यक्ष को फोन किया तो उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। बाद में बूथ अध्यक्ष से पता चला कि बस निकल गयी है। ऐसी स्थिति में दूर गांव से आये इन श्रद्धालुओं ने अपने आप को उचित व्यवस्था या मार्गदर्शन के बिना फंसा हुआ पाया।कई श्रद्धालुओं ने बताया कि उन्हें स्थानीय भाजपा नेताओं के समूह द्वारा पीछे छोड़ दिया गया था जो कथित तौर पर यह सुनिश्चित करने में विफल रहे कि साइट से प्रस्थान करने से पहले सभी का हिसाब-किताब किया जाए। परिणामस्वरूप, बुजुर्ग व्यक्तियों और बच्चों सहित कई उपासकों को किसी अपरिचित स्थान पर परिवहन या आवास के बिना छोड़ दिया गया। उचित व्यवस्था के अभाव में फंसे हुए भक्तों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा

विनोद सोनकर को भाजपा लड़ा सकती है लोकसभा चुनाव लेकिन दूसरे सीट से

अखंड भारत संदेश

दुर्गा देवी स्कूल की 100 करोड़ की जमीन और भवंस मेहता अस्पताल की 100 करोड़ की जमीन कब्जा करने का है आरोप

सांसद की खींचतान के चलते तीनों विधानसभा सीट भाजपा प्रत्याशी के हार जाने से पार्टी की हुई थी किरकिरी

कौशाम्बी। लोकसभा चुनाव 2024 में पार्टी के टिकट बंटवारे को लेकर मौजूदा और टिकट के दावेदारों के बीच खींचतान मची हुई है पार्टी भी असमंजस की स्थिति में है वर्तमान सांसदों के 5 साल के लेखा-जोखा भी पार्टी हाई कमान देख रहे हैं कौन जीता सांसद फिर चुनाव जीत सकता है और किस संसद का उसके कारनामे के चलते उसके लोकसभा क्षेत्र में विरोध हो रहा है इस बात को भी भाजपा का शीर्ष नेतृत्व देख रहा है कौशांबी लोकसभा सीट पर वर्तमान सांसद विनोद सोनकर हमेशा विवादों से घिरे रहे बीते विधानसभा चुनाव में विधायक प्रत्याशियों का विरोध करने का भी आरोप भी उनपर लगा है जिसका खामियाजा यह था कि कौशांबी जनपद के तीनों विधानसभा सीट बीजेपी प्रत्याशी हार गए तीनों सीट पर भाजपा प्रत्याशियों के हारने के बाद भाजपा की जिस तरह किरकिरी हुई उसको लेकर प्रदेश से लेकर देश स्तर पर चर्चा होने लगी सांसद पर आरोप लगे कि उन्होंने अपने स्वजातीय मतदाताओं को दूसरे प्रत्याशी को मतदान करने की सिफारिश की दुर्गा देवी स्कूल की 100 करोड़ कीमत की जमीन कब्जा करना भवंस मेहता अस्पताल की 100 करोड़ कीमत की जमीन कब्जा करने सहित मौजूदा सांसद विनोद सोनकर पर तमाम गम्भीर आरोप लगा सामान्य वर्ग के मतदाताओं की भावनाओं को ठेस पहुंचने का भी आरोप वर्तमान सांसद विनोद सोनकर लगा विवादों से घिरे सांसद विनोद सोनकर को लोकसभा कौशाम्बी सीट से चुनाव मैदान में उतारकर भाजपा किसी तरह का रिस्क नहीं लेना चाहती है भाजपा का अपना दल अनुप्रिया पटेल से गठबंधन है अनुप्रिया पटेल पार्टी से वर्तमान में वाचस्पति विधायक हैं भारतीय जनता पार्टी गठबंधन प्रत्याशी वाचस्पति को लोकसभा सीट कौशांबी से चुनाव लड़ा सकती है कौशांबी के राजनीतिक क्षेत्र में वाचस्पति का दबदबा है पूर्व में विधायक सांसद और उनकी पत्नी जिला पंचायत अध्यक्ष रह चुकी है वर्तमान सांसद को दूसरे सीट से चुनाव लड़ाने पर भाजपा पार्टी में विचार चल रहा है सूत्रों की माने तो मछली शहर सीट से विनोद सोनकर को लोकसभा प्रत्याशी भाजपा बना सकती है लेकिन विनोद सोनकर के एड़ी चोटी के जोर लगाने के बाद भी कौशांबी सीट से विनोद सोनकर वर्तमान सांसद को चुनाव लड़ाने के लिए भाजपा शीर्ष नेतृत्व तैयार नहीं है कौशांबी लोकसभा सीट से सांसद विनोद सोनकर का टिकट कटने की उम्मीद को लेकर भारतीय जनता पार्टी में उनके समर्थकों में खलबली मची हुई है और गली नुक्कड़ चौराहे पर पूरे दिन उनके टिकट को लेकर चर्चा हो रही है जहां वाचस्पति के चेहरे में चमक दिखाई पड़ रही है वहीं विनोद सोनकर का चेहरा उतरा दिखाई पड़ रहा है।

संपादक की कलम से

अबकी बार, बहानों की बयार

भाजपा शासन में 2018 में लाई गई चुनावी बॉड योजना पर शुरूआत से सवाल उठे, इसे रिश्वतखोरी का नया तरीका बताया गया, लेकिन भाजपा के पहले कार्यकाल में लायी गई यह योजना दूसरे कार्यकाल में बेधड़क चलती रही। इस पर कई याचिकाएं सर्वोच्च न्यायालय में दाखिल की गईं और चुनावों में धन के खर्च और पारदर्शिता का हवाला दिया गया। आखिरकार सर्वोच्च न्यायालय ने पिछले महीने 15 फरवरी को चुनावी या इलेक्टोरल बॉन्ड योजना को यह कहते हुए रद्द कर दिया था कि ये संविधान के तहत सूचना के अधिकार, भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उल्लंघन करता है। चुनावी बॉन्ड के काम में संलग्न एकमात्र बैंक स्टेट बैंक ऑफ इंडिया को अदालत ने निर्देश दिया था कि वह इलेक्टोरल बॉन्ड के बारे में सारी जानकारी 6 मार्च तक चुनाव आयोग के सामने पेश करे। इस आदेश का मकसद यह था कि आने वाले आम चुनावों के पहले जनता को यह पता चले कि किस राजनैतिक दल को कितना चंदा अब तक मिला है और किन लोगों या किन कारोबारी घराने ने कितने की रकम चुनावी बॉन्ड्स के जरिए राजनैतिक दलों को दी है। शीर्ष अदालत के इस आदेश को खास तौर पर भाजपा के लिए बड़ा झटका माना गया था, क्योंकि देश में इस वक्त सबसे अधिक धन भाजपा के ही पास है। सत्तारुढ़ दल होने के कारण चंदे की रकम भी उसे ही सबसे ज्यादा मिली होगी, ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है। लेकिन चुनावी बॉड में गोपनीयता के नियम के कारण अब तक यह खुलासा नहीं हो पाया था कि भाजपा को किन लोगों से कितना धन मिला और इस चंदे के एवज में सरकार से उन लोगों को कोई विशेष लाभ दिया गया या नहीं। भाजपा सरकार ने 2018 में चुनावी बॉन्ड पर जो अधिसूचना जारी की थी, उसके क्लॉज 7 (4) में यह स्पष्ट रूप से कहा गया था कि अधिकृत बैंक हर सूरत में इलेक्टोरल बॉन्ड खरीदार की जानकारी को गोपनीय रखे। सरकार का कहना था कि इस तरह चंदा देने वाले को राजनैतिक दलों के प्रतिशोध से बचाया जा सकेगा। यानी यह पहले ही मान लिया गया था कि किसी राजनैतिक दल की विचारधारा को बढ़ावा देने के लिए कोई चंदा नहीं देगा, बल्कि चंदे के बदले फायदा हासिल करने के लिए दिया जाएगा।

बहरहाल, शीर्ष अदालत के आदेश के बाद यह माना जा रहा था कि अब चुनाव से पहले ही चुनावी बॉन्ड खरीदारों की जानकारी सामने आ जाएगी और इस पर भाजपा ने चुनाव में पारदर्शिता या ईमानदारी के जितने भी तर्क दिए हैं, उनकी परख भी हो जाएगी। लेकिन एसबीआई ने छह तारीख की समय सीमा पूरी होने से पहले ही सर्वोच्च न्यायालय में अर्जी दाखिल कर कहा है कि चुनावी बॉन्ड के मामले में जानकारी देने के लिए 30 जून तक का वक्त दिया जाए। अर्जी में कहा गया है कि 12 अप्रैल 2019 से लेकर 15 फरवरी 2024 के बीच 22,217 इलेक्टोरल बॉन्ड जारी किए गए हैं। यह बॉन्ड अलग-अलग राजनीतिक पार्टियों को चंदे के लिए जारी हुए हैं। बैंक का यह भी कहना है कि देश की अलग-अलग 29 शाखाओं में बॉन्ड खरीदे और भुनाए गए हैं। खरीदार का नाम, बॉन्ड खरीदने की तारीख, जारी करने की शाखा, बॉन्ड की कीमत और बॉन्ड की संख्या, इन सबका आंकड़ा किसी सेंट्रल सिस्टम में नहीं हैं। गोपनीयता के कारण बॉन्ड जारी करने से संबंधित डेटा और बॉन्ड को भुनाने से संबंधित डेटा दोनों को दो अलग-अलग जगहों में रखा गया, इसका कोई सेंट्रल डेटाबेस नहीं रखा गया और अब ये सब मुंबई में बैंक की मुख्य शाखा में एक साथ स्टोर किया गया है। बॉन्ड खरीद और भुनाने के डेटा के दो अलग-अलग सेट हैं, यानी 22 हजार 217 बॉन्ड की जानकारी के लिए 44,434 सेट डिकोड करने होंगे, फिर उन्हें आपस में मिलाना होगा, उनकी तुलना करनी होगी और तब जाकर पता चलेगा कि किसने किस दल को कितने का चंदा बॉन्ड खरीद कर दिया है। गोपनीयता के नियम का हवाला देते हुए एसबीआई ने जो दलील अपने आवेदन में पेश की है, उसे देखकर एकबारगी यही लगेगा कि वाकई इस काम में काफी वक्त लगेगा। लेकिन डिजीटल इंडिया के इस दौर में यह बहानेबाजी के अलावा और कुछ दिखाई नहीं देता है। मान लिया कि बैंक ने बॉन्ड खरीदने वालों की जानकारी गोपनीयता के कारण सेंट्रल सिस्टम में नहीं चढ़ाई, लेकिन कहीं तो ये डेटा दर्ज है ही और और अपने ही सिस्टम में दर्ज डेटा निकालने के लिए बैंक को चार महीने का वक्त क्यों चाहिए।

चुनावी बांड विवरण पर समय सीमा बढ़ाने की याचिका अनुचित

पी.सुधीर

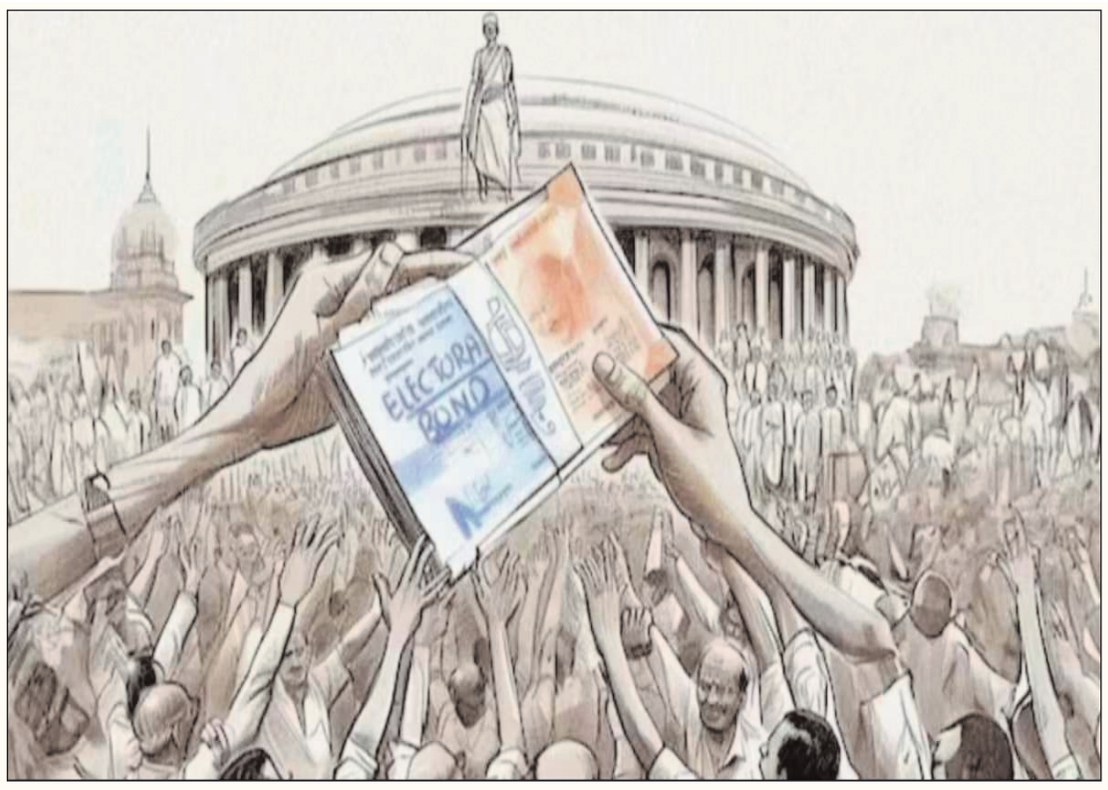

सरकार ने फैसले के कार्यान्वयन को कमजोर करने के लिए भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) के माध्यम से कदम उठाया है। सुप्रीम कोर्ट ने निर्देश दिया था कि अप्रैल 2019 से खरीदे गये चुनावी बांड के सभी विवरण सार्वजनिक किये जाने चाहिए, जिसमें खरीद की तारीख, खरीदार का नाम और बांड का मूल्य शामिल है। भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने चुनावी बांड योजना को असंवैधानिक और स्पष्ट रूप से मनमाना बताते हुए रद्द कर दिया था। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि मोदी सरकार को यह फैसला अरुचिकर लगा, इस तथ्य की पृष्ठभूमि में कि चुनावी बांड योजना राजनीतिक भ्रष्टाचार को वैध बनाने के लिए बनाई गई थी

सरकार ने फैसले के कार्यान्वयन को कमजोर करने के लिए भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) के माध्यम से कदम उठाया है। सुप्रीम कोर्ट ने निर्देश दिया था कि अप्रैल 2019 से खरीदे गये चुनावी बांड के सभी विवरण सार्वजनिक किये जाने चाहिए, जिसमें खरीद की तारीख, खरीदार का नाम और बांड का मूल्य शामिल है। इसके लिए, भारतीय स्टेट बैंक, जो चुनावी बांड के लेनदेन के लिए एकमात्र एजेंसी थी, को 6 मार्च तक बांड के सभी प्रासंगिक विवरण भारत के चुनाव आयोग को प्रस्तुत करने के लिए कहा गया था और उसके बाद चुनाव आयोग को 13 मार्च तक इस सम्बंध में सारी जानकारी सार्वजनिक करनी थी।

एसबीआई ने 4 मार्च को सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है और चुनावी बांड लेनदेन का विवरण प्रस्तुत करने के लिए अधिक समय मांगा है। इसमें 30 जून तक का समय बढ़ाने के लिए कहा गया है। इसका मतलब यह होगा कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा एसबीआई को दिये गये 21 दिनों के बजाय, बैंक अब काम पूरा करने के लिए 116 दिन और चाहता है। दरअसल, इसका अर्थ होगा लोकसभा चुनाव खत्म होने और नयी सरकार बनने के बाद ही जनता को चुनावी बांड के विवरण के बारे में सूचित किया जायेगा। एसबीआई के अनुरोध को व्यापक आलोचना और उपहास का सामना करना पड़ा है। एसबीआई के सभी बैंकिंग परिचालन डिजिटल हो गये हैं। एसबीआई द्वारा दिये गये एक आरटीआई जवाब के अनुसार, चुनावी बांड जारी करने के लिए आईटी प्रणाली के विकास पर कुल 1,50,15,338 रुपये की लागत में से 60,43,005 रुपये खर्च किये गये। यदि चुनावी बांड योजना के लिए एक आईटी प्रणाली विकसित करने के लिए 60 लाख रुपये से अधिक खर्च किये गये थे, तो यह कैसे हो सकता है कि एसबीआई अब यह दावा करता है कि चुनावी बांड के कुछ रिकॉर्ड एसबीआई के मुंबई मुख्यालय में मैन्युअल रूप से और सीलबंद कवर में रखे गये हैं? जब किसी व्यक्ति या इकाई द्वारा एसबीआई की निर्दिष्ट शाखा में बांड खरीदा जाता है, तो उसे डिजिटल रूप से रिकॉर्ड किया जायेगा। जब धारक बांड किसी अन्य निर्दिष्ट एसबीआई शाखा में जमा किया जायेगा, तो उसका भी एक डिजिटल रिकॉर्ड होगा। 2019 की शुरूआत में, हफपोस्ट इंडिया में नितिन सेठी ने लिखा था कि कैसे एसबीआई द्वारा जारी किये गये बांड में एक गुप्त अल्फान्यूमेरिक कोड होता है, जिसका उपयोग यह ट्रैक करने के लिए किया जा सकता है कि बांड किसने खरीदा और किस पार्टी को इसे दान किया गया है। भले ही कुछ रिकॉर्ड मैन्युअल रूप से रखे गये हों, फिर भी यह मानने का कोई कारण नहीं है कि 22,217 चुनावी बांड का हिसाब-किताब 21 दिनों के अंतराल में नहीं किया जा सकता है। एसबीआई को बस इतना करना था कि इस काम के लिए अतिरिक्त कर्मियों को नियुक्त करता। इसलिए, यह बिल्कुल स्पष्ट है कि एसबीआई एक घटिया बहाना और गलत कारण लेकर सामने आया है, जो सुप्रीम कोर्ट की बुद्धिमत्ता का अपमान करने जैसा है। गलत मंशा इस बात से भी स्पष्ट होती है कि एसबीआई ने 6 मार्च से ठीक एक दिन पहले अदालत में अपनी याचिका दायर की, ताकि समय सीमा चूकना एक नियति बन जाये। मोदी सरकार और सत्तारूढ़ भाजपा के पास अब तक जारी किये गये और भुनाये गये चुनावी बांड के विवरण के प्रकाशन को रोकने की कोशिश करने का हर कारण है। जैसा कि अदालत ने स्वयं बताया था, यह योजना इस प्रकार तैयार की गयी थी कि प्रतिदान की सुविधा प्रदान की जा सके। एक बार जब भाजपा को प्राप्त 6,565 करोड़ रुपये के बांड का ब्यौरा पता चल जाये, तो इसका संबंध इस बात से लगाया जा सकता है कि किस कंपनी या व्यक्तिगत पूंजीपति ने उसे कितना बांड राशि दान किया था और बदले में कौन सी नीति या लाभ उसे दिया गया था।

एक और पहलू है जो भाजपा को मिले चुनावी बांड का ब्यौरा प्रकाशित होने से उजागर होगा। न्यूज लॉन्ड्री और द न्यूज मिनट द्वारा हाल ही में भाजपा को प्राप्त कॉपोरेट दान (चुनावी बांड के माध्यम से नहीं) के एक अध्ययन से पता चलता है कि कम से कम 30 कंपनियां हैं, जिन्होंने पिछले पांच वित्तीय वर्षों में भाजपा को लगभग 335 करोड़ रुपये का दान दिया था। वर्षों तक इसी अवधि के दौरान उन्हें केंद्रीय एजेंसियों द्वारा कार्रवाई का सामना करना पड़ा था। इनमें से 23 कंपनियों ने 2014 और ईडी या आईटी विभाग जैसी केंद्रीय एजेंसी द्वारा की गई कार्रवाई के वर्ष के बीच कभी भी भाजपा को दान नहीं दिया था; केंद्रीय एजेंसी की कर्रवाई के चार महीनों के भीतर चार कंपनियों ने कुल 9.05 करोड़ रुपये का दान दिया; छह कंपनियां जो पहले से ही भाजपा को दान दे रही थीं, उन्होंने तलाशी के बाद के महीनों में बड़ी रकम सौंपी। यह इस बात का जबरदस्त सुबूत है कि कैसे केंद्रीय एजेंसियों का इस्तेमाल भाजपा के लिए धन उगाही करने के लिए किया जाता है। एक बार जब भाजपा के संबंध में चुनावी बांड विवरण प्रकाशित हो जाते हैं, तो न केवल रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार के बीच संबंध स्थापित किया जा सकता है, बल्कि यह भी स्थापित किया जा सकता है कि केंद्रीय एजेंसियों की जबरदस्त कार्रवाइयों द्वारा ब्लैकमेल के माध्यम से धन कैसे निकाला गया था। सुप्रीम कोर्ट 6 मार्च तक एसबीआई की याचिका पर विचार नहीं कर सका। कोर्ट को छल-कपट को पारित नहीं होने देना चाहिए। सर्वोच्च न्यायालय को एसबीआई के अनुरोध पर शीघ्र सुनवाई कर समुचित निर्णय का उसके अनुपालन के लिए तत्काल अल्प समय सीमा निर्धारित करनी चाहिए, ताकि चुनावों के सम्पन्न हो जाने तक जनता को अंधेरे में न रखा जा सके।

लोकतंत्र के एक और स्तंभ में दरार

बॉम्बे हाई कोर्ट की जस्टिस विनय जी. जोशी और जस्टिस वाल्मीकि एस. मेनेजेस की खंडपीठ ने माओवादियों से कथित संबंध के एक मामले में दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर 54 साल के जीएन साईबाबा को बरी कर दिया है। साईबाबा के साथ पत्रकार प्रशांत राही, महेश तिर्की, हेम केशवदत्त मिश्रा और विजय एन. तिर्की भी अब सभी आरोपों से मुक्त कर दिए गए हैं। जबकि इसी मामले में छठे आरोपी पांडु नरोटे इस इंसाफ की राह देखते हुए अगस्त 2022 में ही इस दुनिया से चले गए। उन्हें इतनी मोहलत भी नहीं मिली कि वे आजाद हवा में अपनी आखिरी सांस ले पाते। 2017 से जेल में बंद पांडु नरोटे बीमार हो गए थे, उन्हें इलाज की पूरी सुविधा नहीं मिली और कैद में ही उन्होंने दम तोड़ दिया। वैसे ही जैसे फादर स्टेन स्वामी अपने बुढ़ापे और बीमारी के साथ कैद की यातना भुगतते हुए इस दुनिया से रुखसत हो गए। राष्ट्रीय अपराध रिपोर्ट ब्यूरो (एनसीआरबी) के अनुसार, पर्याप्त चिकित्सा उपचार की कमी के कारण हर साल करीब 2000 लोग जेल में जान गंवा देते हैं। इनमें कुछ दोषी भी होंगे, जो अपने अपराधों की सजा काट रहे होंगे, कुछ आरोपी होंगे जो इंसाफ के इंतजार में बैठे होंगे और कुछ उमर खालिद की तरह भी होंगे, जिनकी रिहाई तो दूर की बात, जमानत पर सुनवाई तक के लिए अदालत के पास वक्त नहीं है। हर कोई गुरमीत राम रहीम जैसा ताकतवर तो नहीं होता है, जो हत्या और बलात्कार का दोषी होने के बाद 4 साल की जेल में 9 बार पैरोल पर बाहर आ सके। हमारी न्याय व्यवस्था जजों की कमी से जूझते हुए शायद इतना अधिक थक गई है कि वह यही तय नहीं कर पाई है कि समाज के लिए गुरमीत राम रहीम जैसे लोग ज्यादा घातक हैं, जो आध्यात्म की आड़ में हत्या, बलात्कार जैसे गंभीर अपराध करते हैं, या फिर वो लोग जो सरकार के खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत रखते हैं, जो व्यवस्था में बदलाव के लिए क्रांतिकारी विचार रखते हैं।

2017 में गढ़चिरौली की सत्र अदालत ने साईबाबा समेत पांच लोगों को कथित माओवादी संबंधों और देश के खिलाफ युद्ध छेड़ने जैसी गतिविधियों में शामिल होने के लिए दोषी ठहराया था। सरकार ने दावा किया था कि 2013 में साईबाबा के घर से जब्त किए गए इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में से कम से कम 247 पेज 'आपराधिक' पाए गए थे, मई 2014 में प्रो.जीएन साईबाबा को गिरफ्तार किया गया, तीन साल बाद इस पर मामला चला और अदालत ने नक्सली साहित्य रखने और उसे बांटकर हिंसा फैलाने की कोशिश के आरोप में सजा सुनाई। 2022 में हाइकोर्ट ने गढ़चिरौली सत्र अदालत के उस फैसले को पलट दिया था। लेकिन तब हाई कोर्ट के फैसले के खिलाफ राज्य ने तुरंत सुप्रीम कोर्ट में अपील की थी। जिसके बाद अक्टूबर 2022 में सुप्रीम कोर्ट ने बॉम्बे हाई कोर्ट के $फैसले पर रोक लगाने से इनकार कर दिया था और मामले की दोबारा सुनवाई करने की बात कही थी। अब एक बार फिर हाईकोर्ट ने साईबाबा समेत सभी को आ?ापों से मुक्त करने का ही फैसला सुनाया है।

इस मामले में इंसाफ नजर तो आ रहा है, लेकिन उसके साथ फिर वही पुराना सवाल चस्पां है कि क्या देर से मिले इस इंसाफ को इंसाफ कहा जा सकता है। न्यायालय की लंबी प्रक्रिया में दो साल तो इसी बात में गुजर गए कि साईबाबा को आरोपों से मुक्त करने का फैसला सही था या नहीं। इसलिए 2022 में अपने पक्ष में फैसला आने पर उन्हें बाहर आने के लिए दो साल इंतजार करना पड़ा। और उससे पहले 9 साल जो जेल में गुजारे वो अलग। 54 साल के साईबाबा व्हीलचेयर से चलते हैं और 99 प्रतिशत विकलांग हैं, जिन्हें श्री मोदी के प्रभाव में अपनाई गई शब्दावली के अनुसार दिव्यांग कहा जा सकता है। देश में दिव्यांगों के लिए जीवन सामान्य तौर पर भी नारकीय पीड़ा से भरा हुआ है, ऐसे में समझा जा सकता है कि जेल में 11 साल प्रो.साईबाबा ने किन कष्टों के साथ बिताए होंगे। जेल में उनके बिगड़ते स्वास्थ्य पर उनके परिजनों ने कई बार चिंता जाहिर की, सवाल उठाए, लेकिन न अदालत को, न सरकार को इन चिंताओं के बारे में सोचनु की फुर्सत मिली। वरिष्ठ वकील इंदिरा जयसिंह ने बिल्कुल सही सवाल उठाए हैं कि 'साईबाबा बरी कर दिए गए हैं, लेकिन कितने समय बाद? उनके स्वास्थ्य को जो नुकसान हुआ उसे कौन लौटाएगा? कोर्ट? शर्म करिए। कितने और लोगों को जमानत के लिए इंतजार करना होगा? लोगों की आजादी को जिस तरह खत्म किया गया, उस नुकसान की कीमत कौन चुकाएगा?' ये गंभीर सवाल हैं, जिन पर न्यायपालिका को सोचना चाहिए। लेकिन जब न्यायपालिका में सियासत अपना असर दिखाने लगे तो क्या इन सवालों पर ईमानदारी से विचार होगा, यह एक बड़ी चिंता है। वो दौर शायद बीत गया है जब न्यायाधीश सेवानिवृत्ति के बाद ऐसे किसी भी पद को स्वीकार नहीं करते थे, जिससे उनके सेवाकाल के दौरान लिए गए फैसलों पर उंगली उठे। अब ऐसी आलोचनाओं से बेपरवाह होकर किसी राजनैतिक दल का हिस्सा बनने से भी गुरेज नहीं किया जा रहा। जस्टिस रंजन गोगोई राज्यसभा के सदस्य बन गए और अब कोलकाता हाईकोर्ट के जज के पद से इस्तीफा देकर जस्टिस अभिजीत गंगोपाध्याय ने भाजपा में शामिल होने का ऐलान कर दिया है। भाजपा के हिंदुत्व, राष्ट्रवाद, उसकी कार्यशैली, या जिस भी वजह से प्रभावित होकर जस्टिस गंगोपाध्याय ने राजनीति में जाने का फैसला लिया है, इससे यह संदेह तो उपजेगा ही कि न्यायाधीश की आसंदी पर बैठकर उन्होंने जो फैसले राज्य सरकार से जुड़े मामलों में लिए होंगे, उनमें कितनी निष्पक्षता रही होगी। इस देश के सबसे साधारण और गरीब लोगों के लिए उम्मीद का सबसे बड़ा ठिकाना अदालतें ही हुआ करती हैं, जहां वे इंसाफ के लिए पहुंचते हैं। लेकिन फैसलों पर दल विशेष की विचारधारा का प्रभाव या देर से किए गए न्याय के कारण लोकतंत्र का यह अहम स्तंभ भी दरक रहा है।

महिला सशक्तीकरण पर बेईमान रवैया

देश एक बार फिर अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के आयोजनों का साक्षी बनने के लिए तैयार हो चुका है। सरकारी, गैर-सरकारी संस्थानों में महिलाओं का सम्मान करने के लिए कार्यक्रम किए होंगे। पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित होंगे, जिनमें भारत में स्त्रियों को देवी का दर्जा दिए जाने की महान परंपरा की बातें होंगी। 21वीं सदी में देश में सेना, विज्ञान, शिक्षा, खेल-कूद, कारोबार, कला-संस्कृति हर क्षेत्र में महिलाओं ने कितनी उन्नति की है, इसके उदाहरण पेश किए जाएंगे। महिला राष्ट्रपति से लेकर विभिन्न किस्म के उच्च पदों पर बैठी महिलाओं की जीवनगाथाएं प्रस्तुत होंगी। हर साल यही सब होता आया है और आगे भी होता रहेगा। स्त्री शक्ति को रेखांकित करते ऐसे आयोजनों में पीड़ित, शोषित और वंचित महिलाओं की बातें बड़े सुविधाजनक तरीके से किनारे कर दी जाती हैं। मौजूदा सरकार का भी यही तरीका है। अब 2014 वाला दौर नहीं रहा, जब निर्भया कांड के बाद सरकार के खिलाफ आक्रोश प्रकट करने के लिए जनता अगर सड़कों पर उतर आई तो तत्कालीन सरकार ने ऐसा करने से जनता को नहीं रोका, न ही इस मामले को दबाने की कोशिश की या इस जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ा कि उनके कार्यकाल में एक जघन्य अपराध घटित हुआ है। बल्कि तब कांग्रेस सरकार ने निर्भया के इलाज की पूरी जिम्मेदारी उठाई, पीड़िता की मौत के बाद उसके परिवार को राहुल गांधी ने सहारा दिया, उनके भाई को पायलट बनाने में मदद की, लेकिन कभी इस का कोई प्रचार नहीं किया। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस बरसों-बरस मनाने और लैंगिक समानता का ढोल पीटने के बावजूद यह एक कड़वी हकीकत है कि महिलाओं के लिए बराबरी और सम्मान की सोच समाज में अब तक व्याप्त नहीं हो पाई है। किस्म-किस्म के भेदभाव और अत्याचार महिलाओं पर होते रहे हैं और इसके लिए किसी सरकार को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता, क्योंकि इसका व्यापक संबंध समाज की मानसिकता से जुड़ा है। सरकारें अपने फैसलों और नीतियों से इस मानसिकता को सुधारने का काम अवश्य कर सकती हैं, साथ ही महिला सशक्तिकरण जैसे विस्तृत विषय को राजनीति से दूर रख सकती हैं। खेद है कि मौजूदा केंद्र सरकार में ऐसा नहीं हो रहा है। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ जैसे एकाध नारे और दो-चार योजनाओं के साथ प्रधानमंत्री नारी सशक्तीकरण का श्रेय लेना चाहते हैं। नये संसद भवन में महिला आरक्षण पर विधेयक पारित करवा कर उन्होंने इतिहास रचने का दावा भी किया, हालांकि उनके दावों की हकीकत कई बार जनता देख चुकी है। महिला सुरक्षा और सम्मान को लेकर उनका दुचित्तापन भी अब सामने आ चुका है। बुधवार को प्रधानमंत्री मोदी प.बंगाल में थे, जहां हाल ही में उत्तरी 24 परगना जिले के संदेशखाली में महिलाओं के साथ यौन उत्पीड़न का आरोप तृणमूल कांग्रेस नेता शाहजहां शेख पर लगा है। शाहजहां शेख फिलहाल कानून की गिरफ्त में है। प.बंगाल में भाजपा इस बार लोकसभा चुनाव में तृणमूल कांग्रेस से आगे निकलना चाहती है। लिहाजा प्रधानमंत्री ने उत्तरी 24 परगना जिले के बारासात में भाजपा की नारी शक्ति अभिनंदन रैली की और इसमें कहा कि संदेशखाली में जो कुछ भी हुआ, उससे किसी का भी सिर शर्म से झुक जाएगा। लेकिन टीएमसी सरकार अपराधी को बचाने पर तुली हुई है। इसके बाद उन्होंने बताया कि उनके दस साल के शासनकाल में महिलाएं कितनी मजबूत हुई हैं। श्री मोदी ने संदेशखाली की पीड़ित महिलाओं से मुलाकात भी की। गनीमत है कि संदेशखाली की पीड़िताओं की व्यथा सुनने का वक्त प्रधानमंत्री को मिला। अन्यथा हाथरस, कठुआ, उन्नाव की पीड़िताएं अपने दर्द और अन्याय को भुगतते हुए चली गईं।

महिला सशक्तीकरण पर बेईमान रवैया

देश एक बार फिर अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के आयोजनों का साक्षी बनने के लिए तैयार हो चुका है। सरकारी, गैर-सरकारी संस्थानों में महिलाओं का सम्मान करने के लिए कार्यक्रम किए होंगे। पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित होंगे, जिनमें भारत में स्त्रियों को देवी का दर्जा दिए जाने की महान परंपरा की बातें होंगी। 21वीं सदी में देश में सेना, विज्ञान, शिक्षा, खेल-कूद, कारोबार, कला-संस्कृति हर क्षेत्र में महिलाओं ने कितनी उन्नति की है, इसके उदाहरण पेश किए जाएंगे। महिला राष्ट्रपति से लेकर विभिन्न किस्म के उच्च पदों पर बैठी महिलाओं की जीवनगाथाएं प्रस्तुत होंगी। हर साल यही सब होता आया है और आगे भी होता रहेगा। स्त्री शक्ति को रेखांकित करते ऐसे आयोजनों में पीड़ित, शोषित और वंचित महिलाओं की बातें बड़े सुविधाजनक तरीके से किनारे कर दी जाती हैं। मौजूदा सरकार का भी यही तरीका है। अब 2014 वाला दौर नहीं रहा, जब निर्भया कांड के बाद सरकार के खिलाफ आक्रोश प्रकट करने के लिए जनता अगर सड़कों पर उतर आई तो तत्कालीन सरकार ने ऐसा करने से जनता को नहीं रोका, न ही इस मामले को दबाने की कोशिश की या इस जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ा कि उनके कार्यकाल में एक जघन्य अपराध घटित हुआ है। बल्कि तब कांग्रेस सरकार ने निर्भया के इलाज की पूरी जिम्मेदारी उठाई, पीड़िता की मौत के बाद उसके परिवार को राहुल गांधी ने सहारा दिया, उनके भाई को पायलट बनाने में मदद की, लेकिन कभी इस का कोई प्रचार नहीं किया। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस बरसों-बरस मनाने और लैंगिक समानता का ढोल पीटने के बावजूद यह एक कड़वी हकीकत है कि महिलाओं के लिए बराबरी और सम्मान की सोच समाज में अब तक व्याप्त नहीं हो पाई है। किस्म-किस्म के भेदभाव और अत्याचार महिलाओं पर होते रहे हैं और इसके लिए किसी सरकार को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता, क्योंकि इसका व्यापक संबंध समाज की मानसिकता से जुड़ा है। सरकारें अपने फैसलों और नीतियों से इस मानसिकता को सुधारने का काम अवश्य कर सकती हैं, साथ ही महिला सशक्तिकरण जैसे विस्तृत विषय को राजनीति से दूर रख सकती हैं। खेद है कि मौजूदा केंद्र सरकार में ऐसा नहीं हो रहा है। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ जैसे एकाध नारे और दो-चार योजनाओं के साथ प्रधानमंत्री नारी सशक्तीकरण का श्रेय लेना चाहते हैं। नये संसद भवन में महिला आरक्षण पर विधेयक पारित करवा कर उन्होंने इतिहास रचने का दावा भी किया, हालांकि उनके दावों की हकीकत कई बार जनता देख चुकी है। महिला सुरक्षा और सम्मान को लेकर उनका दुचित्तापन भी अब सामने आ चुका है। बुधवार को प्रधानमंत्री मोदी प.बंगाल में थे, जहां हाल ही में उत्तरी 24 परगना जिले के संदेशखाली में महिलाओं के साथ यौन उत्पीड़न का आरोप तृणमूल कांग्रेस नेता शाहजहां शेख पर लगा है। शाहजहां शेख फिलहाल कानून की गिरफ्त में है। प.बंगाल में भाजपा इस बार लोकसभा चुनाव में तृणमूल कांग्रेस से आगे निकलना चाहती है। लिहाजा प्रधानमंत्री ने उत्तरी 24 परगना जिले के बारासात में भाजपा की नारी शक्ति अभिनंदन रैली की और इसमें कहा कि संदेशखाली में जो कुछ भी हुआ, उससे किसी का भी सिर शर्म से झुक जाएगा। लेकिन टीएमसी सरकार अपराधी को बचाने पर तुली हुई है। इसके बाद उन्होंने बताया कि उनके दस साल के शासनकाल में महिलाएं कितनी मजबूत हुई हैं। श्री मोदी ने संदेशखाली की पीड़ित महिलाओं से मुलाकात भी की। गनीमत है कि संदेशखाली की पीड़िताओं की व्यथा सुनने का वक्त प्रधानमंत्री को मिला। अन्यथा हाथरस, कठुआ, उन्नाव की पीड़िताएं अपने दर्द और अन्याय को भुगतते हुए चली गईं। मणिपुर की महिलाओं के दर्द का जिक्र तो प्रधानमंत्री करना ही नहीं चाहते।

15 करोड की लागत से विधायक अनिल प्रधान ने विभिन्न कार्यों का किया लोकार्पण

अनिल प्रधान के कार्य-बर्ताव से जनता खुश

अखंड भारत संदेश

लोकार्पण करते विधायक अनिल प्रधान।

चित्रकूट। सपा के सदर विधायक अनिल प्रधान के कर कमलों से विधानसभा चित्रकूट 236 में बुन्दलेखण्ड विकास निधि, विधायक निधि व राज्य कृषि उत्पादन मण्डी समिति से कराये कार्यों तकरीबन 15 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का शिलान्यास/लोकार्पण हुआ।

शनिवार को सदर विधायक अनिल प्रधान ने बुन्देलखण्ड विकास निधि से 7.50 करोड़ जीएसटी समेत कार्य बालापुर खालसा फूल सिंह के बैठका से सलीम अख्तर के घर तक नाली निर्माण व पाटन कार्य, भरथौल में बन कोठी में रपटा निर्माण, सिकरी खोपा में तालाब से प्राथमिक विद्यालय सिकरी तक इंटरलाकिंग रोड, सेमरिया जगन्नाथवासी के गजिया नाला में रपटा निर्माण, सरधुवा में गया प्रसाद सविता के घर से चुन्ना सोनकर के घर तक सीसी रोड, मुकुन्दपुर में भरतकूप-घुरेटनपुर संपर्क मार्ग से पूर्व माध्यमिक विद्यालय मुकुन्दपुर तक इंटरलाकिंग, पथरामानी मजरा पिपरोदर में ललक के घर से नरपत सिंह के घर की ओर दीवाल निर्माण, रानीपुर खाकी में यादव के घर से सडक पर नाला, शिवरामपुर कपाडिया मोहल्ला में रामनरेश के घर से राजकरन आरख के घर तक इंटरलाकिंग खडंजा निर्माण, विधायक निधि से 2.50 करोड़ जीएसटी समेत हाईमास्ट स्ट्रीट लाइट आरएस पब्लिक स्कूल कौहारी में शिक्षण कक्ष निर्माण को 9.95 लाख रूपये, स्व यदुराज सिंह शिक्षा निकेतन रामपुर ब्लाक पहाडी में विद्यालय में शिक्षण कक्ष निर्माण को 9.95 लाख रूपये, वीर एकलव्य पूर्व माध्यमिक विद्यालय सुखौरा ब्लाक पहाड़ी में विद्यालय शिक्षण कक्ष, जीना, बरामदा समेत 9.95 लाख रूपये, एनएचएल पब्लिक स्कूल बारामाफी में शिक्षण कक्ष निर्माण को 9.95 लाख रूपये, रमाशंकर द्विवेदी इण्टर कालेज सगवारा में शिक्षण कक्ष निर्माण को पांच लाख रूपये, स्व रामलाल पूर्व माध्यमिक विद्यालय उसरी पुरवा मजरा मकरी पहरा में शिक्षण कक्ष निर्माण को 9.95 लाख रूपये, पडरी दलित बस्ती में बारात घर निर्माण को 9.95 लाख रूपये, बंदरी मजरा लोखरिया में खम्हरिया मेन रोड़ से जयपाल वेः पुरवा तक इंटरलाकिंग 9.95 लाख रूपये, भगनपुर मजरा ठर्री में प्राथमिक विद्यालय ठर्री वेः बगल में इंटरलाकिंग को 9.95 लाख रूपये, रानीपुरखाकी में पाडन पुरवा सम्पर्क मार्ग से ठाकुरदीन कुशवाहा के घर तक इंटरलाकिंग को 9.95 लाख रूपये, देवकली ब्लाक मानिकपुर में चुनकावन के घर से लाला की चक्की तक इंटरलाकिंग को 9.95 लाख रूपये, पैकौरामाफी ब्लाक मानिकपुर में कमलेश पटेल के शंकर जी मंदिर से रामकल्याण रैदास के घर तक इंटरलाकिंग को 9.95 लाख रूपये, पतौड़ा में रमापति यादव के घर से इन्द्रपाल यादव के घर तक इंटरलाकिंग को 9.95 लाख रूपये, अशोह में पुलिया निर्माण को पांच लाख रूपये, रसिन में इंटरलाकिंग को 9.95 लाख रूपये, कृषि उत्पादन मंडी समिति से 47.98 लाख रूपये जीएसटी समेत छपरामाफी मजरा लुढहा राजाभैया के घर से मैनहाईमाफी भैरमबाबा तक सम्पर्क मार्ग निर्माण शिलान्यास समेत कार्यों का विधायक अनिल प्रधान के कर कमलों से लोकार्पण हुआ।

पीएम-सीएम आज करेंगे देवांगना एयरपोर्ट का वर्चुअल लोकार्पण

डीएम ने भ्रमण कर अवशेष कार्यों को पूरा करने के दिये निर्देश

एयरपोर्ट का निरीक्षण करते डीएम-एसपी।

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। देवांगना एयरपोर्ट का दस मार्च को वर्चुअल लोकार्पण प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री के करने के मद्देनजर जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द व पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह ने भ्रमण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

शनिवार को डीएम-एसपी ने परियोजना प्रबंधक राजकीय निर्माण निगम को निर्देश दिये कि मंच पंडाल एलईडी आदि अवशेष कार्य तत्काल पूर्ण करायें। बैकड्राप लगाकर ट्रायल कर फोटोग्राफ भेजे। एयरपोर्ट के मुख्य गेटों व टर्मिनल बिल्डिंग की अच्छे ढंग से सजावट करायें। सीडीओ से कहा कि कार्यक्रम का मिनट-टू-मिनट प्लान बतायें। ईओ नगर पालिका को निर्देश दिए कि सड़कों टर्मिनल बिल्डिंग व एयरपोर्ट की अच्छे ढंग से साफ-सफाई करायें। दो मोबाइल शौचालय की व्यवस्था कर कर्मचारियों की ड्यूटी लगायें। एक्सईएन जल संस्थान को निर्देश दिए कि टैंकर की व्यवस्था कर पेयजल सुलभ करायें। एयरपोर्ट निरीक्षण में सीडीओ श्रीमती अमृतपाल कौर, एडीएम एफआर उमेश चंद्र निगम, एसडीएम सदर सौरभ यादव, सीओ सिटी हर्ष पांडेय, डीसी मनरेगा धर्मजीत सिंह, डीडीओ आरके त्रिपाठी, एक्सईएन विद्युत दीपक सिंह, जल संस्थान डीके सत्संगी, एयरपोर्ट डायरेक्टर विनय गंगले, प्रोजेक्ट मैनेजर राजेश कुमार, जेजेएम एसपी लाल, ईओ लालजी यादव आदि मौजूद रहे।

देश बने आत्मनिर्भरः डॉ राजीव कुमार

अखंड भारत संदेश

स्वदेशी जागरण मंच के लोग।

चित्रकूट। स्वदेशी जागरण मंच स्वावलंबी भारत अभियान की प्रांतीय परिषद की बैठक रामघाट बड़े मठ में बतौर मुख्य अतिथि अखिल भारतीय विचार विभाग के प्रमुख/ स्वदेशी जागरण मंच के राष्ट्रीय सह संयोजक डॉ राजीव कुमार की अध्यक्षता व वरिष्ठ अतिथि बतौर पूर्वी उत्तर प्रदेश समन्वयक अनुपम श्रीवास्तव, विशिष्ट अतिथि बतौर कानपुर बुंदेलखंड प्रांत संयोजक प्रवीण मिश्रा, कानपुर बुंदेलखंड प्रांत संपर्क प्रमुख/राष्ट्रीय परिषद सदस्य वरुण प्रपन्नाचार्य महाराज की मौजूदगी में हुई।

शनिवार को बैठक का संचालन प्रांतीय परिषद सदस्य/जिला संयोजक राजेश कुमार पाण्डेय उर्फ राजू ने किया। प्रांतीय परिषद बैठक में दायित्व वान कार्यकर्ता जिला समन्वयक शशिकांत पांडे, सह समन्वयक प्रदीप तिवारी, महिला समन्वयक दिव्या त्रिपाठी, महिला सह समन्वयक राखी चैबे, नगर संयोजक/जिला सोशल मीडिया प्रभारी राजेश पटेल, बांदा जिला प्रभारी रिजवाना परवीन, रमेश कुमार, हमीरपुर से सत्येंद्र सिंह, महोबा से आदर्श चक्रवर्ती, धर्मेंद्र दीक्षित, झांसी से सुदीप खरे, फर्रुखाबाद से प्रदीप मिश्रा सहसंयोजक कानपुर बुंदेलखंड प्रांत व बृजेंद्र शुक्ला, अनिल अग्रवाल, शिवम पाण्डेय, शुभम केशरवानी, अजय पाण्डेय मौजूद रहे। राष्ट्र को स्वावलंबन व स्वावलंबी बनाने की दिशा में जोर दिया, देश आत्मनिर्भर हो। भारत अभियान का यही उद्देश्य है।

सांसद-विधायक ने किसानों को बांटे चेक

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। मानिकपुर तहसील सभागार में शनिवार को मुख्यमंत्री आपदा राहत कोष से ओला से फसलों की हुई क्षतिपूर्ति को लेकर सांसद आरके सिंह पटेल, विधायक अविनाशचन्द्र द्विवेदी, एसडीएम पंकज वर्मा ने किसानों को डमी चेक देकर सीधे किसानों के खाते मे भेजा। विधायक-सांसद ने राजस्व विभाग के कर्मचारियों को निर्देश दिये कि जल्द ओला प्रभावित क्षेत्रों की आख्या बनाकर किसानों को राहत देने के कार्य मे तेजी से किये जायें। इस मौके पर शक्ति प्रताप सिंह तोमर, राजकुमार त्रिपाठी, रवि त्रिपाठी, आशीष कोल, आनन्द द्विवेदी, कमलेश द्विवेदी, अभिलाष सिंह आदि मौजूद रहे।

एसपी के निर्देश पर चार पर मिनी गुण्डा एक्ट

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर अपराधियों पर अंकुश लगाने को प्रभारी निरीक्षक मानिकपुर श्रीमती रीता सिंह ने भोली-भाली जनता में भय-आतंक फैलाकर गुंडागर्दी करने वाले शिवनारायण उर्फ रज्जू पुत्र गौरीशंकर, जयप्रकाश उर्फ प्रधान पुत्र गौरीशंकर निवासी पतेरिया, चन्द्रशेखर सिंह पुत्र भयंकर व अरुण सिंह उर्फ मिंटू सिंह पुत्र संतोष सिंह निवासी गढ़चपा के खिलाफ 110जी सीआरपीसी के तहत कार्यवाही की है।

लोक अदालत में निपटे 1438 मामले

अखंड भारत संदेश

लोक अदालत का शुभारम्भ करते जिला जज आदि।

चित्रकूट। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण/उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण ने राष्ट्रीय लोक अदालत जनपद न्यायाधीश/जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अध्यक्ष विकास कुमार प्रथम की अध्यक्षता में हुई।

प्रधान न्यायाधीश राकेश कुमार यादव, परिवार न्यायालय, पीठासीन अधिकारी कृष्ण यादव, विशेष न्यायाधीश दीप नारायण तिवारी, विशेष न्यायाधीश पाक्सो विनीत नारायण पाण्डेय, अपर जिला न्यायाधीश नीरज श्रीवास्तव, अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश/त्वरित न्यायालय संजय कुमार, अपर जिला जज/प्रभारी सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सुशील कुमार वर्मा, सिविल जज (सीडि) श्रीमती विदुषी मेहा, सिविल जज (सीडि)/एफटीसी सुश्री सोनम गुप्ता, सिविल जज (जूडि) राजेन्द्र कुमार भारती, न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रीमती सैफाली यादव, न्यायिक मजिस्ट्रेट सुश्री अंजलिका प्रियदर्शिनी द्वितीय, सिविल जज (जूडि)/जेएम सुश्री वसुन्धरा शर्मा, न्यायाधिकारी ग्राम न्यायालय मानिकपुर सुश्री खुशबू चन्द्रा, डिप्टी जोनल मैनेजर इण्डियन बैंक प्रयागराज दयाशंकर, अग्रणी जिला प्रबन्धक तुलसीराम आदि बैंकों के प्रबन्धकों की मौजूदगी में लोक अदालत में चार प्रकीर्ण फौजदारी मामलों का निस्तारण विकास कुमार प्रथम ने किया। न्यायिक अधिकारियों ने 1438 मामलों का निस्तारण कर 14524231 रूपये, राजस्व व अन्य विभागों ने 42683 मामलों का निस्तारण कर 37982602 रूपये प्रतिकर बतौर वसूले।

हिन्दू राष्ट्र के नाम पर मनुस्मृति लागू करने की हो रही साजिशः का पूनम

अखंड भारत संदेश

गांव में फेरी लगाती महिलायें।

चित्रकूट। जनवादी महिला समिति जिलाध्यक्ष का पूनम ने महिला समिति की महिला सदस्यों से कहा कि नफरत के बीज बोकर आपसी भाईचारे को नष्ट-भ्रष्ट किया जा रहा है। हिंदू राष्ट्र के नाम पर मनुस्मृति लागू करने की साजिश रची जा रही है। इस माहौल में सबसे ज्यादा हिंसा की शिकार महिलायें हो रही है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर जनवादी महिला समिति की जिलाध्यक्ष का पूनम ने कहा कि महिला सफाई कर्मी को प्रधान पति ने प्रताड़ित किया, बड़े संघर्ष से रिपोर्ट लिखी गई। आरोपी खुलेआम घूम रहे हैं। पीड़िता सफाई कर्मी को धमकी दे रहे हैं। सरकार मिशन शक्ति जोर-शोर से चला रही है। महिलाओं पर हो रहे जुल्म पर मौन है। ऐसे में महिलाओं को खुद आगे आकर होने वाले उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठानी होगी।

का पूनम ने महिलाओं का आवाहन किया कि जनवादी महिला समिति की सदस्य बने। संगठित होकर महिला हिंसा के खिलाफ आवाज उठायें। बक्टा गांव में महिलाओं को जागरूक करने को फेरी निकाली।

इस मौके पर लालमनी, रानी, काजल, अभिलाषा, दीपा, मैना देवी, हीरामनी, सुनैना, शिवकली, मैकी, छोटकी, सुमित्रा आदि महिलाओं ने हिस्सा लिया।

देश में कहां है आधी आबादीः सरिता

अखंड भारत संदेश

सरिता यादव।

चित्रकूट। समाजवादी पार्टी की नेत्री श्रीमती सरिता यादव ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस धूमधाम से मनाया जा रहा है। कानपुर में दो बच्चियों का नहाते समय वीडियो बनाकर ठेकेदार ने उत्पीडन किया। तंग आकर बच्चियों ने आत्महत्या कर ली। बच्चियों के पिता ने भी दो दिन बाद आत्महत्या कर ली। ऐसे में सवाल उठता है कि आधी आबादी देश में कहां है। आधी आबादी को कब न्याय मिलेगा। प्रधानमंत्री एक ओर संसद में महिलाओं के आरक्षण को बिल लाते हैं, दूसरी ओर महिलाओं का देश-प्रदेश में उत्पीडन हो रहा है। कोई ध्यान नहीं दे रहा है।

आचार्य दीक्षित का छलका दर्दः रामायण मेला में नहीं जुटती भीड

अखंड भारत संदेश

आचार्य नवलेश दीक्षित।

चित्रकूट। राष्ट्रीय रामायण मेला के 51वें समारोह के दूसरे दिन तमाम मानस मर्मज्ञों को सुनने को लोगों की पहले जैसी भीड न उमडने पर भागवत कथा व्यास नवलेश दीक्षित का दर्द छलक उठा। उन्होंने कहा कि अब लोगों का रामायण व राम के प्रति वह रुझान नहीं रहा, जो कभी पहले रहता था। शनिवार को रामायण मेला के मंच से कथा व्यास नवलेश दीक्षित का दर्द छलका। उन्होंने कहा कि अब लोगों में राम व रामायण को सुनने की ललक नहीं रही। अब ज्यादातर लोग घरों में मोबाइल में सबकुछ सुन व देख लेते हैं। बदलते दौर में रामायण मेला में लोगों की भीड न जुटने के पीछे के कारणों का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि बदलते दौर में अब लोगों की राम व रामायण में रुचि जो भी है, वह मोबाइल तक सीमित है। अब लोग रामायण मेला परिसर तक आने की जरूरत नहीं समझते। उनका दर्द वाजिब कहा जायेगा। अब आयोजकों को भी नये सिरे से सोंचना होगा कि रामायण मेला का स्वरुप बदला जाये। ऐसा न करने पर रामायण मेला का औचित्य खत्म हो जायेगा।

संजय राणा बने प्रेस एसोसिएशन के अध्यक्ष

अखंड भारत संदेश

जिलाध्यक्ष संजय राणा।

चित्रकूट। पत्रकार प्रेस एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष संजय सिंह राणा को बनाया गया। उन्होंने कहा कि पूरे जिले में पत्रकारों की नई टीम गठित करना है। जो पत्रकार साथी संगठन के पदाधिकारी/सदस्य बनना चाहें वे टीम का हिस्सा बन सकते हैं। वे अपना नाम, पता, मोबाइल नंबर, आधारकार्ड व पत्रकारिता का आईकार्ड भेजकर सदस्यता ले सकते हैं। शनिवार को नवनियुक्त जिलाध्यक्ष संजय सिंह राणा ने कहा कि आगामी लोकसभा चुनाव में जिले के हर गांव, गली, मोहल्ले की खबर पेश करना है। शासन-प्रशासन का चुनाव में सहयोग करना है। सभी राजनैतिक दलों के प्रत्याशियों से जुड़ी गतिविधियों को शासन-प्रशासन समेत आम जनता तक पहुंचाना है। जो भी पत्रकार साथी अभियान से जुड़ना चाहें संपर्क कर सकते हैं।

जीवन के हर पहलू में विज्ञान के चमत्कारः एनपी सिंह

रामनगर में विज्ञान क्विज प्रतियोगिता संपन्न

अखंड भारत संदेश

छात्रों को पुरस्कार देते खंड शिक्षाधिकारी।

चित्रकूट। जूनियर हाईस्कूल में अध्यनरत कक्षा 6 से 8 तक के छात्र-छात्राओं में विज्ञान के प्रति रुचि विकसित करने की गरज से राष्ट्रीय अविष्कार के तहत ब्लॉक स्तरीय क्विज प्रतियोगिता में रामनगर ब्लॉक महात्मा ज्योतिबा राव फुले इंटर कॉलेज परिसर में खंड शिक्षा अधिकारी एनपी सिंह की अगुवाई में हुई।

शनिवार को प्रतियोगिता में प्रत्येक उच्च प्राथमिक विद्यालय व कम्पोजिट विद्यालय से 6-6 छात्र-छात्राओं कुल 305 बच्चों ने हिस्सा लिया। बच्चों की क्विज प्रतियोगिता तीन चरणों में हुई, पहले चरण में बीस बहुविकल्पीय प्रश्न दिये गये। दूसरे चरण में बच्चों को दस बहुविकल्पीय व पांच अति लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये। तीसरे चरण में प्रतियोगिता में पांच अंको का साक्षात्कार हुआ। तीनों चरणों में प्राप्त अंकों के योग पर सर्वोच्च अंक पाने वाले सौ छात्र-छात्राओं को एक्सपोजर विजिट को चयनित किया। सर्वश्रेष्ठ बीस छात्र-छात्राओं को जिला स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी में हिस्सा लेने को चयनित किया। सभी प्रतिभागी छात्र-छात्राओं को पचास अंकों में मूल्यांकन किया। प्रतिभागी छात्र-छात्राओं को प्रमाण पत्र, स्टेशनरी किट बांटे। उत्कृष्ट प्रदर्शन बीस छात्राओं को विजेता बतौर प्रशस्ति पत्र, मोमेंटो व नकद पुरस्कार से सम्मानित किया। प्रथम स्थान पाने वाले छात्र को 1368 रुपये, द्वितीय छात्र को एक हजार रुपये, तृतीय छात्र को आठ सौ रुपये व 17 छात्र-छात्राओं को तीन सौ रुपये प्रति छात्र खंड शिक्षा अधिकारी एनपी सिंह ने बांटे। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान उच्च प्राथमिक विद्यालय चैराहा बिनौरा, द्वितीय स्थान उच्च प्राथमिक विद्यालय पिपरौंद, तृतीय स्थान उच्च प्राथमिक विद्यालय सिरावल माफी के छात्र को मिला। विद्यालयों के कई छात्रों ने प्रथम 20 में स्थान बनाया। खंड शिक्षा अधिकारी ने छात्र-छात्राओं को विज्ञान व गणित में रुचि पूर्ण शिक्षण को प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में साकेत बिहारी शुक्ला, शिवभूषण त्रिपाठी, अजीत प्रताप सिंह, राधेश्याम वर्मा, राम भरोसा यादव, सुशील कुमार राणा, राकेश कुमार पांडे, दयाशंकर वर्मा ने योगदान दिया।

चालक को बंधक बना तीन लोगों ने लूटा ट्रक

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। राजापुर थाना क्षेत्र से ट्रक ड्राइवर को बंधक बनाकर सडक किनारे फेंककर बदमाश 14 चका ट्रक लेकर फरार हो गये। राहगीरों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। ये घटना राजापुर थाना क्षेत्र के चोरहा पुल के पास हुई। बताया गया कि सौरभ केशरवानी पुत्र राकेशचन्द्र केशरवानी निवासी मुट्ठीगंज प्रयागराज ने थाने में सूचना दी कि उसकी ट्रांसपोर्ट आर्य फ्रंट कैरियर के नाम से सतना में है। 25 ट्रक चलते हैं। जिनमें उसके भाई शुभम केशरवानी ट्रक एमपी 19एचए-8799 है। चालक दिनेश यादव पुत्र अशर्फीलाल निवासी चकिया सोरांव थाना कोखराज जिला कौशाम्बी है। नौ मार्च को रात एक बजे ट्रक चालक दिनेश यादव खाली ट्रक लेकर हिनौता से सतना जा रहा था। राजापुर से आगे बोडीपोखरी रोड पर चैराहे से छह किमी पहले रात डेढ बजे पीछे से सफेद रंग की कार आई और ट्रक को ओवरटेक कर जबरन रुकवा लिया। कार में तीन अज्ञात लोग सवार थे। आते ही ट्रक में चढ गये। चालक को दबोचकर चालक सीट से हटाकर खुद ट्रक चलाने लगे।

बसपा के खुद के दम से चुनाव के ऐलान से भाजपा का रास्ता साफ

बसपा प्रत्याशी के कद्दावर होने से चुनाव में आयेगी रोचकता

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। बसपा मुखिया मायावती के लोकसभा चुनाव में अपने दम पर लडने के ऐलान से गठबंधन की हवा खिसक गई है। बसपा मुखिया ने आज ट्वीटर पर ऐलान किया कि बसपा अपने बूते लोकसभा का चुनाव प्रदेश में लडेगी। इससे अब भाजपा के ज्यादातर सीटों में जीतने के आसार बन गये हैं।

लोकसभा चुनाव की रणभेरी बज चुकी है। बांदा-चित्रकूट संसदीय क्षेत्र से सपा व भाजपा के प्रत्याशी घोषित हो चुके हैं। सपा से शिवशंकर सिंह पटेल व भाजपा से मौजूदा सांसद आरके सिंह पटेल प्रत्याशी हैं। ऐसे में अब बसपा से प्रत्याशी आना शेष है। बसपा से कोई कद्दावर ब्राम्हण प्रत्याशी आने से लोकसभा चुनाव खासा रोमांचक होने के आसार हैं। जिस तरह से लोकसभा क्षेत्र में ब्राम्हण समुदाय मौजूदा भाजपा प्रत्याशी का विरोध जता रहे हैं, ये विरोध स्थायी रहा तो बसपा प्रत्याशी खासी टक्कर देने की स्थिति में होगा।

वैसे ज्यादातर राजनीति के जानकारों का मानना है कि बसपा मुखिया मायावती के अपने बूते प्रदेश में लोकसभा चुनाव लडने के ऐलान के पीछे भाजपा की ही रणनीति है। ऐसे में ज्यादातर भाजपा प्रत्याशियों के जीतने का रास्ता मायावती ने साफ कर दिया है। फिलहाल बसपा बांदा-चित्रकूट से किसे प्रत्याशी घोषित करती है- ये तो समय के गर्भ में है। बसपा का प्रत्याशी सामने आने पर ही चुनावी रणनीति का खुलासा हो सकेगा कि कौन किस पर कितना भारी पडेगा। पिछली बार 2019 में सपा-बसपा के एक साथ मिलकर चुनाव लडने के बाद भी भाजपा प्रत्याशी को जीत मिली थी। ऐसे में इस बार सपा व बसपा के अलग-अलग लडने से भाजपा की जीत और पक्की मानी जा रही है। ये अलग बात है कि बसपा ने किसी कद्दावर ब्राम्हण को टिकट दे दिया तो लोकसभा चुनाव में खासी रोचकता व रंगत देखने को मिलेगी। ब्राम्हणों को भी अपनी एकता व एकजुटता का एहसास हो जायेगा- कि वे कितने पानी में हैं, क्योंकि बसपा का मूल मतदाता तो पहले ही मोदी लहर में बह चुका है। रही-सही कसर हर माह मिलने वाले अनाज ने पूरी कर दी है। अयोध्या में राम मन्दिर का मुद्दा भी गर्म है। जितना अनुसूचित जाति के लोग धर्म-कर्म व अंधविश्वास में डूबे हैं, उतना अन्य जाति के लोग नहीं हैं। इसका भी लोकसभा चुनाव में खासा असर देखने को मिलेगा।

2019 में सपा-बसपा एक साथ लडकर भी भाजपा को नहीं कर सकी परास्त

मैक्सिको की सीमा पर अमेरिका का नेशनल गार्ड हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त, दो की मौत

वॉशिंगटन

टेक्सास में अमेरिका-मैक्सिको की सीमा के पास नेशनल गार्ड हेलीकॉप्टर के दुर्टनाग्रस्त होने से उसमें मौजूद कम से कम दो लोगों की मौत हो गई। हेलीकॉप्टर में एक नेशनल गाड्र्समैन और तीन बॉर्डर पैट्रोल एजेंट मौजूद थे। स्थानीय मीडिया के अनुसार, यह हादसा सा ग्रुला में हुआ।

मैक्सिकन कार्टेल के सदस्यों ने ड्रोन से देखा हादसा

टेक्सास के नागरिक सुरक्षा विभाग के दक्षिण क्षेत्र के निदेशक विक्टर एस्केलॉन ने बताया कि बॉर्डर पेट्रोल के साथ काम करने वाले सैन्य हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हुआ है। टेकसास नागरिक सुरक्षा विभाग ने हेलीकॉप्टर के ऑपरेशन लोन स्टार में शामिल नहीं होने की पुष्टि की है। बॉर्डर पेट्रोल के सूत्रों ने बताया कि हादसे के दौरान मैक्सिकन कार्टेल के सदस्यों ड्रोन की सहायता से हेलीकॉप्टर को क्रैश होते हुए देखा। सोशल मीडिया पर वायरल एक क्लिप में उन्हें अपने कैमरे को जूम करने के बाद हंसते हुए देखा गया। इसी साल 27 फरवरी को नेशनल गार्ड ने अपने एक बयान में बताया कि उनके लेफ्टिनेंट जनरल जॉन ए. जेनसेन ने हाल ही में दो हेलीकॉप्टर दुर्घटनाओं के बाद सुरक्षा नीतियों और प्रक्रियाओं की समीक्षा करने के लिए सभी सभी नेशनल गार्ड हेलीकॉप्टर इकाइयों की विमानन सुरक्षा को रोकने का आदेश दिया है। इससे पहले 23 फरवर को मिसिसिपी में एक प्रशिक्षण मिशन के दौरान एक सन्य हेलीकॉप्टर जंगली इलाके में दुर्घटनाग्रस्त हो गया गया था। इस हादसे में दो सैनिकों की मौत हो गई थी। यूटा में प्रशिक्षण के दौरान ही हेलीकॉप्टर दुर्घटाग्रस्त होने से दो पायलट घायल हो गए थे।

यात्री ने गुड-लक के लिए हवाई जहाज के इंजन में फेंका सिक्का, चार घंटे के लिए रोकनी पड़ी उड़ान

बीजिंग

सान्या से बीजिंग के लिए चाइना सदर्न एयरलाइंस की उड़ान छह मार्च को यात्रियों के लिए निराशाजनक साबित हुई। दरअसल, चाइना सदर्न एयरलाइंस सुबह के 10 बजे उड़ान भरने वाला था, लेकिन एक असामान्य घटना के कारण यात्रियों को चार घंटे तक इंतजार करना पड़ा। एक यात्री ने हवाई जहाज के इंजन में ही सिक्का फेंक दिया था।

हवाई जहाज के इंजन में यात्री ने फेंका सिक्का

चीनी मीडिया के अनुसार, लंबे इंतजार के बाद देरी की वजह सामने आई। इस घटना से जुड़े एक वीडियो के अनुसार, हवाई जहाज के इंजन में सिक्का फेंकने वाले यात्री से फ्लाइट अटेंडेंट को पूछताछ करते हुए देखा गया। यात्री की इस अंधविश्वास के कारण अन्य लोगों को असुविधा का सामना करना पड़ा। स्थानीय समयानुसार फ्लाइट दोपहर के 2:16 बजे तक रवाना नहीं हो पाई। हालांकि, जांच के दौरान सुरक्षाकर्मियों ने सिक्का ढूंढ निकाला। उन्होंने सिक्कों की संख्या का खुलासा नहीं किया। इस घटना पर चाइना सदर्न एयरलाइंस ने कड़ी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर इस घटना को असभ्य व्यवहार बताया है। एयरलाइन ने हवाई जहाजों पर वस्तुएं फेंकने के मामलों में कहा कि यह विमानन सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा है। इसके लिए आरोपियों को सजा दी जाएगी।

तीन साल पहले भी हो चुकी है ऐसी घटना

चीन में 2021 में इसी तरह की एक घटना के कारण उड़ान को रद्द कर दिया गया था। इस उड़ान में करीब 148 यात्री शामिल थे, जो विफेंग से हाईकू जा रहे थे। उड़ान भरने से पहले वैंग नाम के एक यात्री ने एक लाल कागज में सिक्का को लपेटकर हवाई जहाज के इंजन में फेंक दिया था। उड़ान भरने से ठीक पहले ही एयरपोर्ट कार्यकताओं ने रनवे पर ही कुछ सिक्के देख लिए थे, जिसके बाद उन्होंने केबिन क्रू को इसकी जानकारी दी। इस घटना के कारण उड़ान को रद्द करने का आदेश दिया गया था।

एयरड्रॉप करते वक्त नहीं खुल पाए पैराशूट, नीचे खड़े लोगों के सिर पर गिरा पार्सल, पांच मौत

गाजा

इस्त्राइल और हमास के बीच युद्ध जारी है। इस बीच, गाजा में एक हादसा हो गया, जिसमें पांच लोगों की मौत हो गई। दरअसल, शुक्रवार को गाजा में मानवीय सहायता एयरड्रॉप की गई। इस दौरान कुछ पैराशूट नहीं खुल पाए और एक पैलेट लोगों पर जा गिरा, जो सहायता की आस में नीचे खड़े थे। पांच लोगों की मौत के अलावा कई लोग घायल भी हुए हैं। गाजा के स्थानीय प्रशासन ने इसकी निंदा की है। गाजा ने एक बयान जारी कर कहा कि हमने पहले ही चेतावनी दी थी कि गाजा पट्टी में एयरड्रॉप सुविधा नागरिकों के जीवन के लिए खतरनाक है। पैराशूट न खुल पाने के कारण पार्सल सीधा नागरिकों के सिर पर गिर गया। लापरवाही के कारण पांच लोगों की मौत हो गई। वहीं, कई लोग घायल भी हो गए हैं।

अमेरिकी राष्ट्रपति ने हाल में ही लिया था फैसला

बता दें, अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने हाल ही में गाजा में मानवीय सहायता के लिए एयरड्रोप सुविधा शुरू करने की घोषणा की थी। एयरड्रोप सुविधा शुरू करने की घोषणा व्हाइट हाउस के ओवल ऑफिस में इटली के प्रधानमंत्री जियोर्जिया मेलोनी के साथ बैठक के दौरान हुई थी। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, एयरड्रॉप का उद्देश्य गाजा में फल्सतीनी लोगों को आवश्यक मानवीय सहायता प्रदान करना है। गाजा में भोजन, दवा और पानी जैसी आवश्यक आपूर्ति के प्रवेश को सुनिश्चित करना था।

हमास और इस्त्राइल के बीच युद्ध का यह है कारण

हमास ने कहा कि ये यरूशलम में अल-अक्सा मस्जिद को इस्त्राइल की तरफ से अपवित्र करने का बदला है।

हमास ने कहा कि इस्त्राइली पुलिस ने अप्रैल 2023 में अल-अक्सा मस्जिद में ग्रेनेड फेंक इसे अपवित्र किया था। इस्त्राइली सेना लगातार हमास के ठिकानों पर हमले कर रही है और अतिक्रमण कर रही है।

इस्त्राइली सेना हमारी महिलाओं पर हमले कर रही है। हमास के प्रवक्ता गाजी हमाद ने अरब देशों से अपील है कि इस्त्राइल के साथ अपने सभी रिश्तों को तोड़ दें। हमाद ने कहा कि इस्त्राइल एक अच्छा पड़ोसी और शांत देश कभी नहीं हो सकता है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

इस्राइल-हमास युद्ध पांच महीने से जारी; सवाल सुन भड़के अमेरिकी राष्ट्रपति

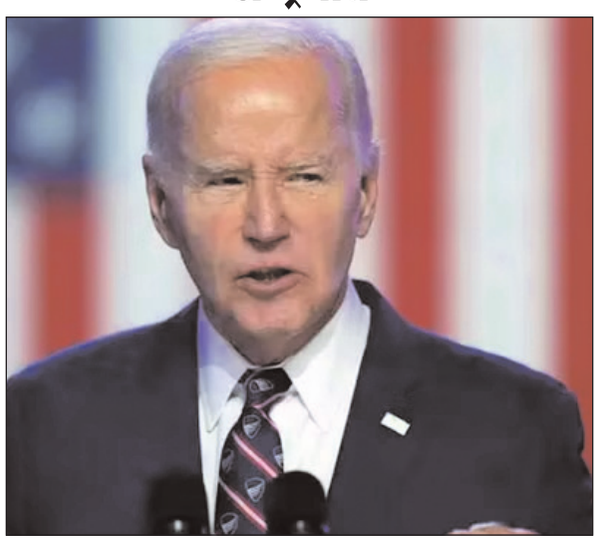

वाशिंगटन

पश्चिम एशिया में इस्त्राइल और हमास के बीच पांच महीने से अधिक समय से युद्ध जारी है। अब तक 30 हजार से अधिक लोग मारे जा चुके हैं। गाजा में गहराते मानवीय संकट पर संयुक्त राष्ट्र भी चिंता जाहिर कर चुका है। हिंसक संघर्ष में अमेरिका की भूमिका भी चर्चा में है। ताजा घटनाक्रम में इस्त्राइल से जुड़े एक सवाल पर अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन अपना आपा खो बैठे। इस साल के अंत में होने वाले आम चुनावों से पहले इस बर्ताव को उनकी हताशा और निराशा के रूप में देखा जा रहा है। दरअसल, गुरुवार रात स्टेट ऑफ द यूनियन को संबोधित करने के बाद बाइडन ने हाउस चैंबर में सीनेटर माइकल बेनेट और डी कोलो के साथ बात की। इस दौरान बेनेट ने उन्हें भाषण के लिए बधाई दी। बातचीत के दौरान विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन और परिवहन मंत्री पीट बटिगिएग भी मौजूद थे। इस दौरान बेनेट ने राष्ट्रपति बाइडन से गाजा में बढ़ती मानवीय चिंताओं पर नेतन्याहू पर दबाव डालने के लिए आग्रह किया। इसपर बाइडन ने कहा कि मैंने बीबी से कहा है। इसे मत दोहराओ। तभी पास खड़े राष्ट्रपति के सहयोगी ने उन्हें सचेत करते हुए धीरे से कहा कि कमरे के माइक्रोफोन चालू हैं। इस पर बाइडन ने कहा कि मैं यहां हॉट माइक पर हूं।

मीडिया को मजाकिया अंदाज में दिया जवाब

शुक्रवार को मीडिया ने उनसे पूछा कि आपको क्या लगता है कि नेतन्याहू को मानवीय पीड़ा कम करने के लिए प्रयास करना चाहिए। इस पर बाइडन ने मजाकिया अंदाज में कहा कि लगता है कि आप लोगों ने हमारी बातचीत सुन ली है। गौरतलब है कि बाइडन ने गुरुवार को इस्त्राइली सरकार से आग्रह किया कि हमास को खत्म करने के साथ-साथ गाजा के लोगों की पीड़ा पर भी ध्यान दिया जाए। मेरा मानना है कि मानवीय सहायता सौदेबाजी का हिस्सा नहीं हो सकती है। अमेरिकी सेना वहां सहायता की क्षमता बढ़ाने पर चर्चा कर रही है।

अमेरिका-जिम्बाब्वे के बीच संबंध तनावपूर्ण

पेरिस/नई दिल्ली

फ्रांस के राष्ट्रपति इमानुएल मैक्रों ने कहा है कि वह गर्भपात के अधिकार पर बने कानून को फ्रांस के संविधान के साथ-साथ यूरोपीय यूनियन का भी बुनियादी कानून बनाना चाहते हैं। बता दें कि अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस- 8 मार्च के दिन गर्भपात के लिए कानून बनाने वाला पहला देश बन गया। फ्रांस में 'गर्भपात का कानूनी अधिकार' 1975 से ही है। इसके तहत 14 हफ्ते तक की गर्भ गिराया जा सकता है। कानून में हुआ ताजा बदलाव काफी चर्चा में है। पाकिस्तान में राष्ट्रपति चुनाव होंगे।

वरिष्ठ नेता आसिफ अली जरदारी का जीतना तय माना जा रहा

पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) के वरिष्ठ नेता आसिफ अली जरदारी का जीतना तय माना जा रहा है। सत्तारूढ़ गठबंधन को भरोसा है कि जरदारी दूसरी बार राष्ट्रपति चुने जाएंगे क्योंकि पार्टियों के पास सीनेट, नेशनल असेंबली, पंजाब असेंबली, सिंध असेंबली और बलूचिस्तान असेंबली में बहुमत है। विपक्ष को केवल खैबर-पख्तूनख्वा विधानसभा में बहुमत प्राप्त है। यदि ऐसा होता है तो वह दूसरी बार इस पद पर काबिज होंगे। वह 2008 से 2013 तक राष्ट्रपति रह चुके हैं। वो मौजूदा राष्ट्रपति डॉ. आरिफ अल्वी का स्थान लेंगे, जिनका कार्यकाल पिछले साल समाप्त हुआ था।

ब्रिटेन : दस लाख पाउंड से बनेगा मुस्लिम विश्व युद्ध स्मारक

दोनों विश्व युद्धों में ब्रिटिश सशस्त्र बलों में लड़ने वाले मुस्लिम सैनिकों के बलिदान का सम्मान करने के लिए ब्रिटेन सरकार ने एक नए विश्व युद्ध मुस्लिम स्मारक के लिए 10 लाख पाउंड स्वीकृत किए हैं। इसमें औपनिवेशिक युग के दौरान ब्रिटिश भारतीय सेना में भर्ती किए गए भारतीय मुस्लिम भी शामिल हैं। यह स्मारक इंग्लैंड के वेस्ट मिडलैंड्स क्षेत्र स्थित स्टैफोर्डशायर के नेशनल मेमोरियल अबोर्रेटम में बनाया जाएगा। **अमेरिका में अल्सरेटिव कोलाइटिस की 54,960 बोतल दवा वापस; भारत की इस फैक्ट्री में हुआ उत्पादन**

भारतीय दवा कंपनी सन फार्मा ने अमेरिकी बाजार से अल्सरेटिव कोलाइटिस की जेनरिक दवा मेसालामिन कैप्सूल की 55 हजार से ज्यादा की बोतलें वापस लेने का एलान किया है। अमेरिकी स्वास्थ्य नियामक यूएसएफडीए की रिपोर्ट के मुताबिक मुंबई मुख्यालय वाली न्यू जर्सी स्थित सन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज इंक ने मेसालेमिन कैप्सूल की 54,960 बोतलें वापस लेने का फैसला किया है।

अमेरिका में टिकटॉक पर प्रतिबंध वाले बिल के खिलाफ यूजर्स ने खोला मोर्चा, सांसदों को कर रहे फोन

वाशिंगटन

अमेरिकी कांग्रेस पैनल ने बृहस्पतिवार को इस बिल को मंजूरी दी है, अब सीनेट में इस पर वोटिंग होनी है। टिकटॉक की ओर से उपभोक्ताओं को नोटिफिकेशन भेजकर उनसे इस बिल का विरोध करने और टिकटॉक को बंद किए जाने से रोकने की अपील की गई थी। चीनी सोशल मीडिया एप टिकटॉक की मूल कंपनी को उसे छह महीने में बेचने के लिए मजबूर करने वाले अथवा अमेरिका में हमेशा के लिए पाबंदी वाले बिल को लेकर एप यूजर्स ने मोर्चा खोला है। इन यूजर्स ने बिल को खारिज करने की मांग बुलंद कर दी है।

अमेरिकी कांग्रेस पैनल ने इस बिल को मंजूरी दी है, अब सीनेट में इस पर वोटिंग होनी है। टिकटॉक की ओर से उपभोक्ताओं को नोटिफिकेशन भेजकर उनसे इस बिल का विरोध करने और टिकटॉक को बंद किए जाने से रोकने की अपील की गई थी। इसमें उपभोक्ताओं से उनके क्षेत्र के प्रतिनिधियों से बिल के विरोध में वोट करने की मांग की गई। अमेरिकी कांग्रेस में काम करने वाले एक कर्मचारी के मुताबिक उनके पास दर्जनों कॉल आए हैं जिनमें बिल का विरोध करते हुए टिकटॉक को बिकने से रोकने की मांग की गई है। 20 सांसदों के क्रास पार्टी समूह ने बिल का प्रस्ताव दिया है। यह समूह चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के मामलों पर विचार करने वाली सेलेक्ट समिति काभी हिस्सा है।

खालिस्तानी आतंकी हरदीप निज्जर की हत्या का वीडियो आया सामने

ओंटारियो

खालिस्तानी आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की बीते साल जून में गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। अब निज्जर की हत्या का कथित वीडियो सामने आया है। इस वीडियो में हमलावर, निज्जर को गोली मारकर भागते नजर आ रहे हैं। निज्जर की हत्या को लेकर भारत और कनाडा के संबंधों में खटास आ गई थी और दोनों देशों के बीच यह मामला विवाद की वजह बन गया था।

कनाडा के सरे में गुरु नानक सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के तत्कालीन अध्यक्ष हरदीप सिंह निज्जर की अज्ञात हमलावरों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी। जो वीडियो सामने आया है

क्या है वीडियो में

कनाडा के सरे में गुरु नानक सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के तत्कालीन अध्यक्ष हरदीप सिंह निज्जर की अज्ञात हमलावरों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी। जो वीडियो सामने आया है, उसमें दिख रहा है कि घटना वाले दिन हरदीप सिंह निज्जर अपने पिकअप ट्रक से गुरुद्वारे की पार्किंग से निकला और जैसे ही बाहर निकला तो अचानक से उसकी कार के आगे सफेद रंग की सेडान कार आकर रुकी, जिसमें से दो लोग बाहर आए और हरदीप सिंह निज्जर पर फायरिंग कर दी।

वीडियो, कनाडा के एक मीडिया हाउस ने जारी की है, जो कि वायरल हो रही है।

पाकिस्तान में राष्ट्रपति पद का चुनाव आज, आसिफ अली जरदारी को दूसरी बार मिल सकती है जिम्मेदारी

इस्लामाबाद

पाकिस्तान में शनिवार को राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव हो रहे हैं। सुबह 10 बजे से मतदान शुरू हो चुका है, जो शाम पांच बजे तक चलेगा। इस चुनाव में पीपीपी नेता आसिफ अली जरदारी (68 वर्षीय) का दावा सबसे मजबूत है और वह पाकिस्तान पीपल्स पार्टी और पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज के संयुक्त उम्मीदवार हैं। जरदारी के दूसरी बार पाकिस्तान के राष्ट्रपति बनने की पूरी संभावना है। आसिफ अली जरदारी का मुकाबला सुन्नी इत्तेहाद काउंसिल के उम्मीदवार महमूद खान अचकजई (75 वर्षीय) से है।

आसिफ अली जरदारी का अगला राष्ट्रपति बनना लगभग तय

पाकिस्तान के नए राष्ट्रपति, निवर्तमान राष्ट्रपति डॉ. आरिफ अल्वी की जगह लेंगे, जिनका पांच साल का कार्यकाल पिछले साल ही खत्म हो चुका है। हालांकि नए राष्ट्रपति की नियुक्ति तक वह पद पर बने हुए हैं। जरदारी एक बिजनेसमैन-राजनेता हैं और पाकिस्तान की पूर्व पीएम दिवंगत बेनजीर भुट्टो के पति हैं और पाकिस्तान के पूर्व विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो जरदारी के पिता हैं। जरदारी, पाकिस्तान पीपल्स पार्टी के सह-अध्यक्ष हैं, जिसने नवाज शरीफ की पार्टी पीएमएल-एन के समर्थन से सरकार बनाई है। पीएमएल-एन और पीपीपी के गठबंधन की डील के तहत पीएम पद पर शहबाज शरीफ की ताजपोशी हुई है। वहीं राष्ट्रपति पद पीपीपी को मिलना है।

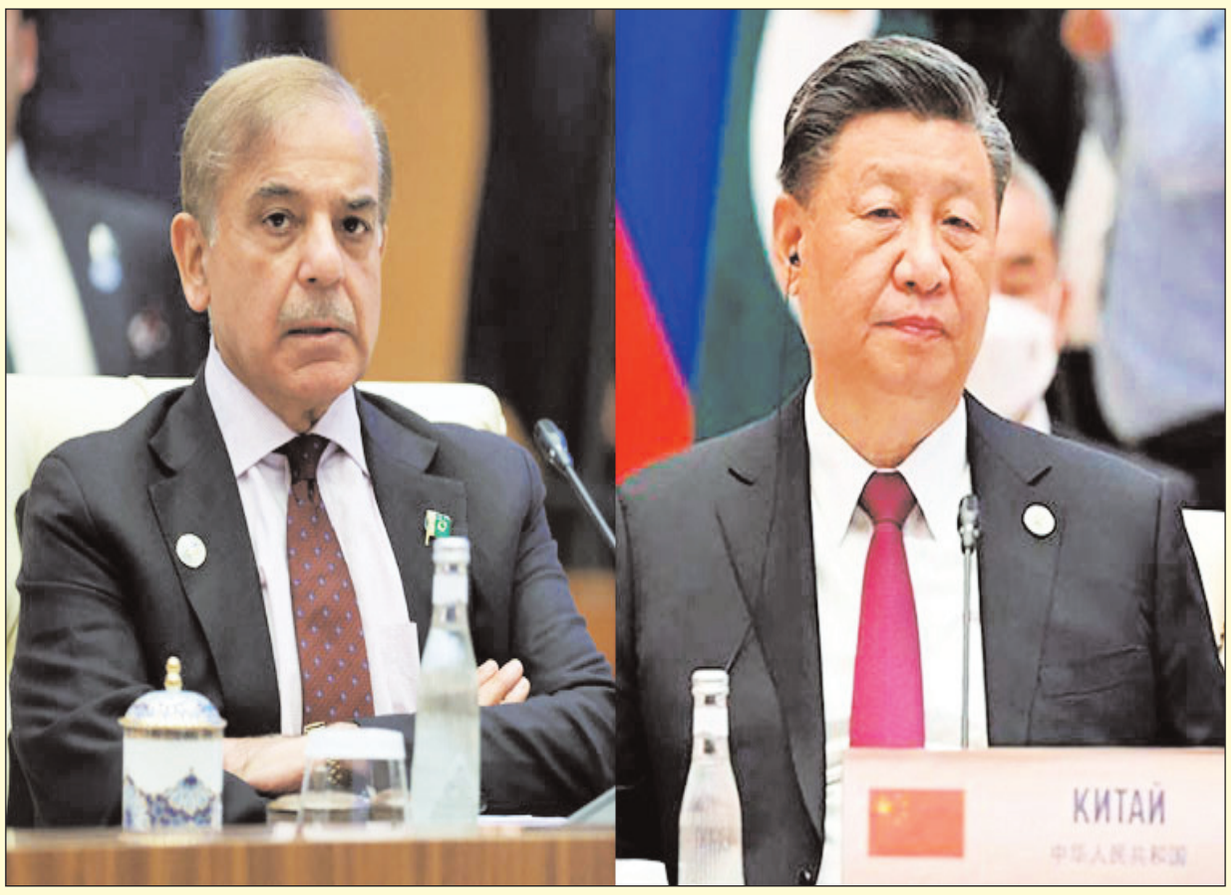

दोनों पार्टियों में समझौते के तहत पंजाब में पीएमएल-एन की मरयम नवाज सीएम चुनी गई हैं। वहीं सिंध प्रांत की सत्ता पीपीपी को मिली है। जरदारी 2008 से 2013 तक भी पाकिस्तान के राष्ट्रपति रह चुके हैं और अब दूसरी बार इस पद को पाने की रेस में हैं। आसिफ अली की जीत इसलिए पक्की मानी जा रही है क्योंकि पीपीपी और पीएमएल-एन का गठबंधन केंद्र के साथ ही पंजाब, सिंध, बलूचिस्तान असेंबली में बहुमत में है। वहीं विपक्ष के पास सिर्फ खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में ही बहुमत है।

महमूद खान अचकजई से मुकाबला

पाकिस्तान में राष्ट्रपति चुनाव इलेक्टोरल कॉलेज प्रक्रिया से होगा, जिसमें संघीय और प्रांतीय असेंबली के सदस्य मतदान करेंगे। आसिफ अली जरदारी के प्रतिद्वंदी अचकजई पश्तूनख्वा मिल्ली अवामी पार्टी के अध्यक्ष हैं और सुन्नी इत्तेहाद काउंसिल के उम्मीदवार हैं। इमरान खान की पार्टी पीटीआई समर्थित निर्दलीय उम्मीदवार भी सुन्नी इत्तेहाद काउंसिल के बैनर तले राष्ट्रपति चुनाव में हिस्सा ले रहे हैं। अचकजई ने राष्ट्रपति चुनाव से पहले चुनाव आयोग से अपील की थी कि इलेक्टोरल कॉलेज के पूरा होने तक राष्ट्रपति चुनाव टाल दिए जाएं, लेकिन चुनाव आयोग ने उनकी अपील खारिज कर दी। विपक्ष इलेक्टोरल कॉलेज के पूरा हुए बिना राष्ट्रपति चुनाव कराने को अवैध करार दे रहा है। आसिफ अली जरदारी को राष्ट्रपति चुनाव में 400 इलेक्टोरल वोट मिल सकते हैं। पाकिस्तान की नेशनल असेंबली में 325 सदस्य हैं। साथ ही 91 सीनेटर्स हैं। पंजाब असेंबली में 354, सिंध असेंबली में 157, खैबर पख्तूनख्वा में 117 और बलूचिस्तान असेंबली में 65 सदस्य हैं।

भारत से संबंध और शहबाज शरीफ की विदेश नीति पर रहेंगी नजरें, इशाक डार बन सकते हैं विदेश मंत्री

इस्लामाबाद

पाकिस्तान में प्रधानमंत्री पद की खींचतान खत्म हो गई है। गठबंधन की मदद से पीएमएलएन के वरिष्ठ नेता शहबाज शरीफ ने प्रधानमंत्री पद संभाल लिया है। अब उम्मीद है कि पूर्व वित्त मंत्री इसाक डार पाकिस्तान के विदेश मंत्री का पद संभाल सकते हैं। शरीफ मंत्रिमंडल के विस्तार पर ध्यान केंदित कर रहे हैं। पाकिस्तानी मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, पूर्व कार्यवाहक मंत्री और पूर्व विदेश सचिव जलील अब्बास जिलानी विदेश मामलों पर प्रधानमंत्री के सलाहकार के रूप में काम करेंगे। वहीं, पूर्व राजनयिक और पीएमएलएन नेता तारिक फातेमी विशेष सहायक के रूप में पदभार ग्रहण करेंगे। एक बैठक में जिलानी ने प्रधानमंत्री को कार्यवाहक व्यवस्था के दौरान विभिन्न विदेशी मामलों की जानकारी दी।

वित्त मंत्री के रूप में डार की काफी आलोचना

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, वित्त मंत्री के तौर पर डार की काफी आलोचना हुई। पाकिस्तान में आए आर्थिक संकट के कारण उनका काफी विरोध हुआ। कहा जाता है कि आईएमएफ की चिंताओं को नजरअंदाज करने के कारण पाकिस्तान की वित्तीय हालत खराब हुई है।